RNI No. MPHIN/2002/07269

वर्ष 16, अंक 1 अप्रैल–जून 2017 मूल्य 20/- रूपये

रघुकलश

सामाजिक पत्रिका

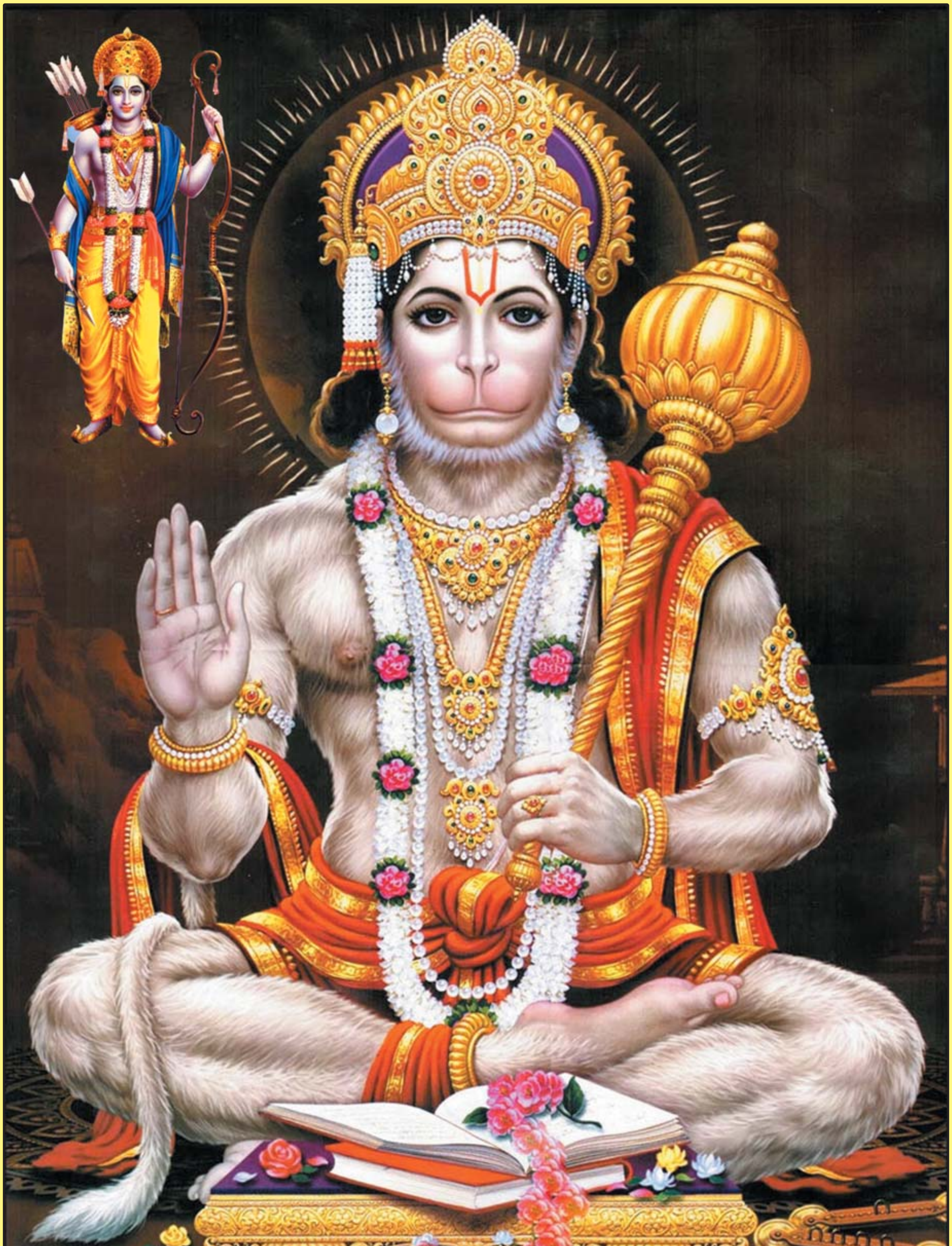

अन्नदाता के परिश्रम ने दिया प्रदेश को उपहार
मिला पांचवीं बार कृषि कर्मण पुरस्कार
देश में सर्वाधिक
गेहूं उत्पादन के लिए
मध्यप्रदेश के किसानों ने कृषि क्षेत्र में एक नया इतिहास रचा है। मध्यप्रदेश को कृषि में देश में सिरमौर बनाया है।
श्री नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री
शेरपुर, सीहोर
आज प्रदेश कृषि के क्षेत्र में उपलब्धियों के नये मुकाम तय कर रहा है। इसका संपूर्ण श्रेय हमारे मेहनतकश किसानों को जाता है।
श्री शिवराज सिंह चौहान
मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश
मान बढ़ा, सम्मान बढ़ा, किसानों से प्रदेश का अभिमान बढ़ा
/CMMadhyaPradesh /CMMadhyaPradesh /ChouhanShivrajSingh
Download App - Shivraj Singh Chouhan
मध्यप्रदेश जनसम्पर्क द्वारा जारी
आकल्पन : मध्यप्रदेश माध्यम / 2017
D81257/2017

रघुकलश

त्रैमासिक सामाजिक पत्रिका

अखिल भारतीय रघुवंशी (क्षत्रिय) महासभा से सम्बद्ध

वर्ष : 16, अंक : 1 अप्रैल-जून 2017 मूल्य 20/-

संपादक की कलम से

कामनाओं से भरा जीवन

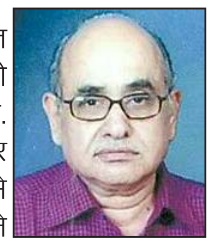

जब एक साधक ने श्रीमॉ से पूछा कि कुछ बच्चों की हमेशा मांगने की आदत क्यों होती है, इस पर श्रीमॉ पूछती हैं कि क्या मांगने की, तो साधक कहता है कि भौतिक चीजें, जैसे मिठाई या जो कुछ दिख जाये। इस पर श्रीमॉ कहती हैं कि चूंकि वे कामनाओं से भरे होते हैं, शायद वे कामनाओं के स्पन्दनों से निर्मित हुए थे और चूंकि उनका अपने ऊपर कोई वश नहीं होता इसलिए यह खुलकर प्रकट होती हैं। बड़ी आयु के लोग भी कामनाओं से भरे होते हैं लेकिन वे अपनी कामनाओं को दिखाने में सकुचाते हैं, उन्हें जरा शरम सी आती है या फिर उन्हें डर लगता है कि लोग उन पर हंसेंगे, इसलिए वे उन्हें प्रकट नहीं करते। लेकिन वे भी कामनाओं से भरे होते हैं। बच्चे ज्यादा सरल होते हैं, जब वे कोई चीज चाहते हैं तो कह देते हैं। वे अपने आपसे यह नहीं कहते कि शायद इसे न दिखाने में ज्यादा अकलमन्दी है, क्योंकि अभी तक उनके अंदर इस प्रकार की बुद्धि नहीं आयी होती। लेकिन मेरा ख्याल है कि साधारणतः कुछ अपवादों को छोड़कर लोग सतत कामनाओं में ही निवास करते हैं। वे उसे प्रकट नहीं करते, और कभी–कभी तो वे उसे स्वयं अपने सामने भी स्वीकार करने से शरमाते हैं। लेकिन कुछ पाने की अपेक्षा होती है....व्यक्ति कोई सुंदर चीज देखता है और वह तुरन्त प्राप्त करने की कामना में अनूदित हो जाती है और यह बहुत–सी चीजों में एक है. ...यह बिलकुल बचकानी और हास्यास्पद चीज है क्योंकि सौ में से कम से कम नब्बे बार कामना करने वाले को जब वह चीज मिल जाती है तो वह उसे देखता तक नहीं। यह बहुत ही कम होता है कि चीज भले कैसी भी क्यों न हो, पाने के बाद भी उसमें रस बना रहे।

श्रीमॉ कहती हैं कि मुझे एक व्यक्ति की याद है जो बहुत पहले यहां आया था। वह यहां से फ्रेंच संसद के चुनाव के लिए खड़ा होना चाहता था। उसे मुझसे मिलाया गया क्योंकि लोग उसके बारे में मेरी राय जानना चाहते थे। उसने मुझसे आश्रम और यहां के जीवन के बारे में प्रश्न किए और यह पूछा कि मेरी दृष्टि में जीवन के लिए अनिवार्य अनुशासन क्या है। वह आदमी सारे दिन सिगरेट मुंह से लगाये रखता और जरुरत से ज्यादा शराब पीता था। स्वभावतः उसे यह शिकायत थी कि वह बहुत ज्यादा थक जाता और कभी–कभी तो अपने आप पर काबू भी न रख पाता था। मैंने उससे कहा ''देखो सबसे पहले तुम्हें सिगरेट छोड़

शेष पेज 08 पर

राष्ट्रीय अध्यक्ष की कलम से

रघुवंशी समाज को विषमता मुक्त बनाने अभियान छेड़ें

अक्सर यह देखने में आया है कि रघुवंशी समाज में आपसी प्रतिस्पर्धा के चलते कटुता और वैमनस्य बढ़ रहा है। यदि हम चिंतन–मनन करेंगे तो पायेंगे कि यह समाज के विकास में सबसे बड़ा रोड़ा है और इसका एकमात्र कारण समाज में व्याप्त विषमता ही है। आज आवश्यकता इस बात की है कि समाज में विषमता समाप्त करने के लिए अभियान छेड़ा जाए और लोगों में ऐसे भाव पैदा किए जायें कि आपस में मेलजोल, सौहार्द्र और भाईचारे की भावना बढ़े। कहीं–कहीं अशांति भी देखने को मिल रही है और कभी–कभी आपस में झगड़े भी होते हैं। यह हमारा दायित्व बनता है कि हम समाज में शांति स्थापित करें और सभी सामाजिक बंधुओं को साथ लेकर चलें तथा उन्हें विकास के समान अवसर प्रदान करें। हमें राजराज्य की स्थापना का प्रयास रघुवंशी समाज में करना चाहिए और रामचरित मानस की इस चौपाई को ''बैर न कर काहू सन कोई, राम प्रताप विषमता खोई।'' यह हम सभी का दायित्व है कि समाज में व्याप्त विषमता को कम करके स्नेह और सहिष्णुता का वातावरण निर्मित करें। विकारविहीन तथा संस्कारी प्रवृत्ति समाज को बनाने में विशेष योगदान देती है, हमें भी इसी दिशा में आगे बढ़ना है। हमारा समाज यदि आगे आकर इस विषमता को दूर करने का प्रयास करेगा तथा उन जीवन मूल्यों व आदर्शों को अपनायेगा जो भगवान श्रीरामचन्द्र जी के थे तभी हम सच्चे रघुवंशी कहलाने के अधिकारी होंगे। मुझे पूरा भरोसा है कि हम सब मिलकर इस दिशा में सार्थक प्रयास करेंगे।

हमारे समाज के लोग मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम के बताये आदर्शों पर जब चलेंगे, उसी तरह का जीवन जियेंगे और उसी तरह से समर्पित रहेंगे तब हम रघुवंश के सही उत्तराधिकारी कहलाने योग्य होंगे। माता के प्रति भगवान राम द्वारा कर्तव्य पालन का जो मार्ग दिखाया गया है और भाईयों के प्रति आपस में स्नेह व सौहार्द्र का जो रास्ता दिखाया गया है, उसी तरह का आदर्श हम प्रस्तुत करेंगे तभी हम समाज में सही अर्थों में आदर्श प्रस्तुत कर सकेंगे। अपने समाज के प्रति हमारा लगाव व कर्तव्यबोध उसी तरह का होना चाहिए जैसा उदाहरण हमारे सामने भगवान श्रीराम ने प्रस्तुत किया। हमें भी समाज को उसी भाव से देखना चाहिए जिस भाव से भगवान राम ने देखा था, आज इस दिशा में विशेष प्रयास करने की आवश्यकता है ताकि हमारी प्रतिष्ठा में वृद्धि हो सके।

आपको यह बताते हुए मुझे अत्यधिक प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है कि सामाजिक पत्रिका 'रघुकलश' का जो अंक आपके हाथों में आ रहा है वह 16वें वर्ष का पहला अंक है। किसी भी पत्रिका के लिए यह गौरव का क्षण होता है जब वह 15 साल की अपनी यात्रा कर 16वें साल में प्रवेश करती है। मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं है कि रघुकलश ने रघुवंशी समाज में सामाजिक, धार्मिक और आध्यात्मिक चेतना जाग्रत करने में एक अहम् भूमिका अदा की है, यह महज एक पत्रिका नहीं बल्कि सामाजिक बदलाव की वाहक बनकर प्रकाशित हो रही है। रघुकलश रघुवंशी समाज की गतिविधियों को निरन्तर प्रकाशित करने वाली एकमात्र ऐसी पत्रिका है जो अपने उद्देश्य में सफल रही है। सामाजिक कुरीतियों से लड़ने की जिजीविषा पैदा करने के साथ ही आध्यात्मिक धरातल पर समाज को आगे ले जाने के लिए समय–समय पर इस पत्रिका में विशेष लेख प्रकाशित किए गए हैं। समाज की सभी प्रतिभाओं को समय–समय पर एक मंच प्रदान करने का सार्थक प्रयास रघुकलश ने किया है और आगे भी करती रहेगी। मुझे पूरी उम्मीद है कि समाज के सभी लोग इस पत्रिका को पूरा–पूरा सहयोग व समर्थन देते रहेंगे।

हजारीलाल रघुवंशी
राष्ट्रीय अध्यक्ष
अखिल भारतीय रघुवंशी (क्षत्रिय) महासभा

राम-सीता के रिश्ते में अगाध प्रेम और विश्वास

मनोज कुमार श्रीवास्तव

लोग मुझे प्रभु कहते हैं। 'हरी नाम सुमर सुखधाम' के भजन गाते हैं। 'स्यामल वदन सुखधाम पावन नाम हे श्रीराम' के गीत। 'सुखधाम सदा तेरा नाम सदा/कोई तुझ सा महान नहीं' का गायन। विनयावली कि ''तुम सुखधाम राम श्रम भंजन।'' ओह! तुलसी– 'एक बार बसिष्ठ मुनि आए/जहां राम सुखधाम सुहाए।' ओह! एक शब्द मुझ पर व्यंग्य करता हुआ सा लग रहा है। क्या कभी मेरी इस ग्रंथि का भविष्य में उन्मोचन होगा? मेरे जीवन के किसी उत्तरकांड में –ता पर हरषि चढ़ी बैदेही/सुमिरि राम सुखधाम सनेही। ओह! मेरे भक्तों को मुझ पर कितना भरोसा रहता है– 'मीरा के सुखसागर स्वामी भवन गवन कियो राम। कैसे वे मेरा गुणगायन करते हैं–'महाराज, बलि जाउॅं राम! सेवक–सुखदायक/महाराज, बलि जाउॅं, राम! सेवक–सुखदायक!' 'जय जनकनगर–आनंदप्रद सुखसागर सुषमाभवन/कह तुलसीदास सुरमुकुटमनि, जय जय जय जानकिरमन।' 'रघुपति, भक्ति करत कठिनाई/जो जेहिं कला कुसलता कहॅं सोई सुलभ सदा सुखाकारी।' 'तमीचर–तम–हारी–सुरकंज–सुखकारी', 'जे पद भक्तिनि के सुखकारी' /सूरदास/। कैसा विश्वास प्रचलित हो गया है मेरे बारे में! और मैं यहां अपनी पत्नी तक का दुख दूर नहीं कर पा रहा हूं। वह पत्नी जो मेरी पूजा करती है, जो स्वयं को मेरी प्रिया कम, भक्त अधिक समझती है। वह पत्नी जो मुझे प्रभु कहती है, परमेश्वर कहती है। उसके उच्छवास इन राजीव नयनों की पांखुरियों को हिला रहे हैं, भिगो रहे हैं। प्रभु! और कुछ कर नहीं पाए। प्रभु शब्द अब शल्य की तरह चुभता है।

राजीवनयन! मेरी मां मुझे ऐसा कहा करती थीं। ::यह है उपाय, ''कह उठे राम ज्यों मंद्रित घन– कहती थीं माता मुझे राजीवनयन/दो नीलकमल हैं शेष अभी, यह पुरश्चरण/पूरा करता हूं देकर मात एक नयन:: मुनि कहते थे– जो कोसलपति राजीव नयना/करउ सो राम हृदय मन अयना। जिन पर इतनी आस्था है कि कहा जाता है 'राजिवनयन धरे धनु सायक/भगत बिपति भंजन सुखदायक, 'राजीव बिलोचन भवभयलोचन पाहि पाहि सरनहिं आई।'। मेरे वे राजीवनयन सीता को कौन–सा सुख दे पाये? दुख ही जीवन की कथा रही। क्या कहूं आज जो नहीं कही, क्या हो गई मेरी प्रिया? संदिग्ध अर्थ वाली स्मृति? जमीन पर गिरी पड़ी ऋद्धि? टूटी हुई श्रद्धा? भग्न हुई आशा? विघ्नयुक्त सिद्धि? मिथ्या कलंक से भ्रष्ट हुई कीर्ति? सर्वथा ह्रास को प्राप्त हुई बुद्धि? उत्पातकाल में दहकती हुई दिशा? नष्ट हुई देवपूजां? चंद्रग्रहण से मलिन हुई पूर्णमासी की रात? अपवित्र प्राणियों के स्पर्श से नष्ट हुई वेदी? बुझी हुई अग्निशिखा? तुषारपात से जीर्ण–शीर्ण हुई कमलिनी?

मनोज कुमार श्रीवास्तव

इधर राजीवनयनों में तुषार से आंसू। उधर तुषारपात से जीर्ण–शीर्ण हुई कमलिनी सी सीता। जीवन कमल का कैरिकेचर बन गया। कहां पानी में

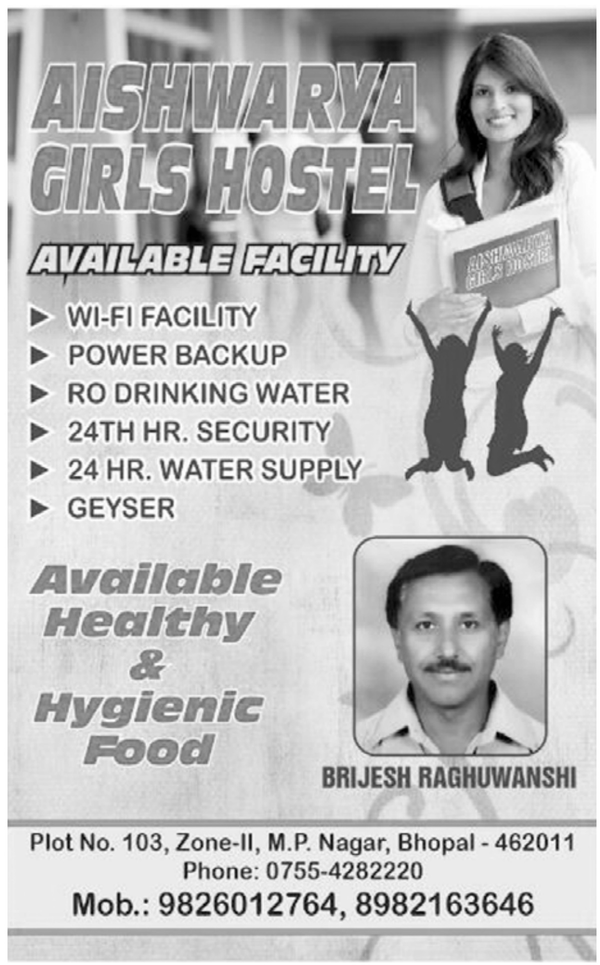

RNI No. : MPHIN/ 2002 / 7269

अरुण पटेल
संपादक
09425010804, 07552552432

उमाशंकर रघुवंशी
प्रबंध संपादक
09425005454

सहायक संपादक
पलाश पटेल
08982200001
अभिषेक रघुवंशी
रमेन्द्रसिंह पटेल

इंदौर ब्यूरो प्रमुख
राजेश रघुवंशी, 09826578006
रणवीर सिंह रघुवंशी, 08959811503
विदर्भ ब्यूरो प्रमुख
दिलीप सिंह रघुवंशी, 08485031185
अमरावती महाराष्ट्र

खानदेश ब्यूरो प्रमुख
प्रो. डॉ. महेन्द्र जयपाल सिंह रघुवंशी,
नंदुरबार महाराष्ट्र
09423942750

ग्वलियर चंबल संभाग ब्यूरो प्रमुख
ओमवीर सिंह रघुवंशी
09425701313

विशेष संवाददाता
अरविन्द रघुवंशी, भोपाल, 09425023908
संदीप पटेल, सिलवानी 08120916468
लखनसिंह रघुवंशी, गुना, 09893861685
रामनारायण रघुवंशी, भोपाल, 09425372213
सुखेंद्रसिंह रघुवंशी, शिवपुरी, 08357099593
हरवीरसिंह रघुवंशी, अशोकनगर, 08959211089
राममोहन रघुवंशी, सिवनी मालवा, 09098667071
संतोष रघुवंशी, करेली, 07566810605
आकाश रघुवंशी, सोहागपुर, 09754236070
चंदू रघुवंशी, धार, 09826533460
कैलाश रघुवंशी, धार, 09826038723
कोमल सिंह रघुवंशी, पिपरिया, 09752124056
किशोर रघुवंशी, खरगोन, 09826880101
सुरेंद्रसिंह रघुवंशी, उदयपुरा, 09993044340
आलोक विजयसिंह रघुवंशी,
धूलिया (महा.) 09421991991
पी.एम. रघुवंशी, अहमदनगर,
(महा.), 09922079523
संजय रंजीतसिंह रघुवंशी, आकोट,
अकोला, (महा.) 09850509244

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक अरुण पटेल द्वारा प्रियंका ऑफसेट भोपाल से मुद्रित एवं ई–100/41, शिवाजी नगर, भोपाल से प्रकाशित संपादक **अरुण पटेल**

E-mail : arun.patel102@gmail.com
raghukalash@gmail.com

कमल होता था? कहां कमलों में पानी है? राजीव लोचन स्त्रवत जल तन ललित।। राम का स्वर इस विडम्बना के वैचित्र्य से ही विकृत हो गया है। वे पूछते हैं कि मन, वचन और शरीर से जिसे मेरी ही गति, मेरा ही आश्रय है, क्या स्वप्न में भी उसे विपत्ति होनी चाहिए? राम को स्वयं पर ही शंका होने लगी है। सीता का संकट राम की अपनी प्रभविष्णुता पर आया हुआ संकट है। राम खुद पर ही संदेह करने लगे हैं। एक पति की ही तरह नहीं, एक प्रभु–एक ईश्वर की तरह भी। ऐसी विपदा कि जिसे देखकर ईश्वर को अपने सारे अभिधान झूठे लगने लगें। न प्रभु, न सुखअयन, न राजीवलोचन। सब बेकार बाते हैं।

भक्तों ने कहा–नाथ अब लीजे मोहि उबार/दीनाश्रय! तव विरद विपत्ति– विदारण श्रुति–विस्तार। इसी विरद के आधार पर भक्तों ने अपने दुर्भाग्य और दुर्दिन काटे हैं। पीटर का कहना था– And after you have suffered a little while, the god of all grace, who has called you to his eternal glory in chirst will himself restore, confirm strengthen and establish you. (Peter 5%10), जेम्स (1:2,4) में कहा गया– count it all joy, my brothers, when you meet trials of various kind, for you know that the testing of your faith produces steadfastness. And left let steadfastness have its full effect, that you may be perfect and complete, lacking in nothing. लेकिन यहां राम के स्वर में आ गए वैचित्र्य से एक बड़ी बात और उभरी है। बाइबल के psalm 34:19 की तरह यहां यह नहीं कहा जा रहा कि: Many are the afflictions of the righteous, but the Lord delivers him out of them all. यहां तो कहा यह जा रहा है कि बचन, काया और मन से जो मेरे ही आश्रय में है, उसे स्वप्न में भी क्या विपत्ति होनी चाहिए? गीता के शब्द : 'पार्थ नैवेह नामुत्र विनाशस्तस्य विद्यते/न हि कल्याण कृत्कश्चितदुर्गतिं तात गच्छति।' कि हे पार्थ भगवत्प्राप्ति के लिए कर्म करने वाला कोई भी मनुष्य दुर्गति को प्राप्त नहीं होता। उसका न इस लोक में नाश होता है और न परलोक में।' बात दुर्गति और विपत्ति में फर्क करने की है किसी ने कहा है कि संकट इंसान को ज्यादा खूबसूरत बना देता है। Know those who have known defeat] known suffering, known struggle, known loss, and have found their way out of the depths. These persons have an appreciation, a sensitivity, and an understanding of life that with compassion, gentleness and a deep loving concern. Beautiful people do not just happen. शायद यह बात भी सही हो, लेकिन राम तो कुछ अधिक ही कह रहे हैं कि जो मुझमें एकाग्र है, उसे स्वप्न में भी विपत्ति नहीं होनी चाहिए। एकाग्रता तीनों कोणों से– मन, वचन और काया से। वचन ऐसे बोले जाते हों जैसे राम उनके साक्षी ही नहीं हों, वे शब्द राम के लिए समर्पित हों। राम को ध्यान में रखकर कहे गए शब्द। संभवतः इसलिए शब्द को प्रभु कहा गया– And the Word was God. शब्द जब ईश्वर के समक्ष प्रणति है तब वह प्रणव है। एक ओंकार सतनाम। तब उसका कोई क्षरण नहीं होता। सीता नहीं छीजेंगी। नाम उनका प्रहरी रहेगा दिन रात। उनकी रक्षा में

सन्नद्ध। तब ही वह अक्षर है। ऋग्वेद की वाग्देवी यों ही स्वयं को विश्व की अधीश्वरी और अपने उपासकों को ऐश्वर्य देने वाली नहीं कहतीः अहं राष्ट्री संगमनी वसूनां/चिकितुपी प्रथमा यज्ञियानाम्! वचन से जिसकी गति मैं हूं– अग्ने त्वां कामये गिरा। सामवेद–8, हे प्रकाश स्वरुप परमेश्वर! मैं वाणी द्वारा तेरी प्राप्ति की इच्छा करता हूं। इसी प्रकार मन जिसके बारे में शतपथ ब्राह्मण में कहा गयाः मनसावादूहं सर्वमाप्तम् तन्मन सैवेतत् सर्वमाप्नोति– कि मन से ही यह सब व्याप्त है मन से ही इस सबको प्राप्त होता है। हठप्रदीपिका में कहा गया 'मनोयत्र विलीयते पवनस्तत्र विलीयते/पवनोलीयते यत्र मनस्तत्र विलीयते।' जहां मन लीन होता है वहीं प्राण भी लीन होता है और जहां प्राण लीन होता है वहीं मन भी लीन होता है। जब सीता का मन राम में ही व्याप्त है और जब राम का मन सीता में व्याप्त है, जब सीता का मन राम में लीन है तो उनके प्राण भी रामावस्थित हैं। रावण सीता के प्राण क्या लेगा? योग वासिष्ठ का कहना है 'मनोविलयमात्रेण ततः श्रेयो भविष्यति।' जब सीता का मन राम में विलयित है तो उनका भविष्य श्रेयस्कर होगा ही। शास्त्र कहते हैं कि मन ऊंचा हो तो लक्ष्मी भी आपदाओं में डूबती नजर आएगीः 'उच्चैर्यद्यस्ति मनः/किं विपदा सम्पदा मंत्री/पुरुषस्य मनसिभग्ने/भग्नेवापत्सु लक्ष्यते लक्ष्मी।' सीता के मन में निराशा के विचार भी आते हैं, किन्तु 'ध्यान' के जरिए वे मन को राम में संनिहित कर देती हैं। इसी प्रकार काया जिसके बारे में छांदोग्योपनिषद में कहा गया कि वह अमृत और अशरीरी आत्मा का अधिष्ठान हैः तदस्यामृतस्यां शरीरस्यात्मनो अधिष्ठानमात्तो, जिसे वेदव्यास ने अमृत और मृत्यु दोनों की प्रतिष्ठा का स्थान माना–'' अमृतं चैव मृत्युश्च द्वयं देहे प्रतिष्ठितम।'' सीता की काया का आश्रय भी एकमात्र राम हैं। मम हद जन्मो हे श्रीराम/बसो मेरी काया में श्री राम/नैनों को प्रभु राम दरस हों/कानों में गूंजें राम। सीता की कायिक इंट्रीग्रिटी को लेकर 'राम का अंतर्द्वन्द्व' शीर्षक कविता में एक कवि कहते हैंः ''वनवास से नहीं लौटे राम, फिर कभी/लौटा केवल केवल एक तन है/लिये संग व्यथित मन है/सीता के साथ क्या हुआ होगा? क्या राक्षस ने वैदेही को छुआ होगा?। नहीं–नहीं वह पवित्र है/मनसा काया सच्चरित्र है/मेरी मेरी स्मृतियों ने ही नहीं मरने दिया उसे/धर्मचेतना ने आत्मघात से निवृत्त किया उसे/लोगों का क्या? वे चाहे जिसका नाम धरें/चाहे जैसा सोचें अरुणोदय को शाम करें/उनके कहने भर से अपावन नहीं होगी सीता/मोक्षदायिनी सुरसरि जैसी परम पुनीता।'' सीता के बारे में राम के ये शब्द ध्यान दीजिए। एक जगत्पति के रुप में नहीं बल्कि एक पति के रुप में इन शब्दों पर ध्यान दीजिए। ध्यान दें कि अभी कुछ देर पहले हमने 'केहि अपराध नाथ हौं त्यागी' के संदर्भ में क्या विश्लेषण किया था? ध्यान दें कि उसी तरह यहां 'पति' राम कह रहे हैं कि वचन, काया और मन से सीता की गति मुझमें है। राम के अपनी पत्नी के ऊपर इस अगाध विश्वास की चर्चा कम ही की गई है और उन्हें एक शंकालु पति के रुप में चित्रित किया गया है जो अपनी पत्नी से बार–बार उसकी पवित्रता के प्रमाण मांगता रहता है और इस तरह से शंकालु पति अपनी पत्नी पर किए गए अत्याचारों, सवालों और संदेहों को उचित ठहराते रहे हैं। यहां राम सीता की कायिक इंटीग्रिटी के प्रति ही नहीं, उनकी वाचिक और मानसिक इंटीग्रिटी के प्रति भी आश्वस्त हैं। बल्कि इन तीनों को मिलाकर जो एक संपूर्ण इंटीग्रिटी बनती है, राम उसके बारे में समाश्वस्त हैं। सीता और उनके रिश्ते में अगाध प्यार और विश्वास है।

कैसे हम अपने आदर्शों का अपमान करते हैं। यदि हम उनके आदर्शों तक उठ नहीं सकते तो कम से कम उन्हें अपने अधिष्ठान से गिराने की कोशिश तो न करें, अन्यथा 'अंगूर खट्टे हैं' का संतोष इकट्ठा करना ही हमारा सबसे बड़ा शौर्य बना रहेगा। पत्नी पर शंका वहशत की हदें पार कर रही है। पेशे से मैकेनिक एक व्यक्ति ने अपनी पत्नी के यौनांग पर ही ताला लगा दिया। यह इंदौर की घटना जुलाई 2012 में प्रकाश में आई। मार्च 2013 में एक शंकालु पति ने राजगढ़ जिले के ग्राम पुराबरायठा में पत्नी पर शक के चलते उसकी नाक काट दी और एक तरह से अपनी वंश परंपरा का पालन किया क्योंकि उसके पिता ने भी इसी तरह अपनी पत्नी की नाक काटी थी। कितनी स्त्रियों ने ऐसे अविश्वास के चलते जान दी है। मैथिलीशरण गुप्त की एक कविता में कहा गया–''हा अबला! अरी अनादर, अविश्वास की मारी/मर तो सकती है अभागिनी कर न सके कुछ नारी।'' सीता को साम, दाम, दंड, भेद से अपने समय की सबसे शक्तिशाली सत्ता ने बहलाने फुसलाने, डराने की कोशिश की और गालियां खाईं सीता की। सीता ने अंध क्रोध में लक्ष्मण तक से यही कहा थाः ''मैं राम से बिछुड़ जाने पर गोदावरी नदी में समा जाऊंगी अथवा गले में फांसी लगा लूंगी अथवा पर्वत के दुर्गम शिखर पर चढ़कर वहां से अपने शरीर को नीचे डाल दूंगी या तीव्र विष का पान कर लूंगी

अथवा जलती आग में प्रवेश कर जाऊंगी परन्तु राम के सिवा दूसरे किसी पुरुष का कदापि स्पर्श नहीं करुंगी।' और रावण को तो एक सही क्रोध में क्या सुनाती हैं सीता– ''मेरे पतिदेव भगवान श्रीराम महान पर्वत के समान अविचल हैं, इन्द्र के तुल्य पराक्रमी हैं और महासागर के समान प्रशान्त हैं, उन्हें कोई क्षुब्ध नहीं कर सकता। मैं तन–मन–प्राण से उन्हीं का अनुसरण करने वाली तथा उन्हीं की अनुरागिणी हूं। श्रीरामचन्द्रजी समस्त शुभ लक्षणों से सम्पन्न, वट–वृक्ष की भांति सबको अपनी छाया में आश्रय देने वाले, सत्यप्रतिज्ञ और महान सौभाग्यशाली हैं। मैं उन्हीं की अनन्य अनुरागिणी हूं। उनकी भुजाएं बड़ी–बड़ी और छाती चौड़ी है। वे सिंह के समान पांव बढ़ाते हुए बड़े गर्व के साथ चलते हैं और सिंह के ही समान पराक्रमी हैं। मैं उन पुरुष सिंह श्रीराम में ही अनन्य भक्ति रखने वाली हूं। राजकुमार श्रीराम का मुख पूर्ण चंद्रमा के समान मनोहर है। वे जितेंद्रिय हैं और उनका यश महान है। उन महाबाहु श्रीराम में ही दृढ़तापूर्वक मेरा मन लगा हुआ है। पापी निशाचर ! तू सियार है और मैं सिंहिनी हूं। मैं तेरे लिये सर्वथा दुर्लभ हूं। क्या तू यहां मुझे प्राप्त करने की इच्छा रखता है। अरे! जैसे सूर्य की प्रभा पर कोई हाथ नहीं लगा सकता, उसी प्रकार तू मुझे छू भी नहीं सकता। अभागे राक्षस! तेरा इतना साहस! तू श्रीरघुनाथजी की प्यारी पत्नी का अपहरण करना चाहता है! निश्चय ही तुझे बहुत से सोने के वृक्ष दिखायी देने लगे हैं– अब तू मौत के निकट जा पहुंचा है। तू श्रीराम की प्यारी पत्नी को हस्तगत करना चाहता है। जान पड़ता है, अत्यन्त वेगशाली मृगवैरी भूखे सिंह और विषधर सर्प के मुख से उनके दांत तोड़ लेना चाहता है, पर्वतश्रेष्ठ मन्दराचल को हाथ से उठाकर ले जाने की इच्छा करता है, कालकूट विष को पीकर कुशलपूर्वक लौट जाने की अभिलाषा रखता है तथा आंख को सुई से पोंछता और छुरे को जीभ से चाटता है। क्या तू अपने गले में पत्थर बांधकर समुद्र को पार करना चाहता है? सूर्य और चन्द्रमा दोनों को अपने दोनों हाथों से हर लाने की इच्छा करता है? जो श्रीरामचन्द्रजी की प्यारी पत्नी पर बलात्कार करने को उतारु हुआ है। यदि तू कल्याणमय आचार का पालन करने वाली श्रीराम की भार्या का अपहरण करना चाहता है तो अवश्य ही जलती हुई आग को देखकर भी तू उसे कपड़े में बांधकर ले जाने की इच्छा करता है। अरे तू श्रीराम की भार्या को जो सर्वथा उन्हीं के योग्य हैं, हस्तगत करना चाहता है, तो निश्चय ही लोहमय मुख वाले शूलों की नोक पर चलने की अभिलाषा करता है। वन में रहने वाले सिंह और सियार में, समुद्र और छोटी नदी में तथा अमृत और कांजी में जो अन्तर है, वही अन्तर दशरथनन्दन श्रीराम में और तुझमें है। सोने और सीसे में, चन्दन मिश्रित जल और कीचड़ में तथा वन में रहने वाले हाथी और बिलाव में जो अन्तर है वही अन्तर दशरथनंदन श्रीराम और तुझमें है। गरुड़ और कौए में, मोर और जलकाक में तथा वनवासी हंस और गीध में जो अन्तर है वही अन्तर दशरथनंदन श्रीराम और तुझमें है। जिस समय सहस्त्र नेत्रधारी इन्द्र के समान प्रभावशाली श्री रामचन्द्र जी हाथ में धनुष और बाण लेकर खड़े हो जायेंगे, उस समय तू मेरा अपहरण करके भी मुझे पचा नहीं सकेगा, ठीक उसी तरह जैसे मक्खी घी पीकर उसे पचा नहीं सकती। अपहरण के वक्त सीता के शब्द हैंः ''तूने अपना नाम बताकर श्रीराम–लक्ष्मण के साथ युद्ध करके मुझे नहीं जीता है। ओ नीच! तू तो अपने को बड़ा शूरवीर मानता है, परन्तु संसार के सभी वीर पुरुष तेरे इस कर्म को घृणित, क्रूरतापूर्ण और पापरुप ही बतायेंगे। तूने पहले स्वयं ही जिसका बड़े ताव से वर्णन किया था तेरे उस शौर्य और बल को धिक्कार है! कुल में कलंक लगाने वाले तेरे ऐसे चरित्र को संसार में सदा धिक्कार ही प्राप्त होगा। किन्तु इस समय क्या किया जा सकता है? क्योंकि तू बड़े वेग से भागा जा रहा है। अरे! दो घड़ी भी तो ठहर जा, फिर यहां से जीवित नहीं लौट सकेगा। उन दोनों राजकुमारों की दृष्टि पथ में आ जाने पर तू सेना के साथ हो तो भी दो घड़ी भी जीवित नहीं रह सकता। जैसे कोई आकाशचारी पक्षी वन में प्रज्जवलित हुए दावानल का स्पर्श सहन करने में समर्थ नहीं होता, उसी प्रकार तू मेरे पति और उनके भाई दोनों के बाणों का स्पर्श किसी तरह सह नहीं सकता। रावण! यदि तू मुझे छोड़ नहीं देता है तो मेरे तिरस्कार से कुपित हुए मेरे पतिदेव अपने भाई के साथ चढ़ आयेंगे और तेरे विनाश का उपाय करेंगे, अतः तू अच्छी तरह अपनी भलाई सोच ले और मुझे छोड़ दे। यही तेरे लिये अच्छा होगा। नीच! तू जिस संकल्प या अभिप्राय से बलपूर्वक मेरा हरण करना चाहता है, तेरा वह अभिप्राय व्यर्थ होगा। मैं अपने देवोपम पति का दर्शन न पाने पर शत्रु के अधीनता में अधिक काल तक अपने प्राणों को नहीं धारण कर सकूंगी। निश्चय ही तू अपने कल्याण और हित का विचार नहीं करता है। जैसे मरने के समय मनुष्य स्वास्थ्य के विरोधी पदार्थों का सेवन करने लगता है, वही दशा तेरी है। प्रायः सभी मरणासन्न मनुष्यों को पथ्य नहीं रुचता है। निशाचर! मैं देखती हूं तेरे गले में काल की फांसी पड़ चुकी है,

इसी से इस भय के स्थान पर भी तू निर्भय बना हुआ है। रावण! अवश्य ही तू सुवर्णमय वृक्षों को देख रहा है, रक्त का स्त्रोत बहाने वाली भयंकर वैतरणी नदी का दर्शन कर रहा है, भयानक असिपत्र–वन को भी देखना चाहता है तथा जिसमें तपाये हुए सुवर्ण के समान फूल तथा श्रेष्ठ वैदूर्यमणि :नीलमः के समान पत्ते हैं और जिसमें लोहे के कांटे चिने गये हैं, उस तीखी शाल्मलिका का भी तू शीघ्र ही दर्शन करेगा। निर्दयी निशाचर! तू महात्मा श्रीराम का ऐसा महान अपराध करके विषपान किये हुए मनुष्य की भांति अधिक काल तक जीवन धारण नहीं कर सकेगा। रावण! तू अटल कालपाश से बंध गया है।'' काया की निष्ठा के बारे में 56वें सर्ग अरण्यकांड में सीता कहती हैं–''राक्षस तू इस संज्ञाशून्य जड़ शरीर और जीवन को नहीं रखना चाहती।'' सुंदरकांड के 22वें सर्ग में वे कहती हैं ''अनार्य! मेरी ओर दृष्टि डालते समय तेरी ये क्रूर और विकारयुक्त काली पीली आंखें पृथ्वी पर क्यों नहीं गिर पड़ी? इसलिए राम यदि सीता की वाचिक, कायिक और मानसिक अनन्यता के बारे में सोचते हैं तो ठीक है। बल्कि वचन की बात तो कुछ और ही है। हमने ऊपर सीता के वचन पढ़े, लेकिन रावण की वचन पर टिप्पणी, जो सुंदरकांड के 22वें सर्ग में दी गई है और दिलचस्प है। वह कहता है–'लोक में पुरुष जैसे–जैसे स्त्रियों से अनुनय विनय करता है, वैसे–वैसे वह उनका प्रिय होता जाता है, परन्तु मैं तुमसे ज्यों–ज्यों मीठे वचन बोलता हूं त्यों–त्यों तुम मेरा तिरस्कार करती जा रही हो।' तो ऐसा नहीं है कि वचन से आशय सिर्फ इतना ही है कि सीता की वाणी रामपरक है। बल्कि यह भी है कि दूसरों की चिकनी–चुपड़ी बातों या वचनों में वे आती नहीं हैं और यह भी कि अभिव्यक्ति के सारे खतरे भी वे उठाती हैं। रावण उन्हें 22वें सर्ग में यह कहता है कि 'मिथिलेशकुमारी! तुम मुझसे जैसी–जैसी कठोर बातें कह रही हो, उनके बदले तो तुम्हें कठोर प्राण दंड देना ही उचित है।'' वे राक्षसियों के साथ भी अभिव्यक्ति के उतरे ही खतरे उठाती हैं और वचन के मुद्दे पर ही आती हैं–'' तुम सब मिलकर मुझसे जो यह लोक विरुद्ध प्रस्ताव कर रही हो, तुम्हारा यह पापपूर्ण वचन मेरे हृदय में एक क्षण के लिए भी ठहर नहीं पाता है।'' उनके मन के बारे में क्या कहना। आत्महत्या से पूर्व, 28वें सर्ग में वे यही विचार करती हैं–''मैं तो केवल आपसे ही अनुराग करती हूं, राम। मेरा हृदय चिरकाल तक आपसे ही बंधा रहेगा।'' अग्निपरीक्षा के बाद अग्निदेव से राम यही कहते हैं–' भगवान! लोगों में सीता भगवन् लोगों में सीताजी की पवित्रता का विश्वास दिलाने के लिए इनकी यह शुद्धिविषयक परीक्षा आवश्यक थी, क्योंकि शुभलक्षणा सीता को विवश होकर दीर्घकाल तक रावण के अन्तःपुर में रहना पड़ा है। यदि मैं जनकनंदिनी की शुद्धि के विषय में परीक्षा न करता तो लोग यही कहते कि दशरथ पुत्र राम बड़ा ही मूर्ख और कामी है। यह बात मैं भी जानता हूं कि मिथिलेशनंदिनी जनककुमारी सीता का हृदय सदा मुझमें ही लगा रहता है! मुझसे कभी अलग नहीं होता। ये सदा मेरा ही मन रखतीं– मेरी इच्छा के अनुसार चलती हैं। मुझे यह भी विश्वास है कि जैसे महासागर अपनी तटभूमि को नहीं लांघ सकता, उसी प्रकार रावण अपने ही तेज से सुरक्षित इन विशाल लोचना सीता पर अत्याचार नहीं कर सकता था। तथापि तीनों लोकों के प्राणियों के मन में विश्वास दिलाने के लिए एकमात्र सत्य का सहारा लेकर मैंने अग्नि में प्रवेश करती हुई विदेहकुमारी सीता को रोकने की चेष्टा नहीं की। मिथिलेशकुमारी सीता प्रज्वलित अग्निशिखा के समान दुर्धर्ष तथा दूसरे के लिए अलभ्य है। दुष्टात्मा रावण मन के द्वारा भी इन पर अत्याचार करने में समर्थ नहीं हो सकता था। ये सती साध्वी देवी रावण के अन्तःपुर में रहकर भी व्याकुलता या घबराहट में नहीं पड़ सकती थी, क्योंकि ये मुझसे उसी तरह अभिन्न हैं, जैसे सूर्यदेव से उनकी प्रभा। मिथिलेशकुमारी जानकी तीनों लोकों में परम पवित्र हैं। जैसे मनस्वी पुरुष कीर्ति का त्याग नहीं कर सकता, उसी तरह मैं भी इन्हें नहीं छोड़ सकता।'' इसलिए अग्नि परीक्षा के पीछे राम का कोई निजी संदेह नहीं था। राम अग्नि परीक्षा के पूर्व जो कटु वचन बोलते हैं, वे रंगावतरण के संवाद हैं। इस कौशीलव को वे एक बाहरी प्रदर्शन के लिए करते हैं। उनके कथनों को देखें तो वे अचानक सारी बातें गैलरी के लिए करने लगते हैं–''सेना सहित सुग्रीव ने युद्ध में पराक्रम दिखाया तथा समय–समय पर ये मुझे हितकर सलाह देते रहे हैं, इनका परिश्रम भी अब सार्थक हो गया। ये विभीषण दुर्गुणों से भरे हुए अपने भाई का परित्याग करके स्वयं ही मेरे पास उपस्थित हुए थे। अब तक का किया हुआ इनका परिश्रम भी निष्फल नहीं हुआ।'' अग्नि परीक्षा से पूर्व वे ये कह रहे हैं और सीता की मुक्ति को भी निर्वैयक्तिक (Impersonal) बनाने की कोशिश कर रहे हैं। वे कह रहे हैं 'सदाचार की रक्षा, सब ओर फैले हुए अपवाद का निवारण तथा अपने सुविख्यात वंश पर लगे हुए कलंक का परिमार्जन करने के लिए ही यह सब मैंने किया है।''

— सुन्दरकांड एक पुर्नपाठ से साभार

पेज 01 का शेष

देनी चाहिए और फिर शराब भी छोड़ देनी चाहिए।'' उसे विश्वास ही नहीं हुआ, हक्का–बक्का होकर उसने मेरी ओर देखा और कहा– ''लेकिन अगर सिगरेट नहीं पीनी है और न ही शराब पीना है तो फिर जीने का अर्थ ही क्या है?'' तब मैंने उससे कहा ''यदि तुम अभी उसी अवस्था में हो तो किसी और चीज के बारे में बातचीत करने का कोई फायदा नहीं।'' यह बात हम जितना समझते हैं उससे कहीं अधिक व्यापक है। यह हमें वाहियात लगती है क्योंकि हमारे पास, निश्चय ही, सिगरेट फूंकने और शराब पीने से बढ़कर मजेदार काम है, लेकिन साधारण मनुष्यों के लिए अपनी इच्छाओं की पूर्ति ही जीने का एकमात्र ध्येय है। उन्हें लगता है कि इस तरह वे अपनी स्वाधीनता और जीने के अभिप्राय को पुष्ट करते हैं।

जब तुम्हारे अन्दर कोई कामना होती है तो तुम उस चीज के अधीन होते हो जिसकी कामना कर रहे हो, वह तुम्हारे मन और जीवन पर अधिकार कर लेती है और तुम दास बन जाते हो। यह स्पष्ट है कि मूल निश्चेतना की स्थिति से बाहर निकलने के लिए कामना अनिवार्य थी क्योंकि कामना के बिना कर्मण्यता के प्रति कोई जाग्रति नहीं होती। परन्तु जब एक बार व्यक्ति चैतन्य में जन्म ग्रहण कर लेता है ठीक यही कामना, जिसने निश्चेतना से बाहर निकलने में सहायता की थी, जड़तत्व के बन्धनों से मुक्त होने तथा एक उच्चतर चेतना में ऊपर उठने से रोकती है। साधक के यह पूछने पर कि मॉ वह स्थिति किस प्रकार की होती है जिसमें मनुष्य सभी भोगों के परे चला जाता है? इस पर श्रीमॉ कहती हैं कि वास्तव में एक कामनारहित स्थिति होती है जिसमें मनुष्य एक ऐसे आनंद में निवास करता है जिसका कोई कारण नहीं होता, जो आन्तर या बाह्य परिस्थिति पर निर्भर नहीं करता जो एक स्थायी जीवन की परिस्थितियों से स्वतंत्र कारण–रहित अवस्था होती है। मनुष्य आनन्द में रहता है, यथार्थ में ऐसा इसलिए होता है कि मनुष्य दिव्य सद्वस्तु के विषय में सचेतन हो गया है। परन्तु मनुष्य जब तक कामनारहित नहीं हो जाता वह आनंद को नहीं अनुभव कर सकता। यदि किसी में कामनाएं हैं तो वह जो कुछ अनुभव करता है वह मात्र इंद्रिय–सुख और विषय भोग होता है, पर वह आनंद नहीं होता। आनंद का एक नितान्त भिन्न स्वभाव है और वह सत्ता में केवल तभी अभिव्यक्त हो सकता है जब कामनाएं निर्मूल हो जाती हैं। जब तक मनुष्य में कामनाएं होती हैं, वह आनंद का अनुभव नहीं कर सकता, यदि उसमें आनंद की कोई शक्ति उतर भी जाये तो वह कामनाओं की उपस्थिति के कारण तुरन्त दूषित हो जायेगी।

श्रीमातृवाणी में कहा गया है कि कामना निम्न प्रकृति की सबसे अधिक तमसाच्छन्न क्रिया है और यह मनुष्य को सबसे अधिक तमसाच्छन्न कर देती है। कामनाएं दुर्बलता और अज्ञान की गतियां हैं और ये तुम्हें तुम्हारी दुर्बलता तथा अज्ञान से बांधे रखती हैं। लोगों की धारणा है कि कामनाएं उनके अपने अंदर उत्पन्न होती हैं, वे महसूस करते हैं कि ये या तो उनके अपने आप में से पैदा होती हैं या उनके अपने अंदर उठती हैं, किन्तु यह एक भूल है। कामनाएं अंधकारग्रस्त निम्न प्रकृति के विशाल समुद्र की लहरें हैं और एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में आती–जाती रहती हैं। मनुष्य कामना को अपने आप में पैदा नहीं करते बल्कि ये लहरें उन पर चढ़ आया करती हैं जो कोई इनके लिए खुला हो या जिसने अपने बचाव का प्रबंध न किया हो, वह इनकी पकड़ में आ जाता है और इनके थपेड़ों को खाता हुआ इधर से उधर डोलता रहता है। कामना मनुष्य को अभिभूत करके, उस पर अधिकार जमा कर उसे विवेक करने लायक नहीं रहने देती और उसमें ऐसी धारणा पैदा कर देती है कि इसकी अभिव्यक्ति करना भी उसके अपने स्वभाव का एक अंग ही है। पर सच तो यह है कि मनुष्य के सच्चे स्वभाव का एक अंग ही है।

ईर्ष्या, डाह, घृणा और हिंसा आदि सभी निम्नतर आवेगों के संबंध में यही बात है। ये भी वे गतियां हैं जो तुम्हें पकड़ लेती हैं, वे लहरें हैं जो तुम पर चढ़ आती और तुम्हें पराजित करती हैं। इनका सच्चे चरित्र या सच्चे स्वभाव से कोई सम्बंध नहीं है, बल्कि ये तो उन्हें विरुप बना देती हैं। ये तुम्हारा वास्तविक या अविभाज्य अंग नहीं हैं बल्कि ये इर्द–गिर्द के उन अंधकारमय समुद्रों से आती हैं जिनमें निम्न प्रकृति की शक्तियां विचरण करती हैं। इन कामनाओं में, इन आवेशों में कोई व्यक्तित्व नहीं होता, इनमें तथा इनकी क्रियाओं में ऐसी कोई चीज नहीं होती जो तुम्हारे लिए विशेष हो, ये इसी रुप में सबके अंदर प्रकट होती हैं। मन की अज्ञानमयी गतियां, व्यक्तित्व को ढक देने वाली तथा उसकी वृद्धि और सार्थकता को क्षीण करने वाली भ्रांतियां, संदेह और कठिनाइयां भी, इसी स्त्रोत से आती हैं। ये गुजरती हुई लहरें हैं और जो कोई इनकी पकड़ में आने के लिए और अंधे उपकरण की तरह काम आने के लिए तैयार हो उसे पकड़ लेती हैं। फिर भी, प्रत्येक मनुष्य यह विश्वास लिए फिरता है कि ये गतियां उसका अपना अंग और उसके अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व की बहुमूल्य उपज हैं। इतना ही नहीं, ऐसे लोग भी हैं जो इनसे और अपनी अक्षमताओं से चिपके रहते हैं।

मानवता के सृजन में संस्कारों की भूमिका

श्याम सुंदर रघुवंशी

भारतीय समाज सनातन धर्म पर आधारित होकर चारों पुरुषार्थों धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष के आचार एवं व्यवहारिक जीवन यापन करने की संस्कारपूर्ण सामाजिक व्यवस्थाओं के स्तम्भों पर प्राचीनकाल से खड़ा है। जन्म के पूर्व एवं जन्म पश्चात् माता–पिता, गुरु, सन्तों एवं सद्ग्रंथों की व्यवस्थाओं से इकाई के रुप में परिवार, समग्र रुप से समाज एवं राष्ट्र के उत्थान में पूरक भूमिका का निर्वहन करता रहा है। सभी व्यवस्थाओं से भौतिक, आध्यात्मिक एवं पारलौकिक उपलब्धियों के शिखर बिन्दुओं तक पहुंचने में विश्व इतिहास में गौरवपूर्ण एवं अग्रणी भूमिका रही है। श्रीमद् भगवद्गीता, महाभारत, रामायण, वेद, उपनिषद आदि महापुरुषों द्वारा रचित कर विश्व का मार्गदर्शन कराता आ रहा है। भगवान श्रीराम, श्रीकृष्ण, बुद्ध, महावीर, जगतगुरु आदि शंकराचार्य, स्वामी विवेकानंद, स्वामी रामदास तथा आधुनिक समय में महात्मा गांधी, आचार्य रजनीश, मुरारी बापू सभी भारतीय समाज के सृजन में योगदान दे रहे हैं। नीतिशास्त्र, आरोग्यशास्त्र, गुरुकुलों की शिक्षा पद्यति, रामराज्य का न्याय, विदुरनीति, महाभारत का धर्मयुद्ध सभी इसके साक्षी हैं।

वर्तमान समय में भारतीय परिवारों का मोड़ भौतिकवादी संसाधनों में अभिरुचियों की ओर स्वतंत्रता पश्चात से परिलक्षित हो रहा है जिसके कारण उपभोक्तावादी संस्कृति, दहेज लेकर कन्या पक्ष से वर को बाजारु भाव पर क्रय–विक्रय किया जा रहा है। महिलाओं को विज्ञापनों में पाश्चात्य संस्कृति अनुसार उपभोग की वस्तु का दर्जा दिया जा रहा है। आज खर्चीली शादियां हो रही हैं, सम्पन्नता प्राप्त महापुरुषों द्वारा सामूहिक विवाहों में अपने पुत्र–पुत्रियों का विवाह न कर आलीशान होटलों में विवाह समारोह आयोजित कर सामाजिक एवं गरीब परिवारों को उपहास का पात्र बनाया जाता है। सामाजिक व्यवस्थाओं में रुचि का अभाव, दान, परमार्थ, सहायता आदि सत्कर्मों से हाथ सिकोड़ने की प्रवृत्ति बढ़ रही है।

वर्तमान कुरीतियों एवं सामाजिक व चारित्रिक पतन में अधिकांश माता–पिता, गुरुजी, समाजसेवी कहलाने वाले व्यक्तित्व, नेता, अभिनेता आदि अपने दिग्दर्शित आचरणों से अनुत्तरदायी होकर भविष्य की पीढ़ी का निर्माण एवं सृजन नहीं कर रहे हैं। जीवन को सुसंस्कृत करने करने के लिए जन्म के पूर्व पति–पत्नी की, जन्म उपरांत माता–पिता, गुरु, समाज, शिक्षक एवं संपर्क में आने वाले मित्रों की भूमिका का चरित्र निर्माण में अत्यन्त योगदान रहता है। शिक्षा स्तर पर एवं विवाहपूर्व समाज, पर्यावरण, मीडिया, इंटरनेट आदि आदान–प्रदान संसाधनों का प्रभाव गौण होता है। विवाह उपरान्त पति–पत्नी के रुप में आपसी प्रेम, विश्वास, जीवनयापन करते हुए मृत्यु पूर्व तक समाज, राजनीति, अध्यात्म, व्यवसाय आदि का योगदान होता है।

सनातन पद्धति में जीवन के सभी स्तरों पर ऋषियों, मुनियों एवं समाज सुधारकों द्वारा सोलह संस्कारों का वर्णन किया गया है। वेदव्यास द्वारा जन्म पूर्व तीन, जन्म पश्चात दस, विवाह के दाम्पत्य सूत्र में बंधने पर दो तथा मृत्यु उपरान्त एक संस्कार की व्यवस्था की है। यह संस्कार महाभारत, रामायण में भगवान कृष्ण एवं राम के ऊपर भी आधारित होने से चरित्र निर्माण में बहुत ही आवश्यक हैं। जन्म पूर्व योग्य संतान प्राप्ति हेतु गर्भाधान संस्कार, पुत्र प्राप्ति हेतु पुंसवन तथा गर्भाधान के चौथे, छठे या आठवें महीने में सीमन्तोनयन संस्कार होता है। इस संस्कार का गर्भस्थ शिशु पर माता–पिता के व्यवहार का असर पड़ता है। प्रहलाद, अभिमन्यु के सुसंस्कार तथा राक्षसीय संतानों के वर्तमान उदाहरण मार्गदर्शक हैं। जन्म पश्चात जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूड़ाकरन, कर्णछेदन, यज्ञोपवीत, विद्यारंभ, केशान्त एवं समावर्तन अर्थात् विद्याध्ययन पश्चात् घर वापस लौटने के दस संस्कार हैं। प्रायः ये संस्कार विवाह पूर्व ही सम्पन्न होते हैं।

विवाह संस्कार के पश्चात दो अजनबी सूत्र दाम्पत्य जीवन में प्रवेश करते हैं जहां एक–दूसरे का विश्वास मानना जीवन की सफलता का प्रतीक है। गृहस्थ जीवन में अधिकांश भारतीय कृषक परिवार मृत्यु पर्यन्त तक रहते हैं जिससे उन्हें पारिवारिक एवं सामाजिक उत्तरदायित्वों का निर्वहन करते हुए पुरुषार्थों की चरम सीमा तक पहुंचने का मार्ग प्रशस्त होता है। विवाह से दो अपरिचित स्त्री–पुरुष जीवन भर साथ रहकर एक दूसरे का सहयोग करते हैं। स्त्री के बिना पुरुष तथा पुरुष के बिना स्त्री को अधूरा माना जाता है। इसी से पत्नी अर्धांगिनी कहलाती है। अर्धनारीश्वर भी भगवान शिव कहलाते थे। विवाह से संतान का जन्म होने से वंश आगे बढ़ता है तथा संतान के माध्यम से माता–पिता के अंतिम संस्कार में भागी होने से मातृ एवं पितृ ऋण चुकाने की परम्परा है। विवाह पश्चात पति–पत्नी साक्षी अग्नि को घर पर पवित्र जगह स्थापित करते हैं जो कि प्रायः विवाह संस्कार से ही जुड़ा संस्कार है। दाम्पत्य जीवन में वर एवं वधु से परस्पर मांगे जाने वाले जीवनोपयोगी क्रमशः सात एवं पांच वचनों का परिपालन करने से जीवन की सफलता, यश, प्रेम बना रहता है। यही कारण है कि मुस्लिम परिवारों में मात्र तीन तलाक से ही परिणय बंधन शीघ्र ही टूट जाते हैं।

अंतिम संस्कार अन्त्येष्टि एवं श्राद्ध संस्कार है जो मृतक की मुक्ति के लिए किया जाता है। इस संस्कार से मृतक का संबंध इस लोक से समाप्त होकर परलोक से जुड़ जाता है। जन्म से मृत्यु तक अपने परिवार में लम्बा समय व्यतीत करने के कारण तथा मृत्यु पश्चात प्रेत योनि से पितर योनि में जाने के मनुस्मृति एवं अन्य शास्त्र संगत मतों से अस्थियों का गंगाजल में प्रवाहित करना, दशगात्र एवं सामाजिक श्राद्ध करने की व्यवस्था है।

– मोबाइल–09630621364

हमें भगवान से क्या मांगना चाहिए!!

सौ. सारंगा देवी दिलीप सिंह रघुवंशी

जब भगवान से कुछ मांगने की बारी आती है तो हमें रामचरित मानस के केवट, जो कि नौका चलाता है, की याद आती है। प्रभु श्रीराम साक्षात् ज्ञान हैं। लक्ष्मनजी महाराज वैराग्य मूर्ति हैं और माता सीता स्वयं भक्ति हैं और तीनों मिलकर साथ में उतराई देना चाहते हैं फिर भी केवट उतराई नहीं लेता है क्योंकि उसे मालूम है भगवान की यह आदत है कि भगवान के मार्ग पर यदि कोई चले न तो भगवान उसको फंसाना चाहते हैं, लोभ देकर, धन देकर, संपदा देकर भगवान फंसाने लगते हैं। लेकिन जो मछली की तरह चालाक है वो प्रभु के चरणों के पास आ जाते हैं। वो लोग मायाजाल :मोहरुपी जालः में नहीं फंस सकते हैं, उन्हें प्रभु के चरणों का सहारा होता है।

केवट शरण गये अकुलाई,
कहेउ कृपाल लेहि उतराई।

प्रभु के मायाजाल से बचना चाहते हो तो तुम भी केवट की तरह ठाकुर के चरणों में आश्रय कर लो। मायाजाल तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ पायेगा। केवट भगवान के चरणों को पकड़ लिया, अकुला गया, घबरा गया। जैसे कोई मछली पकड़ने जाता है और वहां जाल फैलाता है तो इस मछुआरे के जाल में कौन सी मछली आती है जो मछुआरे के चरणों से दूर होती है। जो मछली चालाक है वह मछुआरे के पास आ जाए तो वहां जाल नहीं होता है और वह बच जाती है। केवट रो रहा है और बार–बार कहता है प्रभु मैंने आपको वचन दिया है कि मैं आपसे उतराई नहीं लूंगा। प्रभु उसे समझाते हैं कि यह भीख नहीं, भेंट है। भगवान बार–बार समझाते हैं कि मेरे पास इस राम नामांकित मुद्रिका के अलावा और कुछ नहीं है, प्रभु को संकोच हो रहा है और यह मुद्रिका कोई सामान्य नहीं है भक्ति माता सीता की यह मुद्रिका है। तब केवट बोला प्रभु ठीक है आप देना ही चाहते हैं तो–

फिरती बार मोहि जो देना,
सो प्रसादु मैं सिर धरि लेना।

भगवान से संसार की चीजें नहीं मांगे, भगवान से उसकी भक्ति मांगे। भगवान की भक्ति से संसार की सारी समस्याएं दूर हो जायेंगी। केवट बोला वापस आकर प्रभु आप जो भी मुझे देंगे मैं स्वीकार कर लूंगा। लक्ष्मनजी महाराज ने कहा हम किसी का उधार नहीं रखते हैं तब केवट ने कहा यह उधार नहीं है, मैं आपको फ्री में नौका पार करवा रहा हूं। यह आपके ऊपर ऋण है, कल जब मैं भवसागर के किनारे आऊं तो आप मुझे फ्री में भवसागर पार करवा देना, हिसाब बराबर हो जाएगा।

दूसरा कारण संत लोग यह बताते हैं कि केवट ने कहा प्रभु हम एक ही जाति के हैं और एक जाति वाले पैसे थोड़े ही लेते हैं। तब लक्ष्मनजी महाराज सोचने लगे कि यह केवट प्रभु को भी केवट कहता है। केवट बोला प्रभु मैं गंगा पार कराने वाला केवट हूं तो आप इस विशाल भवसागर को पार कराने वाले केवट हैं, फिर जाति वाले से क्या उतराई लेना। प्रभु के बार–बार मनाने पर भी जब केवट नहीं माना तो प्रभु ने अन्त में उसे भक्ति का वरदान दिया। केवट ने संसार की कोई चीज नहीं मांगी एक प्रभु ही मिल जायें तो बच ही क्या जाता है। प्रभु ने केवट को अन्त में भक्ति मैया के हवाले कर दिया और कहा मैया अब तू इसको संभाल और भगवान आगे चल दिये, तब केवट भगवान के चरणों को पकड़कर रो पड़ा और कहा कि प्रभु मैंने अभी तक आपकी प्रतीक्षा की इंतजार किया लेकिन प्रभु इन्तजार में जीना तो आसान है लेकिन विरह में जीना बहुत मुश्किल है, इसलिए प्रभु मुझे अपने साथ ले चलिए। मेरी नस–नस में रक्त की हर बूंद में आपका रंग चढ़ा है।

मुझमें हर रंग अब तुम्हारा है,
अब तो कह दो कि तू हमारा है।
तेरे सजदे में ये तमाम जहां,
अपनी ठोकर से मैने मारा है।।

धन्य है वो रामचरित मानस का पात्र केवट और धन्य है उसकी प्रभु श्रीराम की भक्ति। केवट की भक्ति को हम राम–राम करते हैं और सभी रघुकलश वाचकों, महानुभावों को हार्दिक शुभकामनाएं देते हैं।

लेखक– एमएससी, बीएड, अमरावती, महाराष्ट्र, मो. 9960129404, 9422542289

जीवन और जगत का उल्टा वृक्ष

रामसिंह रघुवंशी

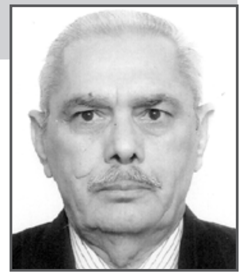

श्रीमद्भगवतगीता के अध्याय 15 में जीवन एवं जगत के ''उल्टे वृक्ष'' का उल्लेख है। हम इसी विशेष पर विचार करने जा रहे हैं। इस ''उल्टे वृक्ष'' में विशेष रुप से, मानव जीवन, मानव शरीर, मानव शरीर के क्रियाकलाप आदि का उल्लेख है। हो भी क्यों नहीं, इसकी विषय–वस्तु ही ''पुरुषोत्तम योग'' है। पुरुष से प्रारम्भ होकर पुरुषोत्तम की यात्रा का जो साधन है, उसका उल्लेख होना बहुत स्वाभाविक है। मैं यहां अपनी बात न कहते हुए श्रीमद्भगवतगीता के मूल पाठ का उद्धृत करता हूं:– श्रीभगवानुवाच–

ऊर्ध्वमूलमधः शाखामश्वत्थं प्राहुरव्ययम्।
छन्दासि यस्य पर्णानि यस्तं वेद स वेदवित्।।

श्री भगवान उवाच– भगवान ने कहा, ऊर्ध्वा–मूलम्–ऊपर की ओर जड़ें, अधः– नीचे की ओर, शाखम्–शाखाएं, 'अश्वत्थम''–अश्वत्थ वृक्ष को, प्राहुः– कहा गया है, अव्ययम–शाश्वत, छन्दांसि–वैदिक स्त्रोत, यस्य–जिसके, पर्णानि–पत्ते, यः जो कोई, तम्–उसको, वेद–जानता है, सः– वह, वेदवित्–वेदों का ज्ञाता। शब्द विन्यास के पश्चात अर्थ हुआ– भगवान ने कहा– कहा जाता है कि एक अश्वत्थ वृक्ष है, जिसकी जड़ें तो ऊपर की ओर हैं और शाखाएं नीचे की ओर तथा पत्तियां वैदिक स्त्रोत हैं। जो इस वृक्ष को जानता है वह वेदों का ज्ञाता है।

इस श्लोक की विषय वस्तु को स्व. स्वामी प्रभुपाद ने विस्तार से समझाया है, हम पाठकों के ज्ञानवर्धन हेतु उसका एक संक्षिप्त अंश यहां प्रस्तुत कर रहे हैं। स्वामीजी ने उल्लेख किया है कि इस अध्याय में वैदिक अध्ययन का प्रयोजन कृष्ण को समझना है।

भौतिक जगत के संबंध में तुलना अश्वत्थ के वृक्ष से की गई है। जो व्यक्ति सकाम कर्मो लगा है उसके लिए इस वृक्ष का कोई अन्त नही है। वह एक शाखा से दूसरी और दूसरी से तीसरी पर घूमता रहता है। इस जगत वृक्ष का कोई अन्त नहीं है और जो इस वृक्ष में आसक्त है उसकी मुक्ति की कोई संभावना नही है। यद्यपि इस संसार में ऐसे वृक्ष का जिसकी शाखाएं नीचे की ओर हों तथा जड़ें ऊपर की ओर हों, कोई अनुभव नहीं है, किन्तु बात कुछ ऐसी ही है। ऐसा वृक्ष जलाशय के निकट पाया जाता है, ऐसी कल्पना की जा सकती है, जैसे कि हम देखते हैं कि जलाशय के तट पर उगे वृक्ष का प्रतिबिम्ब जल में पड़ता है, तो उसकी जड़ें ऊपर तथा शाखाएं नीचे की ओर दिखती हैं। दूसरे शब्दों में यह जगत रुपी वृक्ष आध्यात्मिक जगत रुपी वास्तविक वृक्ष का प्रतिबिम्ब मात्र है। इस आध्यात्मिक जगत का प्रतिबिम्ब हमारी इच्छाओं में स्थित है, जिस प्रकार वृक्ष का प्रतिबिम्ब जल में रहता है। इच्छा ही इस प्रतिबिम्बित भौतिक प्रकाश में वस्तुओं के स्थित होने का कारण है। जो व्यक्ति इस भौतिक जगत से बाहर निकलना चाहता है उसे वैश्लेषिक अध्ययन के माध्यम से इस वृक्ष भलीभांति जान लेना चाहिए। फिर वह इस वृक्ष से अपना सम्बंध विच्छेद कर सकता है। स्वामी प्रभुपाद की विवेचना के पश्चात अध्याय 15 की विषय वस्तु का अति संक्षिप्त विवरण पाठकों की जानकारी के लिए प्रस्तुत किया जा रहा है। श्लोक 2, 3, 4 में इस वृक्ष के अंग–प्रत्यंगों का वर्णन किया गया है, श्लोक 5, 6, 7 में भगवान के ऐश्वर्य का विवरण दिया गया है। श्लोक 7 से 15 तक में जीव को ईश्वर को कैसे प्राप्त किया जाय इसकी विधि का विवरण है तथा अंतिम पांच श्लोक में पुरुष से पुरुषोत्तम की अवस्था का फल–परिणाम आदि का उल्लेख है।

जिस जीवन एवं जगत के उल्टे वृक्ष को समझने के लिए ''वैश्लेषिक'' अध्ययन की चर्चा की गयी है हम उस 'वैश्लेषिक' अध्ययन की ओर बढ़ने का प्रयास करते हैं। सर्वप्रथम हमें 'पुरुष' शब्द के संबंध में जानने का प्रयास करना होगा क्योंकि यही पुरुष–शरीर धारी मानव पुरुष से पुरुषोत्तम होने की यात्रा में है और इसकी यात्रा का अंतिम पड़ाव है पुरुषोत्तम की स्थिति प्राप्त करना। मानव शरीर एवं पुरुषोत्तम के संबंध में अर्थववेद के प्राण विद्या प्रसंग में जो उल्लेख मिलता है उसे मैं प्रिय पाठकों के मनन हेतु उल्लेख करता हूं। अर्थव वेद की ''प्राण–विद्या'' रहस्यमयी विद्या है। इस प्राण विद्या के द्वारा शरीर की चेतन, अवचेतन क्रियाओं को नियंत्रित किया जाता है। पंडित देवदत्त शास्त्री ने ''शरीर–तंत्र'' का बड़ा सुंदर चित्रण किया है। उनका कहना है कि मनुष्य का शरीर मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार तथा पांच कर्मेन्द्रियों और पांच ज्ञानेन्द्रियों से निर्मित है। इसमें हृदय है, कुण्डलिनी है, षटचक्र हैं, सहस्त्रार चक्र है। ऐसे उत्तम शरीर को वेदों,

उपनिषदों में ब्रह्मपुरी कहा गया है और इस पुरी में निवास करने के कारण 'ब्रह्म' को 'पुरुष' कहा गया है।

ऊर्ध्वो नु सृष्टा अस्तिर्यङ्नु सृष्टा
इः सर्वादिशः आ बभूवां इ।
पुरं यो ब्रह्मणों वेद यस्याः पुरुष उच्यते।।

अर्थात ऊंचा उत्पन्न होता हुआ तिरछा उत्पन्न होता हुआ वह पुरुष सब दिशाओं में यथावत व्याप्त है। जो मनुष्य ब्रह्म की उस पुरी को जानता है उसी से वह उसे परमेश्वर, पूर्णपुरुष अर्थात् 'पुरुषोत्तम' मानता है। इसी तरह वैदिक संहिताओं में परमेश्वर का वाचन मुख्य शब्द 'पुरुष' के रुप में मिलता है। वेद की चारों संहिताओं में 'पुरुष' शब्द का प्रयोग हुआ है। आयुर्वेद संहिता के ''पुरुष सूक्त'' में परम पुरुष या विराट पुरुष के अर्थ में इसका विशेष रुप से प्रयोग किया गया है।

मानव शरीर की इस प्रकार की दिव्यता का वर्णन करने के पीछे अर्थवेदादि का प्रयोजन यही है कि रोग, दोष, पाप, शाप तथा दुर्भाग्य से बचने के लिए प्रत्येक व्यक्ति को शरीर की दिव्यता का ज्ञान अवश्य रखना चाहिये। उसे मल–मूत्र, मेदा, मज्जा, रोग, दोष का ही केन्द्र नहीं समझना चाहिए और न ही जारा जीर्ण मरणन्धयी समझना चाहिए। शरीर के रोम–रोम में ईश्वर का वास है, यही समझकर उसके प्रति ''श्रद्धा'' का भाव रखना चाहिए। 'श्रद्धा' के भाव का अर्थ है पूज्य भाव और पूज्यभाव आपको–हमें पवित्र आचरण की ओर प्रेरित करता है। सामान्य तौर पर प्रवचनकार–ज्ञानी लोग शरीर को हीन एवं दुर्गणों का भंडार बताया करते हैं, जिसके कारण आम मानव में शरीर के प्रति प्रेम मात्र की जगह घृणाभाव पैदा होता है, यही घृणाभाव तीव्र विचार तरंगों के सम्पर्क में आकर मानव को मरने मारने की प्रवृत्ति में घसीट ले जाता है। इसलिए शरीर के प्रति प्रेम और 'श्रद्धा' का भाव रखें क्योंकि इसी शरीर में ईश्वर–आत्मा के रुप में निवास करता है।

मानव देह के संबंध में हमारे मनों में किसी प्रकार की भ्रांति न रहे इसलिए मैं इस विषय में एक प्राचीन मत का यहां उल्लेख करना आवश्यक समझता हूं। ऐतरेय उपनिषद के द्वितीय एवं तृतीय खण्ड में सृष्टि सृजन की प्रक्रिया का उल्लेख मिलता है। उपनिषदकार बताते हैं परमात्मा ने अपनी प्राण–देह से देवताओं को उत्पन्न किया। वे सब देवता समुद्र में आ गिरे। फिर उनमें भूख उत्पन्न हुई, उन्होंने परमात्मा से कहा ''हमारे लिए ऐसे शरीर का निर्माण करो जिसमें रहकर हम अन्न आदि खा सकें।'' परमात्मा ने उन्हें गाय, घोड़ा आदि शरीर दिखाएं पर देवताओं ने उन्हें पसन्द नहीं किया। अन्त में उन्हें मनुष्य शरीर दिखाया, वह देवताओं को पसन्द आ गया और उसमें प्रवेश कर गये। अग्नि वाणी बनकर मुख में वायु प्राण बनकर नासिका में और सूर्य चक्षु बनकर नेत्र गोलकों में प्रविष्ट हुए। दिशाएं स्त्रोत बनकर कानों में घुसीं। औषायिों ने रोम बनकर त्वचा में वास स्थान बनाया। चन्द्रमा मन बनकर हृदय में स्थित हुआ। मृत्यु अपान बनकर नाभि में और जल रेत :वीर्यः बनकर उपस्थ में स्थित हो गया। परमात्मा ने तब क्षुधा और प्यास को भी सब रेवाओं के अंशों में बांट दिया और वे हवि ग्रहण करने लगे। तदन्तर परमेश्वर ने जल को तपाया और अन्न की उत्पत्ति की। अन्नत को केवल अपान वायु ही ग्रहण कर सकी और उन्हीं के द्वारा प्रत्येक देवता को वांछित हवि मिलने लगी।

अब परमात्मा ने विचार किया कि इंन्द्रियों में बैठे हुए देवताओं ने अपने–अपने विषय ग्रहण कर लिये तो फिर इनके लिये मैं कौन हुआ? यदि मैं न हुआ तो देवताओं की शक्ति का नियंत्रण कौन करेगा? तब परमेश्वर ने मनुष्य की देह में प्रवेश किया। इस उपाख्यान से हमारी दृष्टि ''मानव'' देह और मानव जीवन के संबंध में साफ हो जाना चाहिए, ऐसा मैं अनुभव करता हूं। मानव देह के संबंध में, पुरुष के संबंध में हम पर्याप्त जान चुके हैं। इस विषय के कई गंभीर पहलू हैं जिन पर हम विचार करेंगे। मेरी समझ के हिसाब से हमें अब जीवन एवं जगत के संबंध में समझने की आवश्यकता है, यद्यपि बहुत कुछ जान चुके हैं किन्तु अभी कुछ शेष है जिसे हम जानने का प्रयास करेंगे।

जीवन को यदि मोटी दृष्टि से देखा जाए तो वह एक ऐसा खिलवाड़ जान पड़ता है जिसे ज्यों त्यों करके काटा जाता है। निर्वाह की व्यवस्ताएं जुटाने एवं प्रतिकूलताओं से मोर्चा लेने में ही माथापच्ची करते–करते समय पूरा हो जाता है। चारों ओर अभाव एवं संकट ही नजर आता है। नीरस, निरर्थक जीवन जीते हुए–अपने दुर्भाग्य का रोना रोते हुए व्यक्ति अपना समय समाप्त कर मौत के मुंह में चला जाता है। साधारण जीवन की यही एक छोटी सी झांकी है जो विपरीत परिस्थितियों में तो अन्य प्राणियों से भी गया–बीता बना देती है। यह अन्तहीन दशा है, इसी का उल्लेख अध्याय 15 में किया गया। इस स्थिति से विकास की ओर जीवन को कैसे ले जाया जाए, इसका परामर्श भी गीताकार ने दिया है।

— **9630621364,9479941863**

रासलीला

डॉ. भानुशंकर मेहता

कहते हैं 18 पुराण और महाभारत की रचना करके भी जब महर्षि व्यास को शांति और संतोष न मिला तो उन्होंने श्रीमद्भागवत पुराण की रचना की। इस महाग्रंथ में रससिक्त अंश है दशमस्कंध और इसमें भी 29 से 33वें अध्याय 'रास पंचाध्यायी' के नाम से सुख्यात है और इन्हीं में शरद पूर्णिमा के महारास का अद्भुत वर्णन है। इसी 'राम पंचाध्यायी' से प्रेरित होकर सूरदास, नंददास, हरिराम व्यास, नवलसिंह और रहीम आदि कवियों ने सुंदर काव्य रचे हैं। इस प्रकार रासलीला का मंचन निश्चित रुप से 10वीं सदी से ही आरंभ हो गया था।

ध्यान से देखें तो महाभारत और श्रीमद्भागवत के श्रीकृष्ण दो भिन्न व्यक्ति प्रतीत होते हैं। महाभारत के कृष्ण परम पुरुष, गंभीर राजनीतिज्ञ और दार्शनिक हैं जबकि गोकुल वृंदावन मथुरा के बाल कृष्ण वंशीवादक, नृत्य करने वाले, महारास के नायक, गोपियों के प्राण वल्लभ और बाल लीला करने वाले हैं। एक और प्रश्न उठाया गया है कि श्रीमद्भागवत में 'राधा' का केवल एक बार उल्लेख हुआ है। आगे महाकवि जयदेव ने 'गीत गोविन्द' में और ब्रह्मवर्त पुराण में 'राधा' की सृष्टि हुई और आह्लादिनी शक्ति 'राधा' के आविर्भाव होते ही श्रीकृष्ण चैतन्य हो उठे और महारास आरंभ हो गया। भास के नाटक 'बाल चरित' में हल्लीसक का उल्लेख है। कामसूत्र के टीकाकार यशोधर ने एक नायक :श्रीकृष्णः के साथ अनेक नायिकाओं :गोपियोंः का मंडल बनाकर नृत्य करने की बात लिखी है। हरिवंश के टीकाकार नीलकंठ भी यही बात लिखते हैं और इसे रासक्रीड़ा कहते हैं।

रास ब्रज मंडल का आदिकालीन नृत्य है, हल्लीसक का चलन बाद में हुआ। डा. वासुदेव शरण अग्रवाल तो हल्लीसक को यूनानी 'इलीशियम' से आया बताते हैं। बाद में रास और हल्लीसक का समन्वय हुआ। एक परिभाषा के अनुसार 'रस' का बाहुल्य ही 'रास' है। शूरसेन जनपद का लोक नृत्य जिसमें गोप ग्वाल बाल और वादक भाग लेते थे 'रास' का पूर्व रुप था। रास नृत्य तो है ही पर इसमें 'कथा' का समावेश भी होता है। इस प्रकार रासलीला में रस नृत्य के साथ ही कृष्ण चरित्र का दर्शन होता है और भक्त दर्शक धन्यता का अनुभव करता है। डा. नार्मन हीन अपनी पुस्तक 'मिरिकैल पोज आफ मथुरा' में लिखते हैं कि– लेखन और ग्रंथ पढ़ने से पहले सुनने :श्रव्यः और देखने की परम्परा थी। मथुरा की स्थापना श्रीराम के भाई शत्रुघ्न ने की थी और बाद में शूर सेन प्रदेश में कृष्ण पूजा का प्रचलन हुआ। प्रथम शताब्दी के एक शिलालेख में मथुरा के अभिनेताओं के पुत्र का उल्लेख है। इस क्षेत्र में बृजभाषा का प्रचार हुआ और ब्रजवासी कृष्ण को कथा पुराणों से नहीं बल्कि अष्टछाप और अन्य ब्रजभाषा के कवियों की रचनाओं से सीखते हैं और बहुत सी कथाएं रासलीला से सीखते हैं। ब्रज में कृष्ण भक्ति प्रधान है, जात पॉत नहीं। यहां पुजारी, ब्राह्मण, साधु :बाबाः और गोसाई :गोस्वामीः होते हैं। यहां के सम्प्रदायों में श्री वैष्णव :रामानुजः, विष्णु गोस्वामी :माधवाचार्यः, निम्बार्क, वल्लभाचार्य सम्प्रदाय के पुष्टिमार्गी, गौणीय :चैतन्यः और राधावल्लभ :हित हरिवंशः हैं।

यहां के पारंपरिक नाट्य रुप में झांकी, कथक नृत्य, भक्त भाल नाटक मंडली, रामलीला और रासलीला हैं। झांकी में गीत, नृत्य, उपदेश के साथ श्रृंगार की झांकी होती है। कथक में भाव और मुद्रा द्वारा कथा कही जाती है। रासलीला के आरंभ में एक नृत्य होता है फिर कृष्ण की एक लीला खेली जाती है। रासलीला के कलाकार रासधारी कहलाते हैं। स्त्रियों की भूमिका भी लड़के ही करते हैं। रासलीला ब्रज की विशेषता है। कृष्ण लीला अन्यत्र भी होती है पर उसका रुप भिन्न होता है। रास ब्रज का एकाधिकार है और इसमें सौंदर्य बोध पर्याप्त होता है। आज ब्रज में शताधिक रास मंडलियां हैं और प्रतिदिन कहीं न कहीं रासलीला होती रहती है। इनमें राम स्वरुप जी की और गौड़ीय शैली की स्वामी हरगोविन्द जी की मंडली बहुत प्रसिद्ध है। रासलीला में कथक शैली में नृत्य, मनोरम झांकी, कथा अभिनय, गीत और साथ ही उपदेश रासलीला को लोकप्रिय बनाते हैं।

रासधारी बनने के लिए लड़के 8–10 वर्ष की उम्र में नृत्य संगीत सीखना आरंभ कर देते हैं। पहले वे गोपी बनते हैं, फिर राधा, कृष्ण और अंत में स्वामी :निदेशकः बन सकते हैं। इन कलाकारों को वेतन और छुट्टी भी मिलती है। रासलीला का मंचन जमीन से करीब एक मीटर ऊंचे, गोलाकार पक्के मंच पर होता है। इस पर 8–10 कलाकार मंडल बनाकर :गोलाकारः नृत्य कर सकते हैं। दूसरे प्रकार का मंच बरामदा,

मंदिर का आंगन या आयताकार मंच हो सकता है। इस आयताकार मंच पर एक ओर निदेशक गायक वादक विराजते हैं, बीच में भव्य सिंहासन और शानदार सजावट, रंग–बिरंगे परदे और पुष्प सज्जा मंच को मनोहारी बनाते हैं। कार्यक्रम का क्रम कुछ इस प्रकार का होता है– मंगलाचरण, आरती, गोपी प्रार्थना, राधा से नृत्य में भाग लेने की प्रार्थना, दसेक प्रकार के रास नृत्य, खुला और बंद मण्डल, कृष्ण की बाल चेष्टाएं, झूला नृत्य, युगल नृत्य, युगल नृत्य, ताली नृत्य, समूह नृत्य, प्रवचन और समापन वंदना। महारास में अनेक कृष्ण होते हैं।

रास की व्यापकता

रास भारत में सर्वत्र व्याप्त है। गुजरात में गरबा, डांडिया, असम में अंकिया नाट, भाओना। मणिपुर में रास के अनेक रुप दिखते हैं, इनका कला रुप अनूठा, कमनीय, मनोहारी तथा कलात्मक है। इनमें बसंत रास, कुजरास, महारास और नित्य रास होते हैं। मणिपुरी नृत्य का ताल विधान जटिल, वैविध्यपूर्ण और अनूठा है। इसका मंजीरा वादन इसे विशेषता प्रदान करता है और इसी प्रकार इनका श्रृंगार और वेश विन्यास भी अनोखा होता है। राजस्थान और उत्तरप्रदेश के नटवरी नृत्य रास के ही रुप हैं। जम्मू में फुंकनी, आंध्र में कोलाट्टम, बंगाल का बाउल संकीर्तन और चैतन्य लीला, नागा प्रदेश का खंबालिम रास के ही रुप हैं।

वर्तमान में रासलीला

गोलोक में प्रभु की शाश्वत लीला चलती रहती है और भूलोक में उसी की अवतरित और अनुकरण लीला चलती है। वर्तमान युग में चौदहवीं सदी में वैष्णव संतों का प्रादुर्भाव हुआ, भक्ति की धारा प्रवाहित हुई, जयदेव, चैतन्य, चंडीदास, विद्यापति और शंकर देव, कृष्ण की लीला का गायन करके देश के वातावरण को पवित्र बनाने लगे। पुष्टि मार्ग के संस्थापक परम वैष्णव जगतगुरु श्री वल्लभाचार्य ने भारत के काव्य गगन को 'सूर' दिया, रासलीला प्रदान की। इसी रासलीला के प्रभाव में काशी के गोस्वामी तुलसीदास ने रामलीला प्रारंभ की। रासधारियों के कथानुसार महाप्रभु वल्लभाचार्य ने घमंड देव जी को रासलीला करने का आदेश दिया और उदयकरण और खेमकरण नामक कलाकारों के सहयोग से पहली रासलीला का मंचन हुआ। बाद में नारायण भट्ट के सहयोग से रास मंडल बने। भट्ट जी के सहयोगी थे– रामराय और कल्याण राय। माया दास ने भक्तभाल में वल्लभ नामक नर्तक की प्रशंसा की और इसी वल्लभ ने रास का नृत्य विधान किया। इस प्रकार विगत 400 वर्षों से अनवरत रासलीला चल रही है। इसका प्रमाण सिखों के ग्रंथ साहब, अबुल फजल के 'कार्तनियां' में, नारद पांच रात्र के 'कृष्ण संगीत' में देखे जा सकते हैं। अष्टछाप के कवियों ने रासलीला को समृद्ध बनाया। इनमें भी सूरदास, कृष्णदास, नंददास के पदों में कृष्ण की वंशी का गान मुखर है, हरिदास जी महाराज और हित हरिवंश के पदों में लीला का स्वरुप निखरा है। वर्तमान रासधारियों की अनेक मंडलियां सक्रिय हैं और इनमें लाडलीशरण जी और मेघश्याम स्वामी के परिवार प्रमुख हैं। वृंदावन के श्री रामस्वरुप जी इन्हीं मेघश्याम स्वामी के यशस्वी पुत्र हैं। रासलीला में प्रसाद, माधुर्य, गीतकाव्य, राग विधान, गेयला, कोमल कांत पदावली, दर्शन काव्य और संगीत की त्रिवेणी प्रवाहित होती है। इसमें संयोग वियोग श्रृंगार का समन्वय होता है और रस राजत्व को प्राप्त करता है। नित्य लीला निर्गुण ब्रह्म की उपासना है। अवतरित लीला सगुण ब्रह्म की उपासना है और भक्तों द्वारा अभिनीत कृष्ण या राम की लीला अनुकरणात्मक लीला है। वियोग सहने की शक्ति अनुकरण लीला ही प्रदान कर सकती है।

आध्यात्मिक दृष्टि

हमारा मस्तक भाग ही तंत्र में सहस्त्रार–सहस्त्रदल कम लवन या वृंदावन कहलाता है और कहते हैं यहीं कालिंदी तट पर परात्पर ब्रह्म श्रीकृष्ण चंद वंशीवादन करते हैं। राधा कुंडलिनी शक्ति है और गोपियां हमारी मनोवृत्तियां हैं। जब वेणुनाथ सुनाई पड़ता है तो मूलाधार से राधा सहस्त्रार की ओर गमन करती हैं जहां राधा–माधव का योग–संयोग होता है और तब योगी के अंतःकरण में निरंतर नित्य रासलीला होती रहती है। आनंद लोक में अथोर रस वर्षा में योगी भींलता रहता है। आज भी लगता है बृज में कृष्ण का वंशीरव सुनकर मन मयूर गोपी बनकर नाचने लगते हैं। आस्थावान भक्तों का अनुभव है कि आज भी निधि वन में कन्हैया रास रचाते हैं। गुजरात के संत कवि नरसी भगत ने गोलोक में रासलीला के दर्शन किये थे और कहा था ''रामबाण वाग्यां होय ते जाणे।'' हमारे आपके भी बड़े भाग हों और सांवरियां की कृपा दृष्टि हो जाय तो हम भी दिव्य रासलीला के दर्शन कर सकते हैं और उसमें सदा सर्वदा के लिए रम सकते हैं। परमानंद माधव से याचना कीजिए कि कृपा करें, हम भी तो पार्थ हैं। आज भी यह संभव है क्योंकि कृष्ण का आश्वासन है–संभवामि युगे युगे।

–म.प्र. शासन जनसंपर्क विभाग के प्रकाशन श्रीरामलीला एक अध्ययन से साभार

रघुवंशी समाज के प्रतिभावान छात्र-छात्राएं सम्मानित

इंदौर /रणवीर सिंह रघुवंशी/ रघुवंशी समाज इंदौर के तत्वावधान में मरी माता चौराहा स्थित रघुवंशी समाज भवन में आयोजित एक गरिमापूर्ण आयोजन में समाज के प्रतिभावान छात्र–छात्राओं का सम्मान कर उन्हें स्मृति चिन्ह प्रदान किए गए। कक्षा 10वीं एवं 12वीं में सर्वोच्च अंक लाने वाले बालक–बालिकाओं को 5100/– की छात्रवृत्ति भी प्रदान की गयी। स्व. फूलसिंह रघुवंशी की स्मृति में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती लीला रघुवंशी द्वारा समस्त सम्मानित होने वाले प्रतिभावान 91 छात्र–छात्राओं को डाक्यूमेंट फाइल का भी वितरण किया गया। इस अवसर पर कस्टम आफीसर कु. निधि रघुवंशी, फिंगर प्रिंट एक्सपर्ट रुचि रघुवंशी, कु. तमन्ना रघुवंशी एमबीबीएस, एवं श्रीमती उर्मिला रघुवंशी पीएचडी का भी समाज द्वारा सम्मान किया गया। इस अवसर पर उप पुलिस अधीक्षक द्वय विक्रम सिंह रघुवंशी एवं हरि सिंह रघुवंशी तथा रघुवंशी पारमार्थिक ट्रस्ट इंदौर के अध्यक्ष शंभू सिंह रघुवंशी, नगर भाजपा उपाध्यक्ष अजीत रघुवंशी, मुख्य अतिथि के रुप में उपस्थित थे। इस अवसर पर उपस्थित वरिष्ठ समाजजनों में प्रताप सिंह रघुवंशी, कमल सिंह रघुवंशी, गोवर्धन सिंह रघुवंशी आदि उपस्थित थे। अतिथियों का स्वागत जय सिंह रघुवंशी, कमलेश रघुवंशी, नवल रघुवंशी, संजय रघुवंशी, रणवीर रघुवंशी, नवीन रघुवंशी, मोहन रघुवंशी, विक्की रघुवंशी आदि ने किया। कार्यक्रम का संचालन रमण रघुवंशी ने किया। अतिथि कलाकार कमलेश विश्वकर्मा ने सुमधुर गीतों की प्रस्तुति दी। आभार प्रदर्शन जय सिंह रघुवंशी ने किया।

रघुकुल सेवा ट्रस्ट द्वारा 289 मेधावियों का सम्मान

गंजबासोदा। रघुकुल सेवा ट्रस्ट द्वारा मानस भवन में 289 मेधावी छात्र–छात्राओं को सम्मानित किया गया। सम्मान स्वरुप विद्यार्थियों को शील्ड व प्रमाणपत्र बांटे गये ।इन विद्यार्थियों ने कक्षा दसवीं और बारहवीं की परीक्षाओं में 85 प्रतिशत से अधिक अंक अर्जित किए थे। समाजसेवी कीर्ति भाई शाह ने प्रथम और द्वितीय आने वाले विद्यार्थियों को क्रमशः पांच हजार और ढाई हजार की राशि प्रदान की। वहीं महंत शीतलनाथ महाराज ने 500 रुपये नकद दिए। इस अवसर पर ट्रस्ट के संरक्षण पृथ्वीसिंह रघुवंशी, मुरारी रघुवंशी, सुरेंद्र सिंह रघुवंशी, अध्यक्ष नीरज रघुवंशी, प्रदीप राज रघुवंशी, रवीन्द्र सिंह, राजेंद्र सिंह, नरेन्द्र सिंह, राजा, शुभम सहित बड़ी संख्या में ट्रस्ट पदाधिकारी एवं पालकगण उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन सामाजिक पत्रिका रघुकलश के ग्वालियर–चम्बल ब्यूरो प्रमुख ओमवीर सिंह रघुवंशी एवं आभार प्रदर्शन सचिन रघुवंशी ने किया। सभी अतिथियों ने विद्यार्थियों से शिक्षा के अन्य क्षेत्रों में भी उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए नगर, जिला व प्रदेश का नाम रोशन करने की बात पर जोर दिया।

कुमारी साक्षी व सौम्या का सुयश

उदयपुरा। रघुकलश पत्रिका के जिला संवाददाता एडवोकेट सुरेंद्र सिंह रघुवंशी व उनकी धर्मपत्नी श्रीमती उर्मिला रघुवंशी की पुत्री कु. साक्षी ने आठवीं की परीक्षा में 1050 में से 906 अंक प्राप्त किए हैं। श्री रघुवंशी की दूसरी पुत्र कु. सौम्या रघुवंशी ने भी छठवीं कक्षा में 1050 अंकों में से 900 अंक प्राप्त कर प्रावीण्य सूची में स्थान प्राप्त किया। उदयपुरा के न्यू सर्वोदय हायर सेकेंडरी स्कूल व एमडीवीएम स्कूल उदयपुरा की टाप टेन की सूची में स्थान प्राप्त कर दोनों बालिकाओं ने संस्था का नाम रोशन किया है। अखिल भारतीय रघुवंशी :क्षत्रियः महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष हजारीलाल रघुवंशी, कार्यकारी अध्यक्ष पी.एस. रघु, मध्यप्रदेश सरकार के पूर्व मंत्री द्वय चौधरी चन्द्रभान सिंह तथा ठाकुर जसवंत सिंह, समाज के राष्ट्रीय महासचिव उमाशंकर रघुवंशी, अजय सिंह रघुवंशी, वीरसिंह रघुवंशी, परसराम डंडीर, हरिशंकर सिंह रघुवंशी, बलवंत सिंह रघुवंशी तथा अभारक्षम के कोषाध्यक्ष शिववरण सिंह रघुवंशी आदि ने बालिकाओं को बधाई एवं शुभकामनाएं दीं।

शिक्षा और राजनीति में अहम् मुकाम बनाने विचार-विमर्श

रघुवंशी समाज की प्रदेश स्तरीय बैठक

सिलवानी। समाज को एकता के सूत्र में बांधकर व्याप्त कुरीतियों को मिटाये बिना समाज सुधार की बात करना बेमानी होगी। सभी को संकल्प लेना होगा कि वह मतभेदों को तिलांजलि देकर समाज सुधार के कार्य में लीन होकर पथ से पृथक हो रहे युवाओं को नेक राह पर लाने का पूर्ण प्रयास करेंगे।

अखिल भारतीय रघुवंशी (क्षत्रिय) महासभा के राष्ट्रीय महासचिव उमाशंकर रघुवंशी ने उक्त उदगार रघुवंशी समाज की प्रदेश स्तरीय बैठक में प्रकट किए। श्री रघुवंशी ने कहा कि सामाजिक एकता भाईचारे की भावना और आपसी सदभाव बढाने के लिए हम सब को एकजुट होना होगा तभी हमारी समाज विकास के पथ पर आगे बढ़ सकेगी।

अखिल भारतीय (क्षत्रिय) रघुवंशी महासभा की प्रदेश स्तरीय बैठक का आयोजन तहसील के मुआर गांव में रघुवंशी भवन में किया गया था। बैठक में प्रदेश पदाधिकारी बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता उमाशंकर रघुवंशी ने की जबकि संचालन नरेश रघुवंशी ने किया। तहसील शाखा सिलवानी के अध्यक्ष महेश पटेल ने आभार व्यक्त किया।

बैठक को संगठन के प्रदेश अध्यक्ष अजय सिंह रघुवंशी प्रताप सिंह रघुवंशी, हरिशंकर रघुवंशी, शिववरण पटेल भोपाल, शक्तिसिंह रघुवंशी, नारायण सिंह, राजेंद्र रघुवंशी, मदनसिंह रघुवंशी, अजय पटेल, बलवंत सिंह, डा. संतोष रघुवंशी, संगठन की तहसील शाखा अध्यक्ष महेश पटेल आदि प्रदेश, जिला तथा तहसील पदाधिकारियों ने संबोधित किया। वक्ताओं ने कहा कि समाज को एकता के सूत्र में पिरोया जाना आवश्यक है। एकता के बिना सफल समाज की कामना नहीं की जा सकती है। इसके अतिरिक्त बेरोजगार युवाओं को रोजगार स्थापित किए जाने, आरक्षण पर विचार करने, राजनीति में समाज का अहम् मुकाम स्थापित किए जाने, मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम के आदर्शों को आत्मसात किये जाने, समाज हित को सर्वोपरि मानने आदि विषयों पर भी प्रकाश डालते हुए मंथन किया गया। इस सबके अतिरिक्तम युवाओं को नशा से दूर रहने, शिक्षा के क्षेत्र में विशेष भूमिका होने के साथ ही बेहतर शिक्षा अध्ययन करने आदि पर भी पदाधिकारियों के द्वारा चिंतन किया गया। बैठक में आये हुए पदाधिकारियों फूलमालाओं से स्वागत किया गया। इस अवसर पर समाज की स्मारिका का विमोचन भी किया गया। इस स्मारिका में पदाधिकारियों के नाम और समाज की अन्य जानकारी आदि का भी समावेश किया गया है।

''वर्णानामर्थ संधानां रसानां छन्दसामापि मंगलानां च कर्तारौ वन्दे वाणी विनायको।''

चौधरी इन्दर सिंह

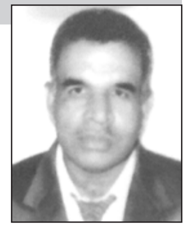

भारतीय वर्ष विक्रम संवत् के अंतर्गत वर्ष भर में छः ऋतुएं–ग्रीष्म, वर्षा, शिशिर, शीत, हेमंत व बसंत, दो–दो माह की अवधि की होती हैं। प्रत्येक ऋतु का अपना–अपना रुप होता है। सामान्यतः अन्य ऋतुओं में मौसम और प्रकृति के स्वाद व दृश्य में वह सुंदरता नहीं मिलती जो सिर्फ एक बसंत ऋतु में होती है। साधारणतः बसंत ऋतु संवत के 12 महीनों में फाल्गुन व चैत्र मास की अवधि में आती है। हम सभी वर्ष संवत 2073 के वसंत ऋतुराज के आनंद का लाभ हर्षोल्लास के साथ ले रहे हैं। व्यक्ति की प्रकृति होती है जिससे उसे कुछ प्राप्त होता है, तुलनात्मक दृष्टि से समय व आवश्यकतानुसार उसके साथ हो जाता है। इस सब में मनुष्य को बुद्धि, विद्या, ज्ञान की आवश्यकता होती है और इन सबकी पूर्ति, भगवती 'सरस्वती' के द्वारा ही प्राप्त होती है। माता सरस्वती का जन्म बसंत ऋतु के आगमन के प्रारंभिक दिवसों में पंचमी को मनाया जाता है।

इस तरह बसंत पंचमी–बसंत के मुख्य पर्वों में से एक साक्षरता, विद्या और विनय का पर्व है। कला, विविध गुण, विद्या को साधना और बढ़ाने, उन्हें प्रोत्साहित करने का पर्व है। बसंत पंचमी मनुष्यों में सांसारिक व्यक्तिगत जीवन का सौष्ठव, सौन्दर्य, मधुरता, उसकी सुव्यवस्था ये सब विद्या शिक्षा तथा गुणों के ऊपर ही निर्भर करते हैं। बसंत ऋतु की पंचमी –माता सरस्वती का जन्म दिन है अतः उनके अनुग्रह के लिए कृतज्ञता भरा अभिनंदन करें– उनकी अनुकम्पा का वरदान प्राप्त होने पर पावन पर्व को हर्षोल्लास से मनाना उचित है, जैसे कि राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने साकेत में दर्शाया है–

''अयि दयामयि देवि सुखदे, सारदे, इधर भी निज वरद पाणि पसार दे, दास की यह देह– तन्त्री सारदे, रोम तारों में नई झंकार दे
बैठ आ मानस भराल सनाथ हो, भारवाही कंठ के साथ हो, चल अयोध्या के लिए सजसाजतू– मॉ मुझे कृत कृत्य कर दे आज तू''

दिव्य शक्तियों की मानवी आकृति में चित्रित करके ही उनके प्रति भावनाओं की अभिव्यक्ति संभव है। भावों का व्यक्तिकरण मनुष्य की स्वयं की आवश्यकता है। अंतःकरण की मानस चेतना जगाने के लिए दिवस तत्वों को भी मानवीय आकृति में संवेदनायुक्त मनःस्थिति में मानना और प्रतिष्ठापित करना पड़ता है। चेतना विज्ञान को ध्यान में रखते हुए भारत के तत्ववेत्ताओं ने प्रत्येक दिव्य शक्तियों को मानुषी आकृति और भाव गरिमा में संजोया है। इनकी पूजा अर्चना वन्दना करना हमारी अपनी चेतना को उसी प्रतिष्ठापित देव गरिमा के समतुल्य उठा देती है।

भगवती सरस्वती की मूर्ति के आगे पूजा अर्चना करने का अर्थ ही है शिक्षा, कला, विद्या व अन्य गुणों के महत्व को स्वीकार किया जाये तथा अपने मस्तिष्क में उनके लिए स्थान बनाया जाये, शिरोधार्य किया जाये, अपनी ज्ञान सीमा को बढ़ाने का प्रयत्न किया जाये। वास्तव में संग्रह करने और बढ़ाने योग्य सम्पदा धन नहीं, ज्ञान है, विद्या का अधिक संग्रह सम्पादन किया जाना चाहिये क्योंकि–

''नास्ति क्षमासमं सारं नास्ति कीर्ति समं धनम। नास्ति ज्ञान समो लाभो, नास्ति रामायणात परम।।''

मॉ सरस्वती के पूजन वंदन के साथ–साथ इस स्तर की प्रेरणा ग्रहण करने और उस दिशा में कुछ कदम उठाने का साहस करना चाहिए। अध्ययन हमारे जीवन का अंग बन जाये, ज्ञान की गरिमा को हम समझें, उसके लिए मन में तीव्र उत्कंठा जाग उठे तो समझना चाहिये कि सरस्वती पूजन की प्रक्रिया ने अंतःकरण तक प्रवेश पा लिया है। अशिक्षितों को शिक्षित बनाया जाये, संतानों को पाठशाला में भेजने की जिम्मेदारी अभिभावक पर हो, शासन तथा जनता से सहयोग की अर्ज की जाये, चालू पाठशालाओं का विस्तार, पुस्तकों का दान, तकनीकी शिक्षा की महंगी पुस्तकों की विषय सामग्री, प्रचार–प्रसार के साधनों के द्वारा प्राप्त कराना बसंत उत्सव पर मॉ सरस्वती के हाथ में वीणा, उनका वाहन हंस अर्थात मित व मधुरभाषी मॉ के अनुग्रह को प्राप्त करने के लिए उनके वाहन हंस के समान मीठा नम्र विनीत सज्जन, शिष्ट और आत्मीयता प्राप्त होना चाहिये।

सरस्वती के अवतरण पर्व पर प्रकृति खिलाखिलाकर प्रसन्न होती है, हंसी और मुस्कान के फूल खिल पड़ते हैं, उल्लास, उत्साह और प्रकृति के अभिनव सृजन के प्रतीक नवीन पल्लव व किसलय, प्रत्येक वृक्ष पर परिलक्षित होते हैं। सुभद्रा कुमारी चौहान ने लिखा है –

फूली सरसों ने दिया रंग, मधु लेकर आ पहुंचा अनंग, वधु–वसुधा पुलकित अंग अंग, है वीर वेश में किन्तु कंत

वीरों का कैसा हो बसंत?

इसी प्रकार मनुष्य में भी जन ज्ञान की शिक्षा का प्रवेश होता है–सरस्वती का अनुग्रह अवतरित होता है तो स्वभाव में, दृष्टिकोण में, क्रियाकलाप में बसंत ही दिखाई देता है। फूलों की तरह अपने दांत हमेशा खिलते रहें, मुस्कान चेहरे पर हमेशा अठखेलियां करती रहे, चित्त हल्का आशा और उत्साह से भरे रहना, उमंगे उठने देना व्यक्ति को फूल जैसा निर्मल निर्दोष आकर्षक एवं सुगंधित बनाना ऐसी प्रेरणा बसंत ऋतु के आगमन पर पेड़–पौधों पर नवीन पल्लव, पुष्पों को देखकर प्राप्त की जा सकती है। कोयल की तरह मस्ती में कुहकुहाना, भौरों की तरह गुंजन, गुनगुनाना यही जीवन की कला है। मॉ सरस्वती के हाथों में वाद्य यंत्र–वीणा शोभायमान होती है, वाद्य संगीत मनुष्य की उड़ान, भावनाओं और उसकी हृदय तरंगों को व्यक्त करने के सहयोगी साधन हैं। स्थूल और जड़–पदार्थ भी चेतनायुक्त तरंगों से स्वर लहरियों के संयोग से सूक्ष्म रुप में एक विशेष प्रकार की चेतना से युक्त हो जाते हैं। मानव हृदय की तरंगों को प्रभावित करते हैं, उत्तेजना भरते हैं। हंस मधुरता, सौंदर्य तथा प्रसन्नता का सर्वोत्कृष्ट प्रतीक प्राणी है। मनुष्य हंस की तरह अपनी वाणी, व्यवहार तथा जीवन को मधुरतायुक्त आनंददायी बनाये। पुष्प प्रसन्नता, उल्लास और नवजीवन के खिलखिलाते रुप के मूर्त प्रतीक होते हैं। प्रकृति की गोद में पुष्पों की महक उनका खिलना मनुष्य के लिए उल्लास–प्रफुल्लता का जीवन बिताने के लिए मूक संदेश है। इसी संदेश को हृदयांगम करने जीवन में उतारने के लिए पुष्प पूजनीय–स्वीकार्य हैं। पुष्परुप में खेतों में लगी, खिली सरसों मनमोहक होती है। पलाश के फूल नयनाभिराम होते हैं। फलराज आम–रसाल–बसंत ऋतु का ही दान है। सरसों का रंग, आम के बौर का रंग, पलाश के फूलों का रंग, नये पत्तों का रंग, पीला, लाल आदि का मिश्रण है। बसंत का पर्यावरण प्रकृति का नई फसलों के रुप में अनुदान है। बसंत के मौसम में ताजगी होती है मनुष्य को गतिशील करता है बसंत।

सम्पूर्ण जगत की आद्याशक्ति परमेश्वरी की अभिव्यक्ति तीन रुपों में होती है–महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती। इनकी मूल प्रकृति महालक्ष्मी ही हैं, वे ही विशुद्ध सत्वगुण के अंश से महासरस्वती के रुप में प्रकट होती हैं, इनका चन्द्रमा के समान गौर वर्ण है। इनके हाथों में वीणा के साथ–साथ अक्षमाला, अंकुश तथा पुस्तक शोभा पाती है। महाविद्या, महावाणी, भारती, वाक, सरस्वती, आर्या ब्राह्मी, कामधेनु, वेदगर्भा और धीश्वरी –बुद्धि की स्वामिनी– ये इनके नाम हैं। ये वाणी और विद्या की अधिष्ठात्री देवी मानी जाती हैं। इनकी उपासना से सब प्रकार की सिद्धियां प्राप्त होती हैं। ये संगीत शास्त्र की भी अधिष्ठात्री देवी हैं। ताल, स्वर, लय, राग–रागिनी आदि का प्रादुर्भाव भी इन्हीं से हुआ है। सात प्रकार के स्वरों द्वारा इनका स्मरण किया जाता है। इसलिए ये स्वरात्मिका कहलाती हैं। सप्तविध स्वरों का ज्ञान प्रदान करने के कारण इनका नाम सरस्वती है। एक समय की बात है ब्रह्माजी ने सरस्वती से कहा ''तुम किसी योग्य पुरुष के मुख में कवित्वशक्ति होकर निवास करो।'' ब्रह्माजी की आज्ञा मानकर सरस्वती योग्य पात्र की खोज में बाहर निकलीं। उन्होंने ऊपर के सत्यादि लोकों में भ्रमण करके देवताओं में पता लगाया तथा नीचे के सातों पातालों में घूमकर वहां के निवासियों में खोज की, परन्तु सुयोग्य पात्र नहीं मिला। इस अनुसंधान में भ्रमण करते एक सतयुग बीत गया। तदन्तर त्रेतायुग के आरंभ में सरस्वती देवी भारतवर्ष में भ्रमण करने लगीं, यहां पर उन्हें तमसा नदी के किनारे महर्षि वाल्मीकि से क्रोंजी पक्षी के लिए श्लोक सुना। यह श्लोक सरस्वती की ही कृपा का प्रसाद था। उन्होंने महर्षि को देखते ही उनकी असाधारण योग्यता और प्रतिभा का परिचय पा लिया था, अतः उन्हीं के मुख में उन्होंने सर्वप्रथम प्रवेश किया। कवित्वशक्ति मयी सरस्वती की प्रेरणा से ही उनके मुख की वह वाणी जो उन्होंने क्रोंजी पक्षी की सांत्वना के लिए कही थी। सरस्वती देवी अनेक प्रकार की लीलाओं से जगत का कल्याण करती हैं। बुद्धि, ज्ञान और विद्यारुप से सारा जगत इनकी कृपा–लीला का अनुभव करता है। इसलिए हम संकल्प करें–

नामाहं बसंतपर्वणि नवसृजन–ईश्वरीय योजनां अनुसरन, आत्मनिर्माण–परिवार निर्माण–समाज निर्माणादि सु त्रिविधि साधनासु नियम निष्ठापूर्वकं सहयोग प्रादानाय संकल्पं अहं करिष्ये।

–नागपुर–मो.09372586757

विवाह योग्य युवक-युवती

Name- **Ruchi Raghuvanshi,** DOB- 02 Jan. 1990, Hight- 5 Feet 3 Inch, Colur- Fair, Qualification- BE (Elex and Comm), Job Profile- Working as Finger Print Expert in MP Police as Sub Inspector Rank at Indore, Family Details- Mr Ghanshyam Singh Raghuvanshi, Working In State Bank Of India, Mother- Mrs. Urmila Raghuvanshi- House Wife, Elder Sisters- Mrs Shradha Nitin Raghuvanshi Khragone, Mrs. Shweta Satish Raghuvanshi Indore, Younger Sister- Monica Raghuvanshi Working At Trifid Research Pvt. As Business Analyst, Younger Brother- Devashish Raghuvanshi Studying, Gotra- Self- Pachlaiya, Gotra mama- Jhara, Adress- 10 Bank Colony, ANNpurna Mandir Road Indora.
Contact- 9630728105, 7999747336, 9981810378.

नाम–**महेन्द्र सिंह रघुवंशी**, शैक्षणिक योग्यता–बीए, आयु– 30 वर्ष, प्रायवेट फर्म में सेवारत, पिता–देवेंद्र सिंह रघुवंशी, जन्मस्थान– भोपाल, जन्मतिथि–01 नवम्बर 1985, समय–प्रातः सुबह 4 बजे, गोत्र–हड़ा, मामा का गोत्र–बिलधहिया, प्रतिष्ठान–लक्ष्मीनारायण मार्केट, 8 हमीदिया रोड, भोपाल।

Name- **Neha Raghuwanshi,** DOB-19 Feb. 1992, Height- 5 Ft 4 Inch, Complexion- Fair, Qualification- Masters Of Pharmacy (Mumbai University)Bachelor Of Pharmacy(Mumbai University), Fathers Name- Om Prakash Raghuwanshi, Occupation- Service, Mothers Name- Urmila Raghuwanshi (House Wife), Gotra- Mathneria, Permanent Adress- Mumbai, (Maharashtra)
Contect- Nos. 09420055893, 08237902851, 08237902850.

Name: Shobhanjali Raghuwanshi, Dob: ***28.11.1989***, Height: 5'4". **Qualification-** M.B.A (HR) from NITTTR in 2014, PG Diploma in Environment Management from EPCO in 2017, Bhopal. Presently appointed as Guest faculty in Institute of Co-operative Management (under NCCT), Bhopal. Grandfather:Lt.Sh.Madhav Sharanji Patel, Father- Narendra Singh R (Navneet), Agriculture & Advocate, Mother- Bindu Raghuwanshi, Gotra-Bildhaiya, Elder Sister- Brishbhanlali R, Asst. Professor in SPA, Bhopal , Brother-in-law - Arvind Singh R, Asst. Commandant in CRPF, Younger Sister- Ratna R, Student CS Professional. Permanent Address: Village Kuchwara, Teh. Udaipura, Distt- Raisen, M.P, Present Address: Rachna Nagar, Bhopal, M.P, **Mobile- 09993185949 (Father)**, email id- brishbhan2007@gmail.com

Name : Reema Raghuvanshi, DOB : 13/07/1989, Birth place : Indore, Birth time : 10.45pm, Gautra : karkunda,nagdaiya (mama), Qualification : MCA, Job : currently working in soft ware company in Mumbai, Package : 550000per anum, Father's name : Mr. Shiv Singh Raghuvanshi currently working in private company, Mother's name : Mrs kiran Raghuvanshi working in govt job, Brother's name : Mr Rupesh Raghuvanshi working in private company (married), Sister's name : Neha Raghuvanshi currently working in private company (non-married), Permanent address : 14/3vijay nagar Indore, Contact no. : 9039088993

विवाह योग्य युवक-युवती

Name : Pushpanjali Raghuwanshi, Dob: ***13.08.1987***, Height: 5'3". **Qualification**- M.B.A (Finance) in 2011 from, SIRT-Bhopal. Grandfather: Lt.Sh.Madhav Sharanji Patel, Father-Brijendra Singh Raghuwanshi Agriculture, Mother- Kanchan Raghuwanshi, Gotra-Bildhaiya, Elder Sister – Dr. Geetanjali Raghuwanshi, Dentist, Brother-In-Law – Dr. Satendra Singh R, Major in Indian Army (Radiologist) Younger Brother – Koshlendra Raghuwanshi, Managing Director, Daffodils Public School, Bareli, Dist. Raisen (M.P.), Younger Sister – Nidhi Raghuwanshi, Student, Permanent Address: Village Kuchwara, Teh. Udaipura, Distt- Raisen, M.P, Present Address: 6/22, Nahar Colony, Bareli, Pin – 464668 M.P.

Contact details : 09993044401 (Father), 09424434269 (Brother)

email id- raghuwanshi.swami@gmail.com

Name - **Neha Raghuvanshi**, Dob - 23 / 07 / 1991, Time - 11.30pm , Place - barnagar ujjain, Height - 5'5", Qualification - BCA, MBA, Working in a SEBI registered firm at indore, Family details - Father's Name - Mr. Shiv singh Raghuvanshi working in private firm, Mother's Name - Mrs. Kiran Raghuvanshi working in govt job, Elder brother - Mr Rupesh Raghuvanshi (married) working in private firm, Elder sister - Reema Raghuvanshi working in IT company at mumbai as a software engineer, Address - 14/3 vijay nagar indore m.p., Gotra - nagdaiya / mama gotra - karkunda, Contact no.- 9039088993, 9977759781

SACHIN RAGHUWANSHI Date of Birth : 13th July'90 Qualification - Graduation, Height : 167.64 Cm Complexion : Wheatish Gotra : Dingad Occupation : Working with IBM India Pvt Ltd. as Advisory Systems Analyst, Bangalore India. Address : Qtr. No. C – 3, WCL Officer's Colony, near WCL Guest House, At & Post Saoner, Nagpur - 441107 Family : Father – Narayan Singh Verma (Raghuwanshi) (Superintending Engineer, Coal India Limited – Nagpur) Mother – Seema Raghuwanshi, Sister – Sonika Raghuwanshi,

Contact no.- 09270123521,0 9421746136

Name: **Vikram Singh Raghuwanshi**, DOB: 13 Jan 1983, Place of Birth: Bordhi, Rehti, Gotra: Kaand, Education: MSc (Physics), DAVV, Indore, Occupation: Research (Temporary), Height: 156 cm, Father: Parwat Singh Raghuwanshi (Retired; MPEB), Mother: KusumRaghuwanshi (House wife), Contact: sai4umail@gmail.com

Name - **Raj Singh Thakur**. DOB - 12/07/1990. TOB - 3:15 MORNING. POB - INDORE. Height - 5 feet 10 inch. Gotra - kand and khadia. Qualification - M.com 1st class from Indore D.A.V.V.university. Diploma in home loan advising from Indian institute of banking and finance Mumbai. Occupation - Credit manager in aadhar housing finance subsidiary of Dewan housing finance Group. Father - Er Mahendra Singh thakur Retired General manager in multinational company endress+ hauser . Consultant for industrial automation . Mother - Housewife. Elder brother and sister married and well placed.

Contact details : (M) 9827317216 (L) 0731-2422359

Email-msthakur.indore@gmail.com

विवाह योग्य युवक-युवती

Name: **ShailendraRaghuwanshi**, DOB: 27 June 1986, Place of Birth: Chatarkheda, SeoniMalwa, Gotra: Cheratiya, Education: MBA, Pune, Occupation: Business (Mumbai), Height: 5" 4, Father: PremnarayanRaghuwanshi (Retired Teacher), Mother: PrabhaRaghuwanshi (House wife), Contact: 09702209635

Name- **Amrita Raghuwanshi**, Age- 25 Years, Complexion- Fair, DOB-21-7-1992 Hight-5 Ft. 5 Inch, Educational Qualification- Perusing- B.C.A. From Shri Satya Sai Womens College Bhopal, Currently MBA From JSPM College Pune (MH), Job- CTS Pune, Father Name- Mr. Balwant Raghuwanshi Farmer, Mother Name- Mrs Urmila Raghuwanshi Huose Wife, Brother Name- Om Raghuwanshi, Address- D-34, Deepak Nagar, Near- Vrandavan Dhaba, Hoshangabad Road, Bhopal and D-55, Rajat Vihar, Near Danish Nagar, Hoshangabad Road, Bhopal.
Mob-09893731457, 09752570104

Name: **Priyanka Raghuwanshi**, Dob: 11.04.1988, Height: 5 feet. Qualification- M.Sc. (Biotech.) in 2010 from NSCB College Sarni, Dist-Betul, B.Ed in 2012. Grandfather:Lt. Shri Ballu Singh Raghuwanshi, Father- Mr. Santoo Singh Raghuwanshi, Retired from W.C.L. Sarni, Mother- Chhaya Raghuwanshi, Gotra- Chharatiya, No. of Siblings- Three sister and One brother, Elder Sister- Mrs. Yogita Raghuwanshi, Govt. teacher in Chhindwara, Brother-in-law - Mr. Lakhan Singh, Business and Farming, Elder Sister- Mrs. Sangeeta Raghuwanshi, Brother-in-law - Mr. Anil Raghuwanshi, Business (Computers) in Chhindwara, Elder sister - Mrs. Manju Raghuwanshi, Brother-in-law - Mr. Raju singh Thakur, Civil contractor in Korba (C.G.), Brother – Mr. Mahendra Singh Raghuwanshi, Business(Civil Contractor) and Managing Director of Corolla Institute of Higher Education (Maharishi Mahesh Yogi Vedic University (M.P.),Permanent Add: Gadekar Compound, Bhagat singh ward, Multai, Dist-Betul (M.P), Contact details: **Mob. Anil Raghuwanshi (9425871559), 8989275282**
email id- priya.raghuwanshi1988@gmail.com

धर्म और विज्ञान

डॉ. एच.सी.नवल, इंग्लैंड

धर्म सदियों पुराना मानवता का बनाया हुआ एक जटिल आस्था और विश्वास का सिद्धान्त है। वेद शास्त्रों के नियमों पर आधारित मानव जीवन के सुख शांति का एकमात्र अपूर्व स्त्रोत है। विज्ञान भी मानव उत्कंठा का उल्लेख करने वाली शक्ति का भंडार है। तथ्यों और प्रयोगों पर निर्भर और मनुष्य की कभी न समाप्त होने वाली जिज्ञासा की सांत्वना पूर्ति का सार्थक अनुशासन है।

दोनों ही मानव हित और उपकार के लिए सिद्ध हुए हैं। धर्म मनुष्य की आत्मिक शक्ति, सुख–शांति और सरल जीवन को बढ़ावा देता है जबकि विज्ञान भौतिक आकांक्षाओं को पूरा करने का विशेष साधन है। धर्म मनुष्य की आस्था और विश्वास जीवन की समस्या, कठिनाइयों तथा शारीरिक और मानसिक दुखों के निवारण में विशेष सहायक होता है जबकि विज्ञान प्रकृति में छिपे हुए रहस्यों को साक्षात करके मानव जीवन को सरल बनाने में सहायक सामग्री उपलब्ध करता है।

धार्मिकता निश्चित ही मानवता का अद्वितीय एवं अपूर्व अंग है। उदारता, दयालुता, सत्यवादी, स्पष्टवादी, निष्कपटता, सहायक व्यवहार तथा आचरण हम धर्म से ही सीखते हैं। धर्म में भगवान का निवास होता है। धर्म–रहित मनुष्य एक भ्रमित अपंग व्यक्ति की तरह अपने आप से पूछता है कि मैं इस पृथ्वी पर क्यों हूं, क्या हूं और किसलिए हूं, उसे इसका उत्तर कभी नहीं मिल पाता। धर्म को मानना और अपनाना केवल मानव रक्षा ही नहीं बल्कि सारे संसार के पशु–पक्षी, जीव–जन्तु, वनस्पति की रक्षा का आग्रह है। सारी पृथ्वी की रक्षा का संकल्प ही मानवता की सार्थकता का उद्देश्य है।

विज्ञान भी मानव एवं सारे भूतल की रक्षा में विशेष योग दे सकने में समर्थ हो सकता है यदि सही रुप में प्रयोग किया जाए तब। जैसे अनगिनत बढ़ती हुई जनसंख्या का बोझ कम करने के नये आविष्कारों द्वारा और भी सरल साधन जुटा कर– यह एक बहुत बड़ा आवश्यक प्रयत्न होगा– मानवता की रक्षा के लिए। भूतल पर बढ़ता हुआ तापमान (Global Warming) भी आजकल एक भयानक खतरा मानवता के ऊपर मंडरा रहा है। सारे देश वातावरण नियंत्रण (Climate Control) के साधन खोजने में लगे हुए हैं। विज्ञान हमें नए प्रयोगों द्वारा बहुत कुछ सहायता पहुंचा सकता है। जैसे फसल फ्यूल की जगह सोलर पावन और विण्ड टरबाइन द्वारा प्राप्त होने वाली एनर्जी का प्रयोग, पेट्रोल, डीजल और गैस के स्थान पर बिजली का उपयोग करना आदि से हम हद से अधिक बढ़ते हुए दूषित वातावरण द्वारा आगे आने वाले भयानक संकट से मुक्ति पा सकते हैं। परमाणु श्सक्ति का सही ढंग से उपयोग करने से भी हम विज्ञान साधनों से बे–शुमार एनर्जी प्राप्त करने में समर्थ हो सकते हैं। विज्ञान हमारे स्वास्थ्य सुरक्षा में भी नए प्रयोगों और रिसर्च द्वारा लगातार योग दे रहा है और हमें स्वस्थ सुखी तथा लम्बी उम्र तक जीवित रखने में सहायक है।

धर्म और विज्ञान का अनुपयुक्त पहलू

कभी सोचा भी नहीं जा सकता कि किसी भी धर्म को मानने वाला मानव धर्म की आड़ में कुकर्म, दुराचार और हिंसात्मक प्रवृत्ति के रास्ते पर उतर सकता है। बड़े खेद का विषय है– धर्म में छिपी हुई कुरीतियों, जैसे स्त्रियों और पुरुषों में सामाजिक असमानता, नीची जातियों में भेदभाव का प्रचलन आज भी देखने में आता है। और भी कई अवगुणों का समावेश जो नहीं होना चाहिए आज तक व्याप्त है। ईर्ष्या, स्वार्थ, भ्रष्टाचार, नैतिक पतन मनुष्य को दुष्टता की ओर खींच रही हैं। मारपीट, जंग और मानव हिंसा मानवता पर एक घिनौना धब्बा है। दुनिया में विज्ञान की भयानक विनाशकारी परमाणु शक्ति से मानव भयभीत है और थरथरा रहा है। मानवता के लिए ये सबसे भयंकर डर बन चुका है। कुछ देशों में ऐसे भीषण परमाणु हथियारों को बनाकर तैयार करना और रखने का अधिकार होना दुनिया को डॉवाडोल करने का संकेत है। मानव दंग है, ऐसा आभास होता है और अफसोस है कि कहीं विज्ञान के और अज्ञान की इस असंतुलित विनाशक शक्ति के भ्रमित वातावरण से हम धर्म के सब श्रेष्ठ गुणों को पीछे न छोड़ दें–भूल न जायें। यदि ऐसा हुआ तो मानवता का ही नहीं सारे ब्रह्माण्ड का अन्त निश्चय ही समझिए।

धारावाहिक लम्बी कहानी–दो

विस्मृता

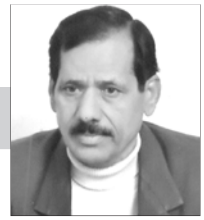

डॉ. स्वर्णसिंह रघुवंशी

–गतांक से आगे–

''अकेले ही आये हो, वे लोग साथ नहीं आये''– उषा ने मुस्कराते हुए पूछा। ''नहीं''– मैंने संक्षिप्त उत्तर दिया। ''चलो ठीक ही हुआ।'' ''क्यों ?.... क्या उन दोनों के आने से कुछ बिगड़ जाता।''

मेरी बात पर वह कुछ न कह कर मात्र मुस्करा भर दी। मैं सीढ़ियां लांघ कर बरामदे में आ गया था। सीमेंट की उस बड़ी झरोखेदार जाली से टिककर मैं बाहर सड़क की ओर निहारता हुआ सोच रहा था–

मेरे द्वारा दरवाजे के खटखटाने के बाद उषा भाग कर आई थी और झट से दरवाजा खोल दिया था, शायद वह मेरे आने का ही इंतजार कर रही थी। क्षणभर को उसने बाहर देखा था। मेरे साथ वे लोग भी हैं या नहीं और जब मुझे अकेला खड़ा पाया तो वह अत्यधिक खुश हो गई थी। उसकी वाणी में जो अकुलाहट थी, वह खुशी मैं उसकी आंखों में साफ देख चुका था। मुझे भी संतोष हो रहा था। और खुश था कि आज मैं अपने वादे के अनुसार सांझ होते ही उषा के घर पहुंचा था। शायद एकान्त रहने पर उषा मुझे अपने मन का कोई गुप्त रहस्य बता दे। मेरे अन्दर आ जाने पर वह बाहरी द्वार बन्द कर रही थी। उसके चेहरे के भावों को मैं नहीं देख पाया था। लेकिन मेरे अकेले आने पर जिस तरह उसने व्यवहार व्यक्त किया था वह सोचने पर मजबूर कर रहा था कि आज उषा एक लम्बे समय तक बातें करने के मूड में है, तभी तो वह मेरे अंदर आ जाने के बाद निश्चिन्त होकर द्वार की सिटकनी लगा रही थी। उसका हंसना फिर चुप हो जाना ऐसा लगा जैसे वह मेरे स्वागत में ही हंसी हो और अकेले आने पर आश्वस्त होकर चुप हो गई हो।

''क्यों, क्या सोच रहे हो,.....अंदर नहीं चलना है ''मेरा हाथ पकड़ कर वह बोली। ''ऊं.... हां...., कुछ नहीं ....., बस .... ''मैं हड़बड़ा गया। बाहरी किवाड़ बंद कर, लौटने पर जैसे ही उसने मुझे चुप खड़ा देखा मेरी बांह पकड़कर झंझोड़ दिया था और तभी मैं एकदम हड़बड़ा उठा था। मैं कल वाले उसी कमरे में प्रवेश कर गया। ड्राइंग रुम में आकर हम दोनों सोफे पर बैठ गये। मैंने हाथ का छोटा बैग वहीं सोफे पर एक ओर रख दिया। एकांत होने से हमारी बातों में अपने जीवन के यौवन संगम के उन क्षणों की मधुर यादें ही प्रमुख थीं। हम उन दिनों की याद कर रहे थे जो दस–बारह वर्ष पूर्व एक साथ गुजारे थे। अतीत की वे बातें करके हम दोनों प्रसन्न हो, हंस रहे थे। थोड़ी दे बाद उषा उठकर अंदर चाय बनाने चली गई। उसे जाते ही मैं कल्पनाओं में खो गया। –बीते दिनों की याद करके वह समय– जब उषा स्कूल में पढ़ने पैदल जाती थी। तब मैं उसे अपने घर के बाहर खड़ा देखता रहता था। कभी–कभी वह मुस्करा कर अपना हाथ उठा देती थी और मैं भी दोनों हाथ जोड़कर उसे मौन अभिवादन कर लेता था। स्कूल से लौटते समय या अवकाश के दिनों में जाती हुई उषा के साथ मैं झिझकता हुआ, थोड़ी दूरी बनाकर चलते हुए बातें करने में घबरा जाता था। प्रारंभिक परिचय के बाद जब मेरा उसके बंगले पर आना–जाना प्रारंभ हो गया तो धीरे–धीरे हम साथ–साथ उठने–बैठने भी लगे। तब हम एक–दूसरे को अकेला पाकर प्रसन्न हो जाते थे। उस समय का वह, उम्र का एकांत समय बहुत ही मूल्यवान दिखता था मुझे। आज भी एकांत था।

परन्तु समय लम्बा हो गया था। बचपन के उस क्षणिक मिलन की वह लालसा अब मन में नहीं थी। एक–दूसरे से मिलकर हम प्रसन्न अवश्य हो रहे थे, पर बचपन की उत्सुकता अब वैसी नहीं थी– उम्र का क्वांरापन समाप्त हो चुका था। बढ़ती उम्र और विछोह के उस लम्बे अंतराल ने हमें, हमारी भावनाओं को भी, समय के साथ बदल दिया था। शरीर वही थे, पर मन बदल गये थे। आज उषा का व्यवहार मुझे ऐसा लगा जैसे मैं उसके मन के द्वार को खोलकर अचानक प्रवेश कर गया और वह अपने बाहरी प्रेम कपाटों को भीतर से बंद करके मुझे हृदय के कमरे में अंदर बैठा रही हो। मेरी कल्पना का दृश्य भी बदल गया। उषा ने आकर मेरे हाथ में एक चाय का प्याला थमाया और पुनः अंदर लौट गई। गर्म चाय का घूंट भरने से मेरा निचला होंठ जल उठा। पर मेरे हृदय में दबी एक स्मृति उभर कर बाहर आ गई। मैं अपना होंठ दांतों के बीच दबाये याद करने लगा।

वार्षिकोत्सव हो रहा था। उस दिन शासकीय कन्या मा. वि. में दिन भर से विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम आयोजित थे। शाम को अंतिम कार्यक्रम, नाटक–नृत्य के साथ उस सांस्कृतिक कार्यक्रम का समापन होना था। छात्राओं का कार्यक्रम होने से बाहरी लोगों, विशेषकर छात्रों का प्रवेश वर्जित था। सारी व्यवस्था स्कूल के पिछवाड़े ऊंची–ऊंची दीवारों से घिरे परकोटे वाले भाग में आयोजित की गई थी। पिछवाड़े वाले लोहे के फाटक में ताला डालकर अंदर से एक कनात की दीवार खड़ी कर दी गई थी ताकि बाहर से कोई भी वह कार्यक्रम न देख सके। कार्यक्रम देखने के लिए छात्राओं के अभिभावक, परिवार के सदस्यों के अलावा नगर के स्थानीय कुछ प्रतिष्ठित नागरिकों को भी आमंत्रित किया गया था। नियत समय पर लोग स्कूल में आने लगे। छात्राओं के द्वारा प्रस्तुत किया जाने वाला यह कार्यक्रम रोचक होगा, यह धारणा मन में रखकर मोहल्ले के कुछ

युवा लड़कों की भीड़ स्कूल के बाहरी द्वार पर जमा हो गई थी। मेरे मन में भी कार्यक्रम देखने की तीव्र इच्छा थी। कारण कि, नाटक–नृत्य के कार्यक्रम में उषा भाग ले रही थी, यह मुझे मालूम था। पर विवशता, हमारे परिवार की कोई भी लड़की उस स्कूल की छात्रा नहीं थी। मैं मन मसोसकर घर पड़ा रहा। कार्यक्रम के आगे स्कूल पढ़ने जाना व्यर्थ लग रहा था। तब मेरा मित्र राम मोहन। मेरी अनुपस्थिति का कारण जानने घर आ गया। उसकी चालाक बुद्धि ने कार्यक्रम देखने की समस्या हल कर दी। उसके पड़ोस में एक लड़की रहती थी, जो उसी स्कूल की छात्रा थी। कार्यक्रम आरंभ हो चुका था। हम अपनी योजना अनुसार कन्या विद्यालय के पिछले वाले दरवाजे पर पहुंच गये। एक संकेत हुआ–सीटी बज उठी। एक दस वर्षीय बालक फाटक के बाहर आया और चला गया। कार्यक्रम आरंभ हो जाने से उदासीनता वश एवं बाहर जमा भीड़ के कारण उस लड़के के द्वारा बाहर आकर वह परिचय पत्र–आमंत्रण पत्र– हमें थमाते हुए कोई नहीं देख पाया, फिर हम दोनों प्रवेश द्वार पर पहुंच गये। उस पत्र के द्वारा मैं और मेरा वह मित्र उस छात्रा के भाई –झूठे– बनकर अंदर प्रवेश करने में सफल हो गये। बचपन की उस शरारत भरी जिंदगी पर मैं हंस पड़ा। मैं हंस रहा था और चाय का प्याला ज्यों का त्यों हाथ में रखा था।''अरे तुम तो हंस रहे हो।'' उषा मुझे टोक रही थी। मैं विचारों में इतना खो गया था कि उसके समीप आ जाने का आभास मुझे नहीं हो पाया।

वह सहयात्री महिला मेरे सिर के नीचे दबी पत्रिका खींच रही थी। तभी मेरी नींद खुल गई। मुझे उठता देख वह शर्मिन्दा हो गई और हाथों को वापिस खींचकर सुकड़ती हुई बोली– क्षमा करना, आप सो रहे थे इस कारण मैं....'' ''कोई बात नहीं'' मैंने संक्षिप्त सा उत्तर देकर पत्रिका उसके हाथों में थमा दी। अलसाते हुए मैं उठकर बैठ गया। थोड़ी देर तक वह पत्रिका के पन्ने उलटती पलटती रही और फिर उसे एक ओर रख दिया। जब उस सहयात्री ने अपने थर्मस से चाय उड़ेल कर वह भरा कप मेरी ओर बढ़ाया तो मैं अवाक उसका मुंह ताकता रह गया। आशा के विपरीत उस अपरिचित युवती का मुझे चाय देना अद्भुत एवं रोमांचकारी सा लगा। यात्रा के समय भले सहयात्री का मिलना एक अज्ञात संबंध मुझे रोक न पाया। मेरा हाथ बढ़ा और उस पात्र को धीरे से थाम कर मैंने मुस्कराते हुए उसे धन्यवाद दे दिया। प्रत्युत्तर में वह भी मुस्करा उठी। चाय की चुस्कियां भरते–भरते अधूरे स्वप्न की मेरी यादें फिर से उड़ान भरने लगीं। खुली खिड़की से बाहर झांकने पर विपरीत दिशा में भागते–झूमते पेड़ पौधों को देखकर मेरा मन मयूर नाच उठा। बाहर फैली चौथ या पंचमी की क्षीण ज्योत्सना में एक छोटा सा मंच उभकर आया– उषा नृत्य कर रही थी। उस वार्षिकोत्सव की भूली सी याद जो स्वप्न में बिखर कर रह गयी थी फिर से याद आ गई। रासलीला का एक दृश्य था। उषा राधा बनी थी। अन्य लड़कियां सजी–धजी गोपियां बनी उसके पीछे कतार बनाकर खड़ी थी। लाल–पीली सतरंगी रोशनी में वह नाच मनमोहक लग रहा था और गोपियों की सितारे जड़ी जरीदार साड़ियां हल्के प्रकाश में चमक कर जगमगा उठती थीं। मैं धड़कते दिल से कुर्सी पर बैठा वह दृश्य देख रहा था। उषा राधा बनी नाच रही थी और कृष्ण उसे छेड़ रहे थे। थोड़ी देर के लिए मैं कृष्ण बन गया और नाचती हुई उषा जिधर भी जाती मेरी नजर उधर ही घूमती रही। मंच के पीछे से वाद्य यंत्रों का स्वर और पार्श्वगायन एक नारी कंठ सुनाई दे रहा था। गाने के बोलों पर उषा के पैर थिरक रहे थे–

.......धीरे–धीरे उतारो मेरी गगरी,
मेरी, गगरिया छलक जायेगी.....श्याम...

''देखिए आपकी चाय छलक पड़ी'', सहसा उस सहयात्री युवती के टोकने से मैं यादों के अतीत से वर्तमान में लौट आया। चाय के गिरने से मैं थोड़ा शर्मिन्दा हो गया और तुरन्त अपने रुमाल से चाय के दाग मिटाने लगा। सामने बैठी वह मुझे देखकर हंस रही थी। राधा के श्रृंगार वाली उषा नहीं बल्कि उसकी हमशक्ल वही सहयात्री, जिसने मेरी क्षीण यादों को स्वप्न में बदल दिया था। मेरा मन उसका परिचय जानने के लिए उत्सुक होने लगा। मैंने पहल करके, बातचीत का सिलसिला प्रारंभ किया–

''आपकी यात्रा... कहां तक है?'' ''कटनी''

''खुशी हुई, आप अन्त तक मेरा साथ देंगी।'' मैंने हंसकर कहा। ''क्या....''कहकर उसने आश्चर्य व्यक्त किया और फिर कुछ सोचकर बोली–शायद मेरा आशय समझ गई थी।– ''अच्छा आप भी कटनी तक जायेंगे।'' ''जी हां, मैंने संक्षिप्त सा उत्तर दिया।'' ''तो फिर ठीक है।'' कहकर वह युवती मुस्करा दी। उसे हंसते हुए देख मैंने पूछ लिया– ''क्या मैं आपका शुभ नाम जान सकता हूं?'' ''मैं उषा..... पर घर में सभी मुझे रानी कहते हैं।'' उसने तपाक से कह दिया। उसका नाम सुनते ही मुझे हल्का सा झटका लगा। खुली खिड़की से आती हुई तेज हवा सारे शरीर में एक सनसनी भरने लगी। वह सहयात्री मेरा परिचय पूछ रही थी। मैंने कांपते हुए अपना पूरा परिचय उसे बता दिया। मुझे डर लग रहा था कि कहीं यह युवती मेरी वही पुरानी परिचिता तो नहीं? पर वह–वह नहीं थी, मात्र हमशक्ल थी। वह पत्रिका पढ़ने में व्यस्त हो गई और मैं उसका साथ पाकर बेफिक्र होकर लेट गया। इस आशा में कि यदि नींद भी लग गई तो वह सहयात्री गंतव्य स्थान पर पहुंचते ही मुझे जगा देगी। एक के बाद एक स्टेशन छोड़ती हुई ट्रेन चली जा रही थी। सहयात्री ने बातें करके मेरी स्मृति को और लौ दे दी, उन मीठी यादों का बुझता दीपक पुनः भरभरा कर जल उठा। धीरे–धीरे मेरी आंख लग गई और मैं फिर से खो गया स्वप्नों के मीठे जाल में।

–आगामी अंक में जारी–

कहानी

डस्टबिन

सोनाली करमरकर

बरखा की हरकतो से अनिलजी तंग आ चुके थे। बेटी अंजली की शादी करने चले थे पर बरखा की शर्त के मुताबीक बेटी की शादी वो वही करेंगे जहा लडका अकेला हो। ये भी क्या बात हुई? ऐसा भी होता है कही? और आज तो हद ही हो गयी। अच्छा खासा रिश्ता आया था, लड़का बैंक में रीजनल मैनेजर था पर बरखा ने उसे ये कहकर रिजेक्ट कर दिया कि माता पिता के अलावा उसे एक भाई और एक बहन भी है। 'बरखा ये क्या बेहूदापन है? क्यों किसी बच्चे को अपने परिवार से तोड़ना चाहती हो?' अनिलजी नाराज होकर बोले। 'आप ना ही कुछ कहो तो अच्छा है। मैं अपने दिन नही भुली, मेरे ससुराल वालों ने मुझे कैसे तंग किया था, और आप उनके लाड़ले बेटे जो ठहरे। आपने भी कभी मुझे समझने की कोशिश नहीं की। हर वक्त अपने, परिवार का ख्याल रहता था आपको, लेकिन मेरी फिक्र नहीं की आपने कभी। जब भी मेरे लिए कुछ लाते थे तो ठीक वैसी ही चीज अपने बहन के लिए भी लाते थे। हम कभी सिनेमा जाते तो आपके भाई बहन भी हमारे साथ होते थे। शादी नयी से पुरानी हो गयी लेकिन आपके साथ वक्त बिताने की चाहत कभी पूरी नहीं हो सकी।'

'तो आज करलो न बात। किसने रोका है? हर घडी मेरे परिवार को कोसती रहती हो, तो तुम कभी हम लोगो की खुशियों में शामिल क्यों नहीं हुई? मुझे अच्छा लगता.. और आज तो हम लोगों के पास न समय की कमी है और ना ही तुम्हारे ससुराल वाले साथ है, तो क्यो हर घड़ी मन की भड़ास निकालती रहती हो? कुछ अच्छी बातें नहीं कर सकतीं?' अनिल जी ने गुस्से से कहा। 'मैं उस वक्त भी आपकी खुशियों में शामिल हो सकती थी पर आपने कभी मौका ही नही दिया। आपको लगा होगा कि मैं आपके परिवार के साथ परायों जैसा व्यवहार करूंगी इसलिये आप सदा उन लोगों का पक्ष लेते थे। आपने कभी 'मैं और तुम' छोड़कर 'हम या हमारा' इन भावनाओं को अपने मन में पनपने ही नहीं दिया। और आप कहते हो कि अब हमारे पास वक्त है बात करने का, लेकिन आपको शायद पता नहीं कि हर बात का एक समय होता है। तब हमारा रिश्ता नया नया था सो उसे वक्त देने की जरूरत थी। आज कोई फर्क नहीं पड़ता क्यों कि हम आदी हो गये है अब एक दूसरे का साथ ढोने में। और वैसे भी अब मेरे बच्चों का साथ है मुझे। खैर इसलिए मैं नही चाहती की मेरी बेटी भी यही सब सहे। तो इन बातों से बचने के लिए अच्छा यही होगा कि हम ऐसा रिश्ता ढूंढें जहां लड़का घर में इकलौता हो। मेरी इस शर्त पर और बहस ना हो तो अच्छा है।' बरखा ने बातो का सिलसिला खत्म करते हुए कहा।

अनिलजी को सारी बातें याद आयी। जब शादी हुई थी तब बरखा का साथ उन्हे अच्छा लगता था, पर उसके साथ वक्त बिताने पर या उसकी जरूरतो का ख्याल रखने पर घर के लोग हंसते हुए जुमला कसते, 'जोरू का गुलाम' तब अनिल जी को बड़ा गुस्सा आता था। धीरे धीरे ये बात उनके मन में घर कर गयी और वह औरों के सामने या दोस्तों के साथ होने पर बरखा को टालने लगे। बरखा अगर आपत्ति जताती तो वह ये कहकर मुकर जाते के 'ये तुम्हारा वहम है। कोई पति अपनी पत्नि से ऐसे बर्ताव करता है भला?' अनिलजी और बरखा के बीच साथ रहने पर दूरियां बरकरार रहीं धीरे धीरे बरखा के मन में ससुराल के प्रति कड़वाहट भरती रही। साल गुजर गए। अब सास ससुर भी नही रहे। भाई काम की वहज से दूसरे शहर में बस गया और बहन शादी कर के अपने घर चली गयी। पर बरखा के मन में कटुता ऐसी फैल चुकी थी की कम न हो सकी।

'भाभी ओ भाभी! क्या हम अंदर आ सकते हैं।' राकेश जी ने अंदर आते हुए पूछा।' 'आईये भाई साहब! क्या बात है? आज आप बड़े मूड में दिख रहे हो' 'हां हां भाभीजी, अगर आप सुनेंगी ना तो झट से मिठाई का बंदोबस्त करेगी। भाई मैं खबर ही ऐसी लाया हूं। आपको जैसा लड़का चाहिये था वैसा रिश्ता मुझे मिल चुका है। आपको चाहिये वैसा ही इकलौता लडका!' 'वाह! ये तो बडी अच्छी बात है। कुछ और बताईये ना उसके बारे में' बरखा की बेसब्री देखकर राकेशजी खुश हुए। 'भाभीजी, लड़का लाखों में एक है। खुद का कारोबार है। महिने में लाख तो कमाता ही है। अपनी मां– पापा के आंख का तारा है सतीश। फिर बताइये कब बुलाना है उन्हे अंजली से मिलवाने के लिए?' राकेश जी बरखा के चेहरे के रंग निहारते हुए बोले. बरखा ध्यान से उनकी बात सुन रही थी। 'ये तो

बताईये भाई साहब कि उनके घर में डस्टबिन कितने है।' 'मतलब?' राकेश जी ने पूछा। 'मेरा मतलब उसके माता पिता से है भाई साहब।' बरखा ने खुलासा किया। राकेश जी कुछ कहें उससे पहले अनिल जी कह उठे, 'क्या बात करती हो बरखा? माता पिता तो होंगे ही। वह इस उमर में बेटे को छोड़कर क्यों जाएं?

'हां भाभी जी! उसके माता पिता है और सतीश उनके साथ ही रहता है। इतना ही नहीं सतीश अपने मां पापा से बहुत प्यार भी करता है तथा उनकी हर बात मानता भी है। 'एक बात बताईये भाई साहब, क्या सतीश अपने मां पापा की सारी बातें मानता है? या विरोध भी करता है?' 'नहीं नहीं भाभी जी! सतीश मां पापा का एकदम आज्ञाकारी बेटा है। बड़े अच्छे संस्कार है उसके। आप निश्चिंत रहिये।' राकेशजी का इतना कहना था कि बरखा का आकाश में उड़ने वाला मन धम से धरती पर आ गया। 'क्षमा करें राकेश जी, ये रिश्ता नहीं हो सकता! जो लड़का मां पापा का आज्ञाकारी होगा वह अपनी पत्नी का पक्ष कभी नहीं ले सकता। मेरी बेटी वहां घुट घुट कर जिये ये मुझे कतई पसंद नहीं।'

'ये क्या कह रही हो मां? इतनी सी बात पर इतना अच्छा रिश्ता हम क्यों ठुकरायें? मुझे कोई आपत्ति नहीं है कि सतीश उनके मां पापा का आज्ञाकारी बेटा है।' अंजली जो अब तक सब बातें सुन रही थी, बीच में बोल पड़ी। 'तुम बीच में नहीं पड़ो तो अच्छा है अंजली! अभी तुम्हारी उम्र नहीं ये बातें समझने की। मैं अपने अनुभव से ये बातें कह रही हूं।' 'लेकिन मां..'इस बार प्रथम ने यानी बरखा के बेटे ने हस्तक्षेप करना चाहा। 'बोलो बेटे! यहां कुछ बोलने के लिए अब तुम्हारी ही कमी थी। बरखा की बातों का रवैया देखकर प्रथम वहां से चला गया। अबकी बार अनिलजी भी क्रोधित हो गए। ये क्या नाटक लगा के रखा है बरखा ने? न वह सह पा रहे थे और ना ही किसी को इसकी वजह बता पा रहे थे। इस बार भी हमेशा की तरह बरखा ने रिश्ता नाकारा तो राकेशजी नाराज हो कर वहा से चले गए।

दिन यूं ही बीत गये। देखते देखते छह सात महिने गुजर गए और भगवान ने एक दिन बरखा की फरियाद सुन ही ली। बरखा को जैसा चाहिए था ठीक वैसा ही रिश्ता उसकी सहेली लेकर आयी अंजली के लिए। लड़का इकलौता था। सीए था, घर में उसके केवल पिताजी ही थे। उसकी मां एक साल पहले गुजर गयी थी। बरखा ने खुशी खुशी हां कर दी। बस फिर क्या चट मंगनी पट ब्याह वाला मामला हो गया और अंजली अपने घर चली गयी। इन्सान को हर वक्त शिकायत करने की आदत हो तो उसे हर बात में परेशानी रहती है। अंजली के घर वह अकेली औरत थी सो सारे घर की जिम्मेदारी उसी पर थी। वह सब अच्छे से निभा रही थी। लेकिन अब बरखा को इस बात से शिकायत थी कि मेरी बेटी दिनभर काम करती रहती है। जितना हो सके अनिलजी उसे समझाते जब बात हद से गुजर जाती तो वह बाहर निकल जाते। इस तरह रूठने मनाने में दिन बीतते रहे। अब प्रथम की शादी की उमर हो गयी थी। अच्छी नौकरी थी और अच्छा कमा भी लेता था। पर लडका होकर भी प्रथम की शादी में बडी दिक्कतें आ रही थीं। बरखा ने जैसी शर्त अंजली की शादी मे रखी थी ठीक वैसी ही शर्तें अब लड़की वाले करने लगे। 'हां तो ठीक है ना मां, आपको तो ये बातें स्वीकार ही होंगी?' प्रथम ने मुस्कराकर कहा।' 'क्या कह रहे हो बेटे? क्या इस उमर में हमें अकेला छोड़ जाओगे? बरखा ने हमेशा की तरह अपनी बात मनवानी चाही। 'मां अब इसमें हर्ज ही क्या है? अंजली के लिये आपने यही तो चाहा था। तब आपको 'डस्टबिन' नहीं चाहिये थी अब सामने से अगर तुम्हारे समधी यही सोचें तो तुम क्यों बुरा मान रही हो? फिर भी हम ढूंढेंगे कोई रिश्ता जिसमे तुम्हारी बहु तुम दोनों को अपना सके वर्ना तुम दोनों को या मुझे ये घर छोड़ना ही पड़ेगा। प्रथम ने दृढ़ स्वर में कहा। वैसे उसे ये कहना अच्छा तो नही लगा पर 'इन बातो की शुरूआत कभी मां से ही हुई थी, आज अगर मैं इस पर अमल करूं तो हर्ज ही क्या है?' वह सोचता रहा।

प्रथम की बातें सुनकर बरखा का मन कोफ्त से भर गया। अपनी लड़की के लिये रिश्ते ढूंढ़ते वक्त ये ख्याल दिमाग में आया ही नहीं कि अपना भी एक लड़का है और हर लड़की की मां यही सोचती होगी कि बेटी के ससुराल में कोई 'डस्टबिन' न हो। उसे लगा शायद अब हम लोग भी डस्टबिन हो गये है' और चार पांच महिने गुजर गये। रिश्ते तो बहुत सारे आये प्रथम के लिए पर हर रिश्ते की यही जिद थी की भई लड़का हमारी बेटी के साथ अलग से गृहस्थी बसाये। आखिर बरखा को अपने बेटे को अलग गृहस्थी बसाने की इजाजत देनी पड़ी तब कहीं जाकर प्रथम की शादी हो पायी। 'मां तुम चिंता मत करो मैं धीरे धीरे तुम्हारी बहू का मत परिवर्तन करके उसे अपने घर ले आउंगा क्योंकि मैं भी तुमसे दूर होकर नहीं रह पाउंगा' बेटे ने उदास होकर कहा बरखा का मन ग्लानि से भर गया। उसके पास अब बेटे और बहू का इंतजार करने के अलावा कोई चारा नहीं था।

— नागपुर, मो.नं.— 9503775057

कल्याण सिंह रघुवंशी की तीन कविताएं

नव–सृजन

नव पथ का निर्माण
जिस पर चल हम बनें महान
पाषाण हृदय क्यों होते हो
तुम हो सृष्टि की आदि संतान।
करना है तुम्हें कार्य महान
देव तुम्हीं हो पृथ्वी के
तुम्हीं स्वर्ग की आभा हो
वाक्य तुम्हारे मंत्रित हों सब
कदम बढ़ें बिन बाधा हो।
मार्ग हमारा वही बने
जो धरा गगन को कर दे एक
हम सब राही हैं उस पथ के
जिसमें रहता शौर्य विवेक।
अवरोध मुक्त यह विश्व बनेगा
जब मानव मानव पर तरसेगा
ऊंच नीच का भेद मिटेगा
तब नया सृजन बसुधा पर होगा।

———

विस्तृत

हृदय यह निस्पंद मेरा
अस्रु क्यों इतने बहाता
यह झूठ सारा दंभ तेरा
कभी न छवि कोई दिखाता।
मैं तो सदा यह मानता हूं
अस्रु तेरे नयन मेरे
पर नहीं अब जानता हूं
अपरिचिते सानिध्य तेरा।
स्मरण मुझको बस यही है
वीण भी यह कह रही है
अब न सुधि कुछ रह गई है
दग्धता निज सह रही है।
शान्त संध्या प्रात बेला
धुधलके से स्पन सारे
ज्यों जगत में हूं अकेला
मिल न पाते हैं इशारे।
हृदय भी अवरुद्ध है यह
क्या किसी को मैं बताऊं
था कभी जल क्षीरवत
यह गल्प भी कैसे सुनाऊं।
मैं उसे दुतकारता हूं
जो कभी ऊधम मचाता
पूजता हूं किंतु उसको
जो प्यार के नगमे सुनाता।
पूछता कोई कभी तो
मैं उसे हूं पागल बनाता
विस्मरण मैं खो चुका यह
मैं जिसे आराध्य बनाता।

—————

बुझते दीप का अस्तित्व

उसने सबका पथ अवरुद्ध किया
हर आते जाते पंथी को प्रणाम किया
पर नहीं किसी ने ध्यान दिया
हर राही कुछ हंसता
हाथ हिलाता
भौंह चढ़ाता
पथ पर आगे बढ़ जाता।
वह नहीं अछूत व नहीं नीच
भारत मां का दिव्य ललाट
पर सत्ता नहीं विराट
क्योंकि कुछ कमियां पाकर
चोटें खाकर
गात सुखाकर
यहां पड़ा हुआ।
ठोकर सह कुछ संभल गया
प्रफुल्लित गात है झुलस गया
उसकी देह समर्पित है जग को
कुछ मांग नहीं सकता निज को
जन क्यों रखते हैं
उस पर दृष्टि क्रूर
वह मजबूर एक मजदूर।
सदाचार की प्रतिमा वह है
मानव की साकार मूर्ति
नहीं कपट छल उसको आता
तब भी उसको दुतकारा जाता।
सत्ताधारी जिनके बनते महल अटारी
उन शासकों की सत्ता
उनके भवनों की महत्ता
कष्ट सहता
पर गढ़ने से मना नहीं करता।
उसकी दर्द मय आहट
और मुस्कराहट का मिश्रण अजीब
निर्माण को रुप देता सजीव
जो स्वयं को नहीं
अमीरों को होते नसीब।
यह पथ भ्रष्ट लोग
हो रहे निरुपित कर्तव्यनिष्ठ
जिनकी छाया भी पाती प्रणाम
स्वयं उच्छृंखलित

पर अन्यों के मुंह
पर कसते लगाम
वह रेखांकित से
लोग
जिनकी नहीं कोई
अस्तित्व
पर जग से रखते हैं ममत्व
रखकर ईंट पर ईंट
उठाते गगनचुंबी भीत
करते रक्त पसीना समर्पित
पर कोई न आंकता उनकी कीमत।
धन बस एक कुटिया है
जिसे भी कर्ज में देना है
प्रातः अर्द्ध पेट भरते हैं
सांध्य भोजन का नहीं ठिकाना है।
वह सूर्य का प्रकाश
जिससे जगमगाती धरा और आकाश
किन्तु वह कुटिया उससे भी निराश
उसके पास खड़े गुंबज
रोकते प्रकाश करते हताश।
उसका वह टिमटिमाता दीप
उसकी गोद का वह लाल
जिस पर नजर सभी की
नही सबका सहारा है
वह भी जन्म से कर्ज का भागीदार
और दुख का सांझीदार
बनकर आया है।
जग की यह अमानुषिक प्रवृत्ति
मध्य में बनकर खड़ी ज्यों भित्ती
भ्रष्टाचार के नाम पर
केवल बचन बलिदान कर
जुटे हैं उन रेखाओं को मिटाने में
नित्य नये विधान बनाने में
मानो अधम को उठाने में
हो रहे समर्थ हैं।
क्या अमीरों की नीव
सदा रहेगी अमर
किंचित नहीं
हर्गिज नहीं
संभलता जा रहा विश्व है
उन मंद मिटती रेखाओं
और उस बुझते दीप का अस्तित्व है।

मो.– 9406533839

स्वाति पटेल की दो कविताएं

दुल्हन चली ससुराल

खुशियों की होगी दस्तक,
हर पल लेकर आयेगा रौनक।
आने वाला हर पल लायेगा नई बहार,
जाने वाली है दुल्हन छोड़ पीहर।।
एक घर गूंजेगी शहनाई,
दूसरे घर होगी बिदाई।
है अनोखा यह बंधन
जोड़ता है दो परिवारों को,
साथ में लाता है कई रिश्तों को।।
दादी नानी देती हैं आशीर्वाद,
बुआ मौसी देती हैं बधाईयां।
बजने वाली हैं शहनाईयां।।

——

एक कली की कामना

एक बार की बात
एक नन्हीं सी कली ने पूछा ईश्वर से
मैं कब बड़ी होऊंगी
और महकाऊंगी ये बगिया?
ईश्वर मन ही मन मुस्काए
बोले "हे कली! क्या तुम्हें पता है
तुम्हारा जीवन है बहुत छोटा।
और तुम चाहती हो बड़ी होकर
बगिया को महकाना।
परन्तु एक दिन तुम्हें है
मिट्टी में मिल जाना।
फिर क्यों तुमने है ठाना
तुम्हें बड़ी होकर है दिखाना।
सुनकर ईश्वर की ये बात
कली भी मंद मंद मुस्काई
बोली हे ईश्वर मैंने है पाया
एक पुष्प का जन्म
एक ऐसा पुष्प जो जब तक जिया
उसने बगिया को महकाया।
और एक दिन इस दुनिया
से सबको है जाना।
परंतु फिर भी मौत से नहीं डरना।
क्योंकि मेरी है एक ही कामना
कि जब तक जियो इस बगिया को है महकाना।।

–शाहपुरा भोपाल

ऐसा विशाल सामाजिक आयोजन आज तक नहीं देखा-शिवराज

गंजबासोदा (सुरेंद्र सिंह रघुवंशी)। गमाखर की गोलोक पठार में चल रहे 1001 कुंडी महायज्ञ में रघुवंशी समाज के आमंत्रण पर मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान भी उपस्थित हुए। इस अवसर पर श्री चौहान ने कहा कि यह आयोजन अद्‌भुत है और मैंने इतना बड़ा सामाजिक आयोजन आज तक नहीं देखा है। इतनी बड़ी यज्ञशाला, पंडाल और श्रद्धा से भरा जनसमूह पहली बार देखा है। यह आयोजन वास्तव में एक महाकुंभ के मेले जैसा है। यह यज्ञ जनकल्याणकारी भावनाओं को लेकर किया जा रहा है। भारत हमेशा से ही वसुधैव कुटुम्बकम की भावना को मानने वाला रहा है। हमारे साधु–सन्त संसार को सियाराम–मय मानते हैं। भगवान कण–कण में हैं, ऐसा विश्वास है। भगवान की प्राप्ति के तीन मार्ग हैं, ज्ञान मार्ग, भक्ति मार्ग और कर्म मार्ग। साधु–सन्त ज्ञान मार्ग व भक्ति मार्ग से भगवान को प्राप्त करते हैं तो हम लोग भी कई मार्गों पर चलकर भगवान को प्राप्त कर सकते हैं, वश हमें अपने कर्म जनकल्याण के लिए करना चाहिए। यदि आप डाक्टर हैं तो पेशे को गरीबों के लिए सुनिश्चित हैं, यदि अध्यापक हैं तो आप अपने को पूरे मनोयोग से बच्चों के भविष्य को संवारने में लगायें। श्री चौहान ने कहा कि हमे गौमाता को बचाना है और उनके चारे के लिए हमें नरवई में आग नहीं लगाना चाहिए बल्कि नरवई का भूसा बनाना चाहिए। व्यसनों से हमें कई प्रकार की व्याधि हो जाती है, परिवार टूटते हैं, दुराचारियों को फांसी पर लटका दिया जाना चाहिए। हमें पानी को बचाना होगा और हर व्यक्ति को कम से कम एक पेड़ लगाना चाहिए क्योंकि पेड़ों से ही पर्यावरण शुद्ध होता है। कार्यक्रम के आयोजकों ने मुख्यमंत्री को एक ज्ञापन सौंप कर कार्यक्रम स्थल को गौशाला के नाम करने की मांग की। इससे पूर्व महायज्ञ समिति के अध्यक्ष अजयसिंह रघुवंशी, पूर्व मंत्री और कांग्रेस नेता वीरसिंह रघुवंशी, पूर्व भाजपा विधायक हरिसिंह रघुवंशी, पूर्व जनपद अध्यक्ष कैलाश सिंह रघुवंशी, मंडी अध्यक्ष नरेंद्र सिंह रघुवंशी, गमाखार सरपंच श्रीमती कृष्णा रघुवंशी ने फूलमालाओं से मुख्यमंत्री का स्वागत किया। श्री चौहान ने रघुवंश कीर्ति पत्रिका का विमोचन भी किया। पत्रिका के संपादक देवेंद्र रघुवंशी हैं।

श्रीमती मीराबाई का महाप्रयाण

भोपाल। मध्यप्रदेश सरकार से सेवानिवृत्त अवर सचिव रामसिंह रघुवंशी की माता श्रीमती मीराबाई जो कि अनुपम धैर्य, साहस एवं बुद्धिमत्ता की प्रतीक थीं, का स्वर्गवास 96 वर्ष के आयु में शिवरात्रि के दिन हो गया। पन्द्रह वर्ष के आयु में उनका विवाह हुआ था लेकिन दाम्पत्य जीवन केवल दस वर्ष चला, क्योंकि 25 वर्ष की उम्र में उनके पति तथा श्री रामसिंह रघुवंशी के पिताजी का निधन हो गया था। श्रीराम सिंह रघुवंशी का कहना है कि जब मेरे पिताजी का देहावसान हुआ उस समय मेरी आयु लगभग साढ़े तीन वर्ष और मेरे छोटे भाई की उम्र मात्र छः माह थी। मेरी माता जी कहा करती थीं कि पिताजी महात्मा गांधी की खारी में शामिल होने दिल्ली गए थे और वहां से लौटने के बाद एकदम बीमार से हो गए। उन्हें वैद्य को दिखाया गया लेकिन कुछ समय बाद ही उनका स्वर्गवास हो गया। पिताजी की बीमारी का समाचार सुनकर नाना–नानी होशंगाबाद जिले के सिवनी मालवा तहसील के ग्राम रुपादेह से तिलसिया गांव आये। पिताजी की हालत देखते ही मेरी नानी को गंभीर आघात लगा और उसी अवस्था में गांव ले जाते समय उनकी रास्ते में ही मृत्यु हो गयी। नानी की मृत्यु के पश्चात् हमारे नाना ने रुपादेह का मकान तोड़कर ग्राम तिनसिया सिवनी मालवा में अपना मकान बनाना प्रारंभ किया। मकान बन ही रहा था कि अचानक राखी के दिन हमारे बड़े मामा जिनकी आयु 20 वर्ष थी का स्वर्गवास हो गया। मामा के स्वर्गवास के सदमे से नाना जी गंभीर बीमार हो गए तथा एक माह के भीतर ही उनका भी देहावसान हो गया। इसके तीन माह बाद मेरी एक मौसी जो 13–14 वर्ष की थीं उनका भी स्वर्गवास हो गया। अब परिवार में केवल मैं और मेरा छोटा भाई तथा सात वर्षीय छोटे मामा और एक वर्ष की मौसी ही शेष थे, छोटे मामा पैरों से विकलांग थे। इन विपरीत परिस्थितियों के बाद भी मेरी माँ ने तिनसिया, रुपादेह एवं खला में जमीन–मकान आदि की देखभाल की और छोटे–छोटे बच्चों का पालन–पोषण किया।

ऐसी विपरीत परिस्थितियों का उन्होंने बड़े ही धैर्य,साहस और बुद्धिमत्ता से मुकाबला किया। श्री रामसिंह बताते हैं कि उनकी माता जी ने सभी का पालन–पोषण और विवाह कराया। काफी कम उम्र में ही विधवा होने के पश्चात् अनेक प्रकार की सामाजिक एवं पारिवारिक समस्यायें माताजी के सामने आईं लेकिन उन्होंने हिम्मत नहीं हारी और अदम्य साहस के साथ इन सबका मुकाबला किया, हमें पढ़ाया–लिखाया, जबकि उस समय पढ़ाई–लिखाई को काफी महत्व दिया जाता था। माताजी के साहस व सूझबूझ का गांव में उदाहरण दिया जाता है। अभी भी गांव के पुरानी पीढ़ी के लोग कहते हैं कि यदि सीखना है तो मीराबाई और उनके बेटों से सीखो। हमें जीवन में संघर्ष करने की प्रेरणा और शक्ति उन्हीं से मिली। वे अपने संघर्ष की दास्तान को जीवन्त रुप से हमें बताती थीं लेकिन कभी भी धीरज नहीं खोती थीं उनकी स्मरण शक्ति अद्भुत थी और कई पीढ़ियों के रिश्तों का अच्छा ज्ञान था। ऐसी अद्भुत संघर्षशील माता जी को कोटि–कोटि वंदन, प्रभु उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे। रघुकलश परिवार भी उन्हें अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

पत्रकार शिवलाल सिंह रघुवंशी का स्वर्गवास

इंदौर। वरिष्ठ पत्रकार एवं प्रदेश कांग्रेस के पूर्व संगठन मंत्री श्री शिवलाल सिंह रघुवंशी का 22 मई को स्वर्गवास हो गया। 24 मई को शाम 6 बजे उनके निवास एल–57, एलआईजी कालोनी, इंदौर में सामाजिक बंधुओं और श्री रघुवंशी के परिचितों ने एकत्र होकर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की और उठावना बैठक हुई। श्री शिवलाल रघुवंशी इंदौर के समाचार पत्र इंदौर समाचार से लम्बे समय तक जुड़े रहे और वे भाषाई संवाद समिति समाचार भारती के भी संवाददाता रहे। श्री रघुवंशी सामाजिक गतिविधियों में बढ़चढ़ कर हिस्सा लेते थे। उनके निधन से रघुवंशी समाज को अपूरणीय क्षति हुई है। श्री रघुवंशी के निधन पर अखिल भारतीय रघुवंशी ःक्षत्रियः महासभा के राष्ट्रीय हजारीलाल रघुवंशी, कार्यकारी अध्यक्ष पी.एस. रघु, उपाध्यक्ष द्वय चौधरी चंद्रभान सिंह एवं श्यामसुंदर रघुवंशी, महामंत्री उमाशंकर रघुवंशी, कोषाध्यक्ष शिववरण सिंह रघुवंशी तथा राष्ट्रीय प्रचार सचिव एवं रघुकलश के संपादक अरुण पटेल, रघुकलश के इंदौर ब्यूरो प्रमुख राजेश रघुवंशी एवं संवाददाता रणवीर सिंह रघुवंशी, समाज के प्रदेश अध्यक्ष अजय सिंह और प्रदेश महामंत्री चंदू रघुवंशी ने गहन दुख व्यक्त करते हुए उन्हें अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

स्व. कक्काजी को श्रद्धांजलि

उदयपुरा। नगर के वरिष्ठ कांग्रेसी नेता पूर्व डायरेक्टर जिला सहकारी बैंक, रायसेन, सेवा सहकारी सोसायटी के चेयरमैन, पूर्व ब्लाक कांग्रेस अध्यक्ष, पूर्व पार्षद, पूर्व अध्यक्ष हिउस जैसे पदों पर रहे उदयपुरा की पहचान तथा त्याग, सेवा व समर्पण के पर्याय दयारामजी कक्का के निधन पर उदयपुरा सहित जिले के सामाजिक बंधुओं ने शोक व्यक्त कर श्रद्धांजलि दी। समाज की उन्नति के लिए चिंतित रहे कक्काजी के पुत्र महेन्द्र एवं राजेन्द्र भी काफी मिलनसार व समाजसेवी हैं।

जागरुकता की कमी के कारण फिंगर प्रिंट से छेड़खानी

इंदौर। ओमवीर रघुवंशी। प्रदेश की आर्थिक राजधानी इंदौर में सब इंस्पेक्टर फिंगर प्रिंट के पद पर तैनात रुचि रघुवंशी ने फिंगर प्रिंट एक्सपर्ट की परीक्षा में पूरे देश में प्रथम स्थान प्राप्त कर न केवल अपने परिवार बल्कि समूचे रघुवंशी समाज का गौरव बढ़ाया है। रुचि का कहना है कि सब इंस्पेक्टर फिंगर प्रिंट की तीन साल तक नौकरी करने के बाद आल इंडिया फिंगर प्रिंट एक्सपर्ट की परीक्षा दे सकते हैं। इसमें पूरे देश से सब इंस्पेक्टर फिंगर प्रिंट शामिल होते हैं। यह परीक्षा आल इंडिया एक्जामिनेशन बोर्ड–एनसीआरबी– नई दिल्ली द्वारा आयोजित होती है। इस परीक्षा को पास करने के बाद रुचि रघुवंशी अब किसी भी क्राइम सीन या डाक्यूमेंट में फिंगर प्रिंट की जांच करने के बाद एक विशेषज्ञ के रुप में कमेन्ट दे सकती हैं।

रुचि ने इंजीनियरिंग के बाद यह पेशा चुना और उन्होंने इलेक्ट्रानिक एवं कम्युनिकेशन में बी.टेक किया। इसके बाद उन्होंने सब इंस्पेक्टर फिंगर प्रिंट की परीक्षा दी। 2013 में रुचि का इसमें सिलेक्शन हुआ। इंजीनियरिंग से इस फील्ड में आने के बारे में रुचि का कहना है कि मैं लीक से हटकर कुछ करना चाहती थी। कुछ ऐसा जो लड़कियों के लिए आम न हो, इसलिए इस फील्ड को चुना। इसमें एक रोमांच है जो उत्साहित करता है। उन्होंने अभी तक क्राइम सीन के साथ ही एक्जाम डाक्यूमेंट, रजिस्ट्री बैंक डाक्यूमेंट आदि में विवाद होने पर फिंगर प्रिंट की जांच कर कई मामले सुलझाए हैं। जहां तक पूरी दुनिया में फिंगर प्रिंट जांचने का सवाल है इसमें क्षेत्र में भारत की स्थिति काफी अच्छी है। हमारे यहां दुनिया का पहला फिंगर प्रिंट ब्यूरो है जो कि कोलकाता में 1897 में खोला गया था, इसके अलावा सभी राज्यों में भी फिंगर प्रिंट ब्यूरो हैं। रुचि कहती हैं कि जब भी कोई दुर्घटना घटती है तो जागरुकता की कमी से जिसके घर घटना हुई है या फिर अन्य लोग उस जगह की सफाई कर देते हैं या वहां का सामान छू लेते हैं, इससे वहां मौजूद फिंगर प्रिंट मिट जाते हैं या उन पर दूसरे फिंगर प्रिंट आ जाते हैं जिससे रिजल्ट ठीक नहीं आ पाता। लोगों को इसके लिए जागरुक करना जरुरी है ताकि घटना के बाद वहां रखा सामान या जगह को न कोई छुए न साफ करे। रुचि ने युवाओं को इस फील्ड में कैरियर बनाने के लिए अच्छे से पढ़ाई करने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि सब इंस्पेक्टर की पोस्ट से लोग सीधा अर्थ लगाते हैं कि वह थाने से सबंधित होगा जबकि ऐसा नहीं है। एक सब इंस्पेक्टर रेडियो, फोटो, फिंगर प्रिंट जैसे कई डिपार्टमेंट में होता है। उन्होंने बताया कि इसके लिए सब इंस्पेक्टर का एक्जाम देते समय एक अलग से पेपर देना होता है। यह पेपर पीसीएम बैक ग्राउंड वाले स्टूडेंट ही दे सकते हैं, इस पेपर की अतिरिक्त तैयारी कर इच्छुक विद्यार्थी इस फील्ड में अपना कैरियर बना सकते हैं। फिंगर प्रिंट जांच के संबंध में जानकारी देते हुए रुचि ने बताया कि यह जांच एक अलग ही विज्ञान है। फिंगर प्रिंट किसी भी व्यक्ति की विशेष आइडेंटिटी होती है। दो व्यक्ति यहां तक कि वे जुड़वां भी हैं तो भी उनके फिंगर प्रिंट एक से नहीं हो सकते। यहां तक कि हमारी सब उंगलियों के प्रिंट एक जैसे नहीं होते। इसमें उंगलियों में पड़ी रेखाएं जिन्हें रिजेस कहा जाता है उनके स्पेशल करेक्टर को जांचा जाता है। इन स्पेशल करेक्टर को गाल्टन डिटेल कहते हैं, इन्हीं के आधार पर दो फिंगर प्रिंट की भिन्नता और अभिन्नता को दिखाया जाता है।

समाजसेवी चौधरी मेरसिंह और विधायक प्रेमसिंह का महाप्रयाण

छिंदवाड़ा। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और पूर्व विधायक चौधरी मेर सिंह रघुवंशी का विगत दिनों निधन हो गया। उनके निधन से न केवल रघुवंशी समाज बल्कि छिंदवाड़ा जिले को अपूरणीय क्षति हुई है। आप चौरई विधानसभा क्षेत्र से दो बार कांग्रेस के विधायक चुने गये थे। 28 मार्च 1934 को आपका जन्म समाज के प्रतिष्ठित चौधरी मेहताब सिंह के परिवार में ग्राम थांवरी, जिला छिंदवाड़ा में हुआ था। आपके चार पुत्र हैं। आपकी शैक्षणिक योग्यता बीए, बीएड थी। व्यवसाय खेती किसानी था। कृषि से जुड़ी गतिविधियों के साथ ही धार्मिक गतिविधियों में आप बढ़चढ़कर शिरकत करते थे। तेईस वर्ष तक आप शिक्षा विभाग में शिक्षक एवं प्राचार्य के पद पर रहे तथा दस वर्ष तक निर्विरोध सरपंच चुने गये। एक पूर्णकाल तक वृहताकार सहकारी समिति कुंडा, तिलहन उत्पादक सहकारी समिति कुंडा, को–आपरेटिव सोसायटी चौरई एवं लाइन्स क्लब चौरई के अध्यक्ष रहे। 1982 से जीवन पर्यन्त आप बी.पी. मिश्रा शिक्षा समिति चौरई तथा श्रीराम शिक्षा समिति मंडल चांद एवं म.प्र. विद्युत परामर्शदात्री समिति के अध्यक्ष भी रहे। 1983 से 1986 तक म.प्र. दूरसंचार सलाहकार समिति के सदस्य, को–आपरेटिव सेंट्रल बैंक तथा भूमि विकास बैंक छिंदवाड़ा के संचालक, जिला सहकारी बैंक छिंदवाड़ा के मानसेवी सदस्य भी रहे। सन् 2000 से आप जिला कांग्रेस छिंदवाड़ा के सचिव रहे। 1993 में पहली बार दसवीं विधानसभा के लिए कांग्रेस के टिकिट पर चुने गये और विभिन्न सभा एवं विभागीय समितियों के सदस्य रहे। सन् 2000 में आप दूसरी बार भी कांग्रेस के टिकिट पर ही विधायक निर्वाचित हुए।

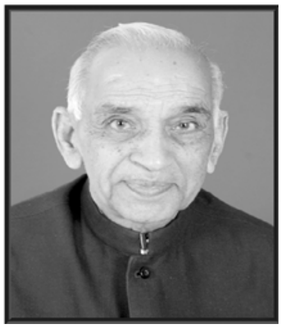

विधायक प्रेम सिंह का निधन

सतना जिले के चित्रकूट से कांग्रेस विधायक प्रेमसिंह का लम्बी बीमारी के बाद विगत दिनों स्वर्गवास हो गया। वे रघुवंशी समाज के थे। 08 सितम्बर 1951 को कोलौहा जिला बांदा में उनका जन्म हुआ था, वे अविवाहित थे। आपका व्यवसाय खेती किसानी था तथा जनसेवा व शास्त्रीय संगीत में आपकी विशेष रुचि थी। 1981 से 1985 तक आप जिला बीस सूत्रीय समिति के सदस्य तथा 1985 में जिला तेंदूपत्ता समिति सतना के भी सदस्य रहे। 1986 से 1989 तक कृषि उपज मंडी के संचालक और प्रदेश कांग्रेस कमेटी के सदस्य रहे। 1998 में आप पहली बार सतना जिले की चित्रकूट सीट से विधायक निर्वाचित हुए और 2003 में पुनः कांग्रेस की टिकिट पर विधायक निर्वाचित हुए। 2013 में तीसरी बार आप विधानसभा सदस्य चुने गए और 29 मई 2017 को आपका निधन हो गया। आपके अंतिम संस्कार में मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान तथा नेता प्रतिपक्ष अजय सिंह और विधानसभा उपाध्यक्ष राजेंद्र सिंह भी शामिल हुए। चौधरी मेर सिंह एवं विधायक प्रेमसिंह के निधन पर अखिल भारतीय रघुवंशी क्षत्रिय महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष हजारीलाल रघुवंशी, कार्यकारी अध्यक्ष पी एस रघु, उपाध्यक्ष द्वय चौधरी चंद्रभान सिंह विधायक एवं श्यामसुंदर रघुवंशी, महासचिव उमाशंकर रघुवंशी, कोषाध्यक्ष शिववरण सिंह रघुवंशी, सचिव द्वय विजय सिंह वर्मा एवं प्रहलाद सिंह रघुवंशी, प्रदेश अध्यक्ष अजय सिंह रघुवंशी एवं प्रदेश महामंत्री चंदू रघुवंशी ने गहन दुख व्यक्त करते हुए भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

मुक्तक

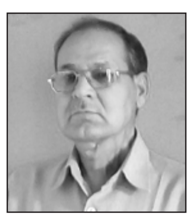

1– हर रात का सबेरा होता है।
गमों के बाद ही सुख आता है।
निराश न हो ऐ मेरे दोस्त,
पतझर के बाद ही बसंत आता है।

2– फूल मुरझाते नहीं मुरझाए जाते हैं।
लोग रोते नहीं बस रुलाए जाते हैं।
कौन चाहेगा लुटाना अपनी आवरु,
वे तो लुटाने मजबूर किए जाते हैं।

3– प्रियतम की डोर प्रीत के हाथ बंधी होती है।
संध्या की डोर सुबह के साथ जुड़ी होती है।
इसी तरह इस मृत्यु नगर में यारों,
जीवन की डोर मृत्यु के हाथ बंधी होती है।

4– मैंने दुनिया को बहुत करीबी से आंका है।
इसकी तह में धंसकर बहुत अंदर झांका है।
मुझे स्वार्थ के सिवा इसमें कुछ नहीं मिला,
मैंने प्यार की तराजू पर इसे ताका है।

5– ईश करता वही होता जहां में,
मैं कहूं या तुम कहो होता कहां है।
मुश्किलों के बीच में मिलती सफलता।
मैं कहूंगा हर चरण में लो सफलता।

–इंजी. शम्भूसिंह रघुवंशी, गुना,
मो–9425762471

भारतीय नारी का स्वरुप

जगन्नाथ सिंह रघुवंशी, मैयर,

भारतीय नारी का अर्थ–त्यागमूर्ति, तपस्या और मूक सेवा। भारतीय नारी का अर्थ है– अपार श्रद्धा तथा पतिव्रत की पवित्रतम प्रतिमा। जिस प्रकार वृक्ष उगता है, पुष्प खिलता है, संसार की मधुर रसयुक्त फल प्रदान करता है, उसी प्रकार नारी सतत कष्ट सहकर मौन भाव से परिश्रमपूर्वक उदात्त सेवा भावना का वरण कर कुटुम्ब में सुख समृद्धि की वृद्धि करती हैं। वह सतत सेवारत रहती हैं। खाते–पीते समय भी उसे सेवा में क्षण भर विश्राम नहीं, आराम नहीं, यह है भारतीय नारी का जीवन।

सीता, सावित्री, गांधारी, द्रोपदी आदि भारतीय नारी के आदर्श हैं। भारतीय संस्कृति में नारी का जीवन प्रज्जवलित हवनकुण्ड कहा गया है। महिला मूर्तिमान कर्मयोग है, मानो उसकी कोई स्वतंत्र इच्छा ही नहीं, पति और बच्चों की इच्छा ही उसकी इच्छा है। पति की इच्छा व रुचि के अनुसार वह भोजन बनाती है। बच्चों को मनपसंद पकवान तैयार करती है। जिस दिन पति को घर में भोजन नहीं करना होता, उस दिन उसे साग–भाजी से कोई प्रयोजन नहीं, उसे अपने लिए कुछ भी नहीं चाहिये। पति के पसंद के कपड़े पहना ना, पति की रुचि अनुसार उसके पवित्र एवं समर्पित जीवन की सार्थकता है। वह पति का सदैव ध्यान रखती है। पति ही पत्नी का देवता है भगवान है। वह प्रेममयी सेविका है। नारी का हृदय अत्यन्त गंभीर है। वह प्रेम याचना नहीं करती। वह इतनी सरल हृदया है कि उसे जो कुछ भी लाकर दे दो वही ले लेती है। भारतीय स्त्रियों के हृदय की वस्तुस्थिति का पता भारतीय पुरुषों को अधिकतर नहीं होता है। स्त्रियों को खाने–पीने को मिलता है, पहनने को कपड़े मिलते हैं, क्या यही उसके लिए पर्याप्त है? रात्रि के समय यदि बच्चे रोने लगें तो उसके पति लाल–पीले होने लगते हैं। बेचारी माता उस बच्चे को गोद में लेकर बैठती है, अपने पैरों का पालना बनाकर उसे झुलाती है। रात–रात भर कष्ट झेलती है। कहीं पति की निद्रा भंग न हो जाये इसके लिए वह कितने ही कष्ट सहती है। क्या पुरुष वर्ग उसकी सेवा और सहृदयता का मूल्य आंक पाता है– यह एक विचारणीय प्रश्न है। पति कैसा भी क्यों न हो, पत्नी उसकी संभाल करती है। वह कुटुम्ब की प्रतिष्ठा की रक्षा करती है, कुटुम्ब की मर्यादा का हमेशा ध्यान रखती है। वह स्वयं उपवास कर लेगी, पीसना, कूटना करेगी परन्तु कुटुम्ब के लोगों को प्रत्येक दृष्टि से सुख और आराम पहुंचायेगी। वह बच्चों का पालन–पोषण भी करेगी, यदि खाने को कुछ न होगा तो भी चूम–चूम कर हंसायेगी, बहलायेगी, स्वयं आंसू पीकर रह जायेगी, परंतु अपना दुख किसी से प्रगट नहीं करेगी। उसके दुखों को केवल वही जानती है, कितनी अशोभन विडम्बना है उसके सेवामय पारिवारिक जीवन की। पति का मुख निहारती रहती है। पति के नेत्र खिलें, होंठ हंसे कि उसे मानो मोक्ष मिल गया। पति के मधुर वचनों में उसे सब कुछ मिल जाता है। भारतीय नारी अपने पापी, दुर्गुणी, दुराचारी पति की भी सेवा करती है। वह उसके स्वभाव और अपने प्रति, प्रतिकूल व्यवहार में भी रंचमात्र दोषदृष्टि न रखकर उसके प्रति पूर्ण समर्पित रहती है तथा उसका सुख संवर्धन करती है। एक बार जिसके साथ गठबंधन हो चुका है वह तोड़ा कैसे जा सकता है। समस्त नारी जाति विशेषतः भारतीय नारी मातृत्व की प्रतीक है। माता की दृष्टि से भारतीय नारी की बड़ी महिमा है। माता अपनी संतान के जीवन को प्रत्येक स्तर पर संभाल रखती है। वह स्नेह, आशीष तथा अभयदान की त्रिवेणी है। वस्तुतः वह ईश्वर का ही स्वरुप है। भक्तों ने माता के रुप में ईश्वर की भक्ति की है, क्योंकि ईश्वर का मुख्य कर्म सबका रक्षण–पोषण और अभयदान है, तो यही संसार में माता करती है।

महात्मा गांधी ने स्त्री धर्म को सेवा और नम्रता माना है! सेवा और नम्रता स्त्रियों के सहज प्राप्त अधिकार हैं। भारत में ये दोनों आदर्श स्त्रियों के जीवन को उन्नत कर रहे हैं। जबकि पश्चिम में खासतौर पर शिक्षित वर्ग में इन आदर्शों को तिलांजलि दे दी गई है और स्वतंत्रता तथा समानता आदर्श बन गयी है। यह किसलिए, सच्ची सेवा गुलामी नहीं, स्वतंत्रता ही है। सच्ची नम्रता में असमानता नहीं, समानता ही होती है। कई बार सेवा गुलामी बन जाती है और नम्रता दीनता बन जाती है परन्तु इससे अपनी संस्कृति के उदात्त आदर्श छोड़कर पाश्चात्य आदर्श ग्रहण करने की कोई जरुरत नहीं।

हम अपने आदर्शों के योग्य बनने का प्रयत्न करें और जितनी मात्रा में हमारा यह प्रयत्न होगा उतनी ही मात्रा में हमारा जीवन पवित्र और स्वार्थत्यागी बनेगा। पश्चिम में स्वतंत्रता अक्सर स्वच्छन्दता और स्वार्थ परायणता में बदली हुई पायी जाती है और समानता भयंकर प्रतिस्पर्धा में बदली हुई देखी जाती है। पश्चिम में जो असंतोष और अशांति आज जहां–तहां नजर आती है उसका कारण यह मालूम होता है कि स्त्री–पुरुष अपने–अपने धर्म को भूलकर प्रतिस्पर्धा में उतर आये हैं। स्त्री स्वधर्म छोड़कर पुरुष का धर्म अपनाकर आत्मदर्शन प्राप्त नहीं कर सकती, केवल सेवा और नम्रता का सहज प्राप्त अधिकार अपनाकर ही कर सकती है।

– ग्राम हिनौतिया, जिला गुना, म.प्र. मो–9993269165

पिकनिक जो यादगार बन गई

इंजी. शम्भूसिंह रघुवंशी

उस दिन को मैं शायद जीवन पर्यन्त नहीं भूल पाऊंगा, भूलूंगा भी कैसे? वह दिन वास्तव मे मेरे स्मृति पटल पर अंकित हो गया है वह दिन था 20 सितम्बर, रविवार 1982। उस दिन हम सपरिवार विदिशा नगर में बेतवा नदी के तट पर स्थित एक मंदिर के समीप महल घाट पर पिकनिक मनाने गये थे। मेरे परिवार के साथ–साथ श्री गोविंद भटनागर, लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग में उ.श्रे.लि. श्री यादवजी पोस्ट एवं टेलीग्राफ विभाग एवं एक मित्र श्री सुभाष जैन उपयंत्री भी गए थे।

इस पिकनिक के आयोजन हेतु श्री भटनागर एवं यादवजी काफी समय से प्रयासरत थे। मेरी सहमति नहीं मिलने के कारण विलम्ब हो रहा था परन्तु एक दिन इन दोनों महानुभावों ने मेरी बिना स्वीकृति के ही पिकनिक हेतु आवश्यक सामग्री क्रय कर ली और अनायास ही हमें 20 सितम्बर 1982 को प्रातः पिकनिक पर चलने का आग्रह किया। चूंकि वे अनेकों बार इस हेतु आग्रह कर चुके थे अतः मैंने अपनी स्वीकृति दे दी।

खैर, 20 सितम्बर 1982 को हम सभी लोग स्नानादि से निवृत्त होकर पिकनिक स्थल पर पहुंचने के लिए तैयार हुए अकस्मात वर्षा होने लगी। श्री यादवजी तांगा लेने जा चुके थे और जब तांगा लेकर घर आये हमने उसमें सामान रखा तो अधिक वर्षा के कारण सामान भीगने लगा। अतः हमें अपनी सामग्री उठाकर वापिस घर में रखना पड़ी। चूंकि बच्चे भी सामान के पूर्व ही तांगे में बैठ चुके थे ऐसे में उन्हें भी उतार कर दूसरे घर में बिठाना पड़ा। लगभग आधा घंटा वर्षा अनवरत जारी रही। वर्षा थमने के पश्चात् हम सभी तांगे एवं स्कूटर से अपने गन्तव्य के लिए प्रस्थान कर सके।

चूंकि बरसात हो चुकी थी अतः खाद्य सामग्री पकाने के लिए जो ईंधन था वह भी गीला हो गया था। जैसे–तैसे काफी मेहनत के पश्चात् अग्नि प्रज्जवलित कर सके। हम लोग अधिकांश कंडो के भरोसे ही अपना भोजन पकाना चाहते थे और वही साथ ले गये थे, परन्तु बगैर लकड़ियों के आग नहीं जला सकते थे, अतः मैंने अपने साथी श्री सुभाष जैन को शहर भेजकर लकड़ियां मंगाईं तब कहीं ठीक से आग जलाने में सफलता मिली, अन्यथा बिना लकड़ियों के काम चलाना आसान नहीं था।

खाने में दाल बाफले आदि का मीनू था और मैं इस कार्य में निपुण नहीं था, अतः छोटे–मोटे काम जैसे सब्जी, प्याज आदि काटने का कार्य अपने हिस्से में लिया। श्री यादव एवं भटनागर सा. ही दाल बाफले आदि बनाने में मुख्य भूमिका निभा रहे थे और हमारी सभी महिलाएं अधिकांशतः गप्पें मारने एवं बच्चों को सम्हालने में ही व्यस्त रहीं। दो महिलाओं को भगवान ने ही छुट्टी दे दी थी, तीसरी ने अपने पति से नोंकझोंक कर अपनी छुट्टी पा ली थी। अब बेचारे पतिदेव ही अपनी–अपनी जिम्मेदारी निभाने में लगे थे। उस दिन हमारे अतिरिक्त व्यापारी वर्ग भी काफी संख्या में पिकनिक मनाने हेतु बेतवा स्थित महल घाट पर पहुंचे थे। महल घाट पिकनिक स्थल के रुप में काफी अच्छा स्थान है, इसलिए अधिकांशतः लोग पिकनिक मनाने इसी स्थान पर पहुंचते हैं। यहां बेतवा तट पर देव स्थान होने से और भी आनंद की अनुभूति होती है। भोजन बनाने एवं ठहरने के लिए धर्मशाला, स्नान के लिये बेतवा नदी एवं आराधना के लिए शिव मंदिर के साथ–साथ बेतवा के किनारों का मनोरम दृश्य हमारे हृदय को आल्हादित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। बच्चों को उछलकूद एवं मनोरंजन के लिए बहुत ही निराला है बेतवा का प्रसिद्ध महल घाट, यहां मन प्रफुल्लित हो जाता है।

हॉ, तो उस दिन मैं, मित्र सुभाष जैन के साथ एक पेड़ के नीचे चबूतरे पर बैठकर व्यापारी वर्ग के लोगों के साथ अखबार पढ़ रहे थे, जबकि हमारे अन्य साथी धर्मशाला के अंदर भोजन व्यवस्था में व्यस्त थे। अचानक हमने देखा के मधुमक्खियों का एक झुंड हमारी तरफ आ रहा है इसे देखकर कुछ लोग भाग खड़े हुए और कुछ लोग इस उम्मीद में वहीं बैठे रहे कि मधुमक्खियां हमें नहीं काटेंगी, भागने वालों के पीछे ही दौड़ेंगी और वे एक–एक कर सभी लोगों पर टूट पड़ीं। चूंकि हम भी भागने वालों में नहीं थे अतः उन्होंने हम पर भी भरपूर गुस्सा निकाला और हमें काट–काट कर हनुमान बना दिया। मैं, मित्र सुभाष जैन और एक सेठ सा. पेपर पढ़ते–पढ़ते इन क्रोधित मधुमक्खियों का शिकार बन गये। हमने ईश्वर को याद किया सोचा शायद मधुमक्खियों हमें निरपराध समझकर क्षमा कर दें परन्तु उन्होंने एक न सुनी। वहां उपस्थित सभी लोगों को इन्होंने भांगड़ा, कुचीपुड़ी या कहूं जितने तरह के नृत्य ईजाद हुए हैं सभी करा दिये। ऐसा लग रहा था जैसे यहां कोई नृत्य नाटिका का मंचन हो रहा है। मधुमक्खियों के गुंजन में हम सभी ने अच्छा–खासा नृत्य

किया और जब इनका तांडव शान्त होता नहीं दिखा तो हमने बेतवा के जल में शरण लेकर अपने बचाव का असफल जतन किया। परन्तु इन्होंने यहां भी सभी को राक एण्ड रोल करा दिया। जो लोग भाग गये थे उन्हें इतने डंक नहीं लगे होंगे जितने हमें लगे। हमारे पास बैठे हुए सेठजी का तो और भी बुरा हाल था उन्हें गंजे सिर में इतने डंक मारे जैसे सेठजी ने फिर से बाल उगाने का इन्हें ही ठेका दिया हो, सेठजी के गंजे सिर में इतने डंक थे जैसे पुनः बाल उग आये हों। मधुमक्खियों के डंक पूरे शरीर के अंग–अंग के साथ नंगे सिर पर आलपिनों की तरह चुभे थे। हमने बेतवा के पानी में अनेकों डुबकियां लगाईं परन्तु वे पानी में भी पीछा नहीं छोड़ रही थीं। कष्ट से हम सभी का बुरा हाल था। मित्र सुभाष जैन बार–बार अपने ''णमोकार मंत्र'' का जाप कर रहे थे परन्तु यहां कोई मंत्र काम नहीं आया। हमें सुजा–सुजाकर इन्होंने ऐसी सूरत बना दी थी कि कष्ट के समय में भी हम एक दूसरे की सूरत देखकर हंसने को मजबूर भी थे।

सेठजी के कुर्ते के अन्दर मधुमक्खियां प्रवेश कर गईं। वहां काटा सेठजी ने कुर्ता धोती सब उतार फेंकी परन्तु उन्होंने नहीं छोड़ा। सेठजी के कुर्ता उतारकर फेंकने से उसमें रखी रेजगारी और नोटों की वारिस हो गई, परन्तु सेठजी को रोजगारी एवं रुपये बीनने का मौका ही नहीं मिला, उनके गंजे सिर को ही मधुमक्खियों ने जैसे अपना मुख्य अड्डा बना लिया था। हम सभी ने मधुमक्खियों को अपने पास से भगाने का प्रयास किया परन्तु सभी असफल साबित हुए। उस दिन ऐसा लग रहा था जैसे किसी महापाप या बड़ी भूल की सजा ईश्वर ने हमें दी है, ठीक इसी तरह का माहौल धर्मशाला के अंदर भी था, वहां भी भगदड़ गची हुई थी।

उस दिन पानी बरसने से भी वातावरण में काफी ठंडक थी। मैने अपने विवेक से पानी में उतरकर और लोगों से भी कहा जिससे कि कुछ हद तक आराम मिल सके परन्तु पानी के अंदर भी शरीर से चिपकी हुई मधुमक्खियां डंक मारती रहीं। हम उन्हें हाथों से छुड़ा–छुड़ा कर पानी में डुबोते रहे लेकिन सब व्यर्थ रहा। वे हमें लगातार डंक मारती रहीं। उनके डंक हमारे शरीर पर बालों की तरह उग आये थे और ऐसा आभास हो रहा था मानों हमारे बदन में असंख्य आलपिन चुभा दिये गये हैं। पानी के अंदर रहने से मधुमक्खियों के डंक के साथ–साथ ठंड भी सता रही थी। काफी समय पश्चात् जब हम पानी से बाहर आये तो लोग हमें पहचानने का प्रयास कर रहे थे।

सेठजी को मधुमक्खियों के काटने से उल्टियां होने लगी थीं। उन्हें कष्ट सहन नहीं हुआ, वहां डाक्टर बुलाना पड़ा। मैंने भी दवाएं लीं, परन्तु कोई फायदा नहीं मिला। शरीर पर जहां भी अधिक सूजन थी वहां सिकाई की गई फिर भी आराम नहीं मिला। चेहरा एवं हाथ–पैर सूजकर विचित्र लग रहा था मानों हम जापानी या चीनी हैं। मेरी आंखें वैसे ही छोटी हैं और सूजन के कारण ढंग से दिखाई भी नहीं दे रहा था। आंख, कान, नाक सहित पूरा शरीर ही फूलकर कुप्पा हो गया था। सबसे बड़ी विशेषता यह रही कि मधुमक्खियों ने महिलाओं, बच्चों एवं भोजन पकाने वाले लोगों को तनिक भी कष्ट नहीं पहुंचाया, शायद उनकी हम फालतू बैठे हुए लोगों से कोई पुरानी दुश्मनी थी जो उन्होंने सभी को दौड़ा–दौड़ा कर डंक मारे।

उस दिन हमारा चेहरा ऐसा हो गया था जैसे कि मेले में आने वाले कुछ विशेष प्रकार के दर्पण में हमें विचित्र प्रकार के चेहरे दिखाई देते हैं। लोग हमें देखकर अपनी हंसी नहीं रोक पा रहे थे। वास्तव में हमारी स्थिति भी अत्यन्त दयनीय एवं हास्यास्पद लग रही थी। जैसे–तैसे हमने अपने रुमाल से सेंकते हुए भोजन ग्रहण किया, परन्तु हम दोनों– मैं और सुभाष जैन– का तो भोजन का स्वाद और पिकनिक का मजा ही किरकिरा हो गया था। लगभग एक माह तक हम दोनों मित्र अपने चेहरे को रुमाल से ढांक कर घर से बाहर निकलते रहे, इसके बाद धीरे–धीरे हमारा शरीर सामान्य स्थिति में आ सके। शायद ही मैं उस पिकनिक को जीवन पर्यन्त भूल सकूं।

— मो–9425762471

साईंबाबा मंदिर स्थापना उत्सव

भोपाल। नेहरु नगर स्थित साईंबाबा मंदिर की स्थापना की आठवीं वर्षगांठ धूमधाम से 27 अप्रैल को पूरे भक्तिभाव और श्रद्धा के साथ मनाई गई। युवा साईं समिति नेहरु नगर के अध्यक्ष राहुल रघुवंशी ने बताया है कि इस अवसर पर महाआरती, खिचड़ी वितरण एवं पूरी भव्यता के साथ सुंदरकांड के पाठ का आयोजन किया गया। श्रद्धालुओं के आशीर्वाद और साईंबा का की कृपा से बहुत ही भव्य आयोजन हुआ। साईं की कृपा हम सब पर बनी रहे इसी कामना के साथ यह आयोजन किया गया था। श्री रघुवंशी ने उन सभी लोगों को धन्यवाद दिया है जिन्होंने इस आयोजन को सफल बनाने में अपना सहयोग दिया। उन्होंने संकल्प व्यक्त किया कि इस वर्ष की तरह हर वर्ष और अच्छे ढंग से मंदिर का स्थापना दिवस समारोह मनाया जाएगा।

युवाओं में नशाखोरी की प्रवृत्ति मिटाने छेड़ें अभियान

अभिमत

सुरेंद्र सिंह रघुवंशी,एडवोकेट,

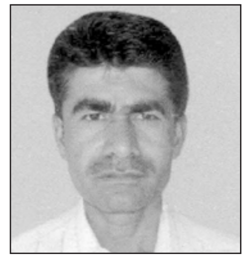

इन दिनों यह देखा जा रहा है कि रघुवंशी समाज में जो प्रमुख कुरीतियां पैर फैला रही हैं उनमें नशाखोरी प्रमुख है और युवा पीढ़ी में यह तेजी से पैर पसार रही है। समाज में जो प्रमुख कुरीतियां हैं उनमें नशाखोरी की आदत के तहत शराब, बीड़ी, सिगरेट, अफीम, गांजा, भांग, चरस आदि की जकड़न में युवा पीढ़ी बुरी तरह से उलझती जा रही है। समाज में जो नैतिक पतन हो रहा है उसी का कारण है कि राजनीति के क्षेत्र में भी समाज का प्रभाव सीमित होता जा रहा है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि समाज में नशाखोरी की प्रवृत्ति से युवाओं को बचाने के लिए बड़े पैमाने पर सामाजिक जागृति का अभियान छेड़ा जाए। यदि इस प्रवृत्ति से समाज बच जायेगा तो फिर पंचायत से लेकर संसद तक वह अपनी उपस्थिति दर्ज करा सकता है और कोई भी ताकत रघुवंशी समाज को आगे बढ़ने से रोक नहीं सकती। इसके साथ ही आजकल यह प्रवृत्ति भी आपसी रंजिश, ईर्ष्या व द्वेष के चलते समाज में बढ़ रही है कि यदि किसी के शादी–विवाह के सम्बंध हो जाते हैं तो बने हुए सम्बंधों का विच्छेद कराने में लोग अपनी ताकत लगा देते हैं।

ईर्ष्या, जलन, पाखंड, मानसिक विकृति समाज में बढ़ रही है। जब तक पूर्णतया समाज में चेतना जागृत नहीं होगी तब तक रघुवंश की प्राचीन परम्परा के अनुसार समाज को गौरवशाली स्थान नही मिल पायेगा। नई पीढ़ी को रघुवंश महाकाव्य अवश्य पढ़ना चाहिए जिसमें बताया गया है कि हमारे पूर्वजों महाराजा मनु से लेकर भगवान श्रीराम तक यह परम्परा रही है कि––

''रघुकुल रीति सदा चलि आई
प्राण जाएं पर वचन न जाई।'' तथा
''रघुवंशन कर सहज सुभाउ
मन कुपंथ पर धरेय न काऊ।''

आज आवश्यकता इस बात की है कि इन चौपाइयों का रघुवंशी समाज अनुसरण करे एवं समाज के बुजुर्ग तथा प्रतिष्ठित लोग जामवंत की भूमिका में आयें और युवाओं को हनुमान बनने की प्रेरणा दें, ऐसा होने पर ही समाज का सर्वांगीण विकास हो सकेगा। यदि इस पर ध्यान नहीं दिया गया तो फिर यह कहावत ही चरितार्थ होगी कि– अब पछताए होत क्या चिड़िया चुग गई खेत।–

रघुवंशभूषण महाकाव्य श्रीरामचरित मानस के चरयिता गोस्वामी तुलसीदास जी ने भगवान राम के विशाल हृदय और उदाहरता का बखान करते हुए कहा है कि उन्होंने बालि का वध करने के बाद सुग्रीव को राजा बनाया जो कि उसका छोटा भाई था। निषाद को भी राजा बनाया जो हरिजन जाति का था। भगवान राम ने भीलनी शबरी के जूठे बेर खाये, केवट से चरण धुलवाये, गीध का जो कि अधम जाति का था उसका स्वयं अपने करकमलों से दाह संस्कार कर मुक्ति दिलाई। उल्लेखनीय है कि यह सौभाग्य कई भक्तों और योगियों को भी नहीं मिलता है। भगवान श्रीराम ने गिलहरी पर भी हाथ फेरा क्योंकि समुद्र पर पुल निर्माण के समय उसने भी सहयोग किया था। लंका जीत कर रावण के छोटे भाई विभीषण को राजपाट भी श्रीराम ने सौंप दिया। इन सभी उदात्त भावनाओं को समझ कर यदि रघुवंशी समाज अनुसरण करता है तो उसका फिर वर्चस्व स्थापित हो सकता है। आज आवश्यकता इस बात की है कि

हम रामचरित मानस को गहराई से पढ़ें,समझे और उसमें दिए गए संदर्भों को समझते हुए उसे अपने जीवन में उतारें तो फिर समाज तेजी से प्रगति के पथ पर अग्रसर हो सकेगा। यदि समाज को वास्तव में संगठित करना है तो स्वयं अपने अंदर श्रीराम के आदर्शों को अंगीकार करना होगा।

– पचामा, उदयपुरा, मो.9993044340

रघुकुल भूषण गुरुदेव कनक बिहारी का सम्मान

भोपाल। राजधानी के मानस भवन में आयोजित सम्मान समारोह में सन्त शिरोमणि रघुकुल भूषण महायज्ञकर्ता गुरुदेव कनक बिहारी जी का सम्मान किया गया। गुरुदेव ने महायज्ञ में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रुप से समर्पण एवं सहयोग करने वाले सभी वर्गों के प्रबुद्धजनों का सम्मान करते हुए आशीर्वाद रुपी प्रशंसा–पत्र प्रदान किया।

सुख समृद्धि में आध्यात्म विज्ञान का योगदान

पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य

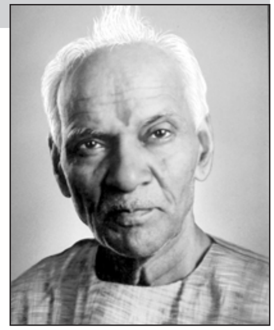

आज कोई भला आदमी यह पसन्द नहीं करता कि उसका प्रिय सम्बंधी आध्यात्म मार्ग में दिलचस्पी ले। माता को जब यह पता चलता है कि हमारा लड़का साधु–संतों की, पण्डे–पुजारियों की संगत में बैठता है तो उन्हें इससे क्रोध आता है और लड़के को रोकने का प्रयत्न करते हैं, स्त्री को पता चले कि मेरा पति बम्भोला बाबाओं के पास आने–जाने लगा है तो वह ऐसी चिंतित हो जाती है मानों कोई भयंकर विपत्ति उस पर आने वाली है। सच्चा हित चाहने वाला प्रियजन अपने प्रेम पात्र को योगियों के, अध्यात्मवादियों के चक्कर में फंसने से बचाने की पूरी–पूरी कोशिश करता है, क्योंकि यह सच्चाई सर्वविदित हो चुकी है कि ऐसे लोगों के सम्पर्क में आने से मनुष्य निकम्मा, आलसी, दुर्गुणी, विचार शून्य, कल्पना प्रिय एवं गैर जिम्मेदार हो जाता है। सभी कोई अपने प्रिय पात्र को उन्नतिशील देखना चाहते हैं, उसे ऐश्वर्यवान,तेजस्वी और सुखी बनाना चाहते हैं, जब इच्छा के विपरीत उसे भिक्षुक, आलसी, नशेबाज, निठल्ले, दीन–दरिद्र, घृणित, मिथ्यावादी बनाने के मार्ग पर चलता देखते हैं तो उनका क्रोध करना और चिंतित होना बिलकुल स्वाभाविक है। ठीक भी है जो अपने को अनर्थ में गिरा हुआ देखकर चिंतित न हो, वह अपना कैसा, नदी में डूबते हुए, गड्ढे में गिरते हुए, आग में जलते हुए मित्र को बचाने और रोकने का प्रयत्न न करे वह मित्र कैसा?

प्राचीनकाल में ऐसा नहीं था। उस समय माता–पिता अपने बालकों को ऋषियों के आश्रम में भेजकर शिक्षा–दीक्षा के सम्बंध में निश्चिन्त हो जाते थे। गरीब से लेकर राजा तक अपने बालकों के लिए यही हितकर समझते थे कि उन्हें महात्माओं के सुपुर्द कर दिया जाए क्योंकि अक्षर ज्ञान की शिक्षा के अतिरिक्त वहां आध्यात्मिक शिक्षा की भी व्यवस्था रहती थी। चिरकालीन अनुभव ने सिद्ध कर दिया था कि जीवन सफल, सुखी और सम्पन्न तभी हो सकता है जब उसका निर्माण आध्यात्मिक आधार पर किया जाए। इस शिक्षा के बिना अपूर्णता दूर नहीं होती और वह दृष्टिकोण विकसित नहीं होता जिसके आधार पर मनुष्य अपने लिए और दूसरों के लिए आनंददायक प्रमाणित होता है। कृष्ण को मथुरा से तीन सौ कोस दूर उज्जैन नगरी के निकट क्षिप्रा तट पर संदीपन ऋषि के आश्रम में भेजा गया था। राम को वशिष्ठजी ने आरंभिक शिक्षा दी थी और विश्वामित्र के आश्रम में बहुत समय तक अध्ययन किया था। धृतराष्ट्र और पाण्डु के पुत्रों को द्रोणाचार्य ने पढ़ाया था। समर्थ गुरु रामदास ने शिवाजी को तैयार किया था। इन ऋषियों के आश्रम में रहकर क्या राम, कृष्ण, पाण्डव, शिवाजी भिखमंगे, दरिद्री, निठल्ले, नशेबाज, अकर्मण्य और गैर जिम्मेदार बनकर निकले थे? क्या उन्होंने चिमटा बजाने, गांजा पीने, भभूत रमाने, भीख मांगने, तालियां पीट–पीट कर नाचने का पेशा अख्त्यार किया था।

असल में आध्यात्म शिक्षा मानव जीवन को सुसंचालित करने की एक वैज्ञानिक पद्धति है। सफल जीवन बनाने की कलापूर्ण विद्या है जिसके द्वारा बलवान, वीर्यवान, तेजस्वी, योद्धा, धनी, प्रतिष्ठित, प्रिय, उच्च पदारुढ़ अधिकारी, विद्वान एवं महापुरुष बना जा सकता है। अपने को सुख–शांतिमयी, उल्लासपूर्ण, आनंदमयी स्थिति में हर घड़ी रखा जा सकता है। मनुष्य चाहे कुछ भी व्यवसाय करता हो, किसी पक्ष के विचार रखता हो, कैसे ही मार्ग पर चल रहा हो, आध्यात्म शिक्षा उसके लिए व्यवहारिक रुप से सहायता करती है और उन्नति के पथ पर निरंतर आगे बढ़ाती है। इसमें अवनति, असफलता और अकर्मण्यता की ओर ले जाने वाला एक भी तत्व नहीं है। वर्तमान समय में गोरी जातियां योग के आरंभिक नियमों का पालन कर रही है, उन जातियों ने आध्यात्मिक नियमों का उपयोग राजसी सुख प्राप्ति के लिए किया है तदनुसार स्वस्थ, हथौड़ों से गढ़े सुंदर शरीर, हंसमुख चेहरे, विलास, वैभव, धन, ऐश्वर्य उन्हें प्राप्त है। हजारों लाखों मील जल–थल पार करके उनने अनेक भूखंडों में अपनी सत्ता स्थापित कीं। यह सब केवल चालाकी या कूटनीति से ही नहीं हो जाता उसमें व्यक्तिगत सदगुण भी होते हैं, शरीरोन्नति और मानसिक शक्तियों के विकास की ओर वे पूरा–पूरा ध्यान देते हैं, अपने को कष्ट सहिष्णु, परिश्रमी, नियमित, वीर, साहसी, कर्तव्य परायण बनाते हैं, तब इस योग्य होते हैं कि संसार में अपनी विजय पताका फहरावें। भारतीय आध्यात्मवेत्ता उपरोक्त गुणों का अधिक उपयोग सात्विक उद्देश्यों के लिए और कम उपयोग राजसी उद्देश्यों के लिए

कराते हैं। गोरी जाति वालों ने आध्यात्म नियमों को तो भली प्रकार हृदयंगम किया है पर उनका उपयोग अधिकांश राजसी सुख के लिए किया। बस इतना ही अन्तर रहा अन्यथा यदि वे लोग अपने सदगुणों का, तप भावना का उपयोग सात्विक उद्देश्यों के लिए करते तो यह पृथ्वी स्वर्ग बन जाती और वह दृश्य उपस्थित होते जो प्राचीनकाल में भारतीय महापुरुषों ने सारे भूमंडल में अपनी सात्विक सेवा भावना द्वारा उपस्थित किए थे।

हमारे देश में सार्वजनिक रुप से आध्यात्मिकता का लोप सा हो गया है। यों कहने को तो छप्पन लाख पेशेवर ऋषि महात्मा इस देश में चरते हैं और करीब–करीब उतने ही बिना पेशे वाले 'भगत' लोग मिल सकते हैं पर इनमें ऐसे लोग चिराग लेकर ढूंढने पड़ेंगे जो योग का वास्तविक अर्थ समझते हों। घोर तामसिकता अपनी सखी सहेलियों–अविद्या, विचार शून्यता, हरामखोरी, दांभिकता के साथ संगठित और सुसज्जित रुप से आध्यात्मिकता के साथ आ विराजी हैं। राक्षसी पूतना ने कृष्ण को मार डालने के लिए गोपियों का रुप बनाया था। आज तामसी दांभिकता मनुष्य तत्व की हत्या करने के लिए बड़े–बड़े मनमोहक मायावी रुप बनाकर भारत भूमि में विचर रही हैं। पूतना का मायावी रुप भी ब्रजवासियों के मन में विश्वास पैदा न कर सका था। आज गृह त्यागी, वस्त्रहीन, जटाधारी माया को देखकर भी लोगों की अन्तरात्मा यह स्वीकार नहीं करती कि वह लोग स्वयं कुछ उन्नति कर रहे हैं या इनके संसर्ग में आने वाला कोई दूसरा भी उन्नति कर सकता है। दिल से दिल को राहत होती है। सच्चाई सहस्त्र छिद्रों में होती हुई प्रकट होती है। आज यदि लोग आध्यात्मवादी वायुमंडल से बचने और बचाने का प्रयत्न करते हैं तो इसमें कुछ भी अनुचित नहीं है।

आज आध्यात्मिक क्षेत्र में ऐसे कंगले घुस पड़े हैं जिनमें पौरुष योग्यता, उपार्जन शक्ति, विवेक बल का बिलकुल अभाव है, अपने योग्यता बल से कुछ भी कर सकने में असमर्थ होते हैं, यहां तक कि पेट भरने के भी मोहताज होते हैं। यह लोग जब अपने त्याग के गीत गाते हैं तो हंसी रोके नहीं रुकती। हमें धार्मिक और आध्यात्मिक क्षेत्रों का पर्याप्त अनुभव है, भारतवर्ष के एक कोने से दूसरे कोने तक यात्राएं की हैं, भिखमंगों से लेकर विद्वान–संन्यासियों तक से घनिष्ठता रखने के अवसर प्राप्त हुआ करते हैं, हमारा अपना निजी अनुभव यह है कि इन क्षेत्रों में आधे से अधिक लोग ऐसे हैं जो जीवन में सफलता प्राप्त न कर सके, परिस्थितियों को इच्छानुकूल न बना सके, असमर्थ रहे, अपमानित हुए, नालायकी के कारण दुनियां से दुत्कारे गए, तब वे लोग हताश, उदास, दुखी, चिड़चिड़े होकर संसार को भवसागर मानकर अपने लिए एक काल्पनिक स्वर्ग की रचना करते हैं और उसमें बेपेंदी की उड़ाने उड़कर किसी प्रकार अपना मन बहलाते हैं। क्या यह लोग त्यागी हैं? क्या यह सन्यासी हैं? क्या यह आध्यात्मवादी हैं? यदि योग्यता और अकर्मण्यता की प्रतिक्रिया का नाम ही आध्यात्मवाद है तो हर एक व्यक्ति को दूर से ही उसे नमस्कार करना चाहिए।

बात दरअसल में उससे बिलकुल उल्टी है। आध्यात्मवाद एक प्रकार का उत्कट पराक्रम है। सच्चा आध्यात्मवादी सबसे पहले अपनी शारीरिक और मानसिक योग्यताओं को अपने पौरुष द्वारा बढ़ाता है और उन्हें इतना उन्नत कर लेता है कि उसके बदले में संसार की बड़ी से बड़ी वस्तु खरीद सके। अष्ट सिद्धि, नव निद्धि उसके हाथ आ जाती है, अर्थात इतना सूक्ष्म बुद्धिमान और क्रिया कुशल हो जाता है कि अपनी बड़ी से बड़ी सांसारिक इच्छा को अल्प समय में पूरा कर सकता है। सत्य का सूर्य सदा के लिए अस्त नहीं हो सकता। उल्लू और चमगादड़ों को प्रसन्न करने वाली निशा का आखिर अन्त होता ही है। अब वह युग निकट आ गया है जब सच्चाई प्रकट होगी और उसके प्रकाश में सब लोग वास्तविकता का दर्शन कर सकेंगे। नवयुग की स्वर्णिम उषा कमल पुष्पों की तरह मुस्कराती हुई विकसित होती चली आ रही है। वह आध्यात्म तत्व को अब और अधिक विकृत न होने देगी वरन उसका शुद्ध रुप सर्व साधारण के सामने प्रकट कर देगी। जिस भोजन के अभाव में क्षुधित भारत चिरकाल से तड़प–तड़प कर कण्ठप्रण हो रहा है वह अमृत तत्व अब उसके सम्मुख शीघ्र ही रखा जाने वाला है। राष्ट्र और जातियां जिस स्त्रोत से शक्ति रुपी जल पाकर फलती–फूलती हैं, वह व्यवहारिक आध्यात्मवाद अपने विशुद्ध रुप में नव प्रकाश के साथ प्रकट होता हुआ चला आ रहा है। अदृश्य तत्वों को देखने वाली आत्माएं देख रही हैं कि भारत माता के मस्तक को उसी पुराने स्वर्ण मुकुट से सजाया जायेगा और आध्यात्मिक अस्त्र–शस्त्रों से सुसज्जित भारतीय संतति उसके विजय घोष से विश्व को गुंजित करेगी।

सत्य की खोज करने वाले व्यक्तियों को जानना चाहिए कि अध्यात्मवाद को जैसा कि आजकल तर्क और बुद्धि से विपरीत, निरर्थक कल्पना और दीन दरिद्री बनाने वाली आलस्यमय बिडम्बना समझा जाता

है, यथार्थ में वह वैसी वस्तु नहीं है। सिंह की खाल ओढ़कर गधा अपने को सिंह साबित करे तो इसमें सिंह की प्रतिष्ठा नहीं घटती, इसके दोष या तो धोखेबाज गधे पर हैं या भ्रम में पड़ जाने वाले भोले लोगों पर। लाख वर्ष तक लाख गधे सिंह की खाल ओढ़े फिरें फिर भी सिंह की महानता, उसके गौरव को कम न होने देगी। अध्यात्मवाद अपनी अनन्त अदभुत शक्तियों के कारण असली सिंह है, उसकी महत्ता में रत्तीभर भी अंतर नहीं आता, भले ही लाखों ठग और मूर्ख उसका दुरुपयोग करके बदनाम करते रहें। आध्यात्मवाद वह विद्या है जिसको सर्वोपरि विद्या–ब्रह्म विद्या कहा गया है। भारतीय विश्वास है कि ब्रह्म विद्या को जाने बिना ज्ञान पूर्ण नहीं हो सकता। ऋषि उद्दालक का पुत्र श्वेतकेतु गुरु के आश्रम में अनेक विद्याओं का चिरकाल तक अध्ययन करने के उपरान्त घर वापिस लौटा तो पिता ने उसकी परीक्षा ली और जब ब्रह्म विद्या की कमी देखी तो पुनः उसे गुरु गृह को वापिस भेज दिया। फिर भी जब कमी रही तो पिता ने स्वयं उस अपूर्णता को पूरा कराया। तात्पर्य यह है कि उस समय ब्रह्म विद्या की महत्ता को सब लोग भलीभांति जानते थे और समझते थे यदि यह ज्ञान न आया तो मनुष्य 'पढ़ा गधा' भले ही बना रहे पर सफल जीवन, समृद्ध–सम्पन्न न बन सकेगा।

जिस विचार पद्धति से मनुष्य अपने जीवन में प्रतिदिन आने वाली समस्याओं को आसानी से सुलझा सकता है, सही नतीजे पर पहुंच सकता है, ठीक मार्ग का अवलम्बन कर सकता है, उसे अध्यात्मवाद कहते हैं। व्यापार में अधिक लाभ, नौकरी में अधिक सुविधा और तरक्की, पत्नी प्रेम, पुत्र, शिष्य और सेवकों का आज्ञा पालन, मित्रों का भ्रातृभाव, गुरुजनों का आशीर्वाद, परिचितों में आदर, समाज में प्रतिष्ठा, निर्मल कीर्ति, अनेक हृदयों पर शासन, निरोग शरीर, सुंदर स्वास्थ्य, प्रसन्नचित्त, हर घड़ी आनंद, दुख–शोकों से छुटकारा, विद्वता का सम्पादन, तीव्र बुद्धि, शत्रुओं पर विजय, वशीकरण का जादू, अकाट्य नेतृत्व, प्रभावशाली प्रतिभा, धन–धान्य, इंद्रियों के सुखदायक भोग, वैभव–ऐश्वर्य आदि सब बातें प्राप्त करने का सच्चा सीधा मार्ग अध्यात्मवाद है, इस पथ पर चलकर जो सफलता प्राप्त होती है वह अधिक दिन ठहरने वाली, अधिक आनंद देने वाली और अधिक आसानी से प्राप्त होने वाली होती है। एक शब्द में कहा जा सकता है कि सारी इच्छा–आकांक्षाओं की पूर्ति का अद्वितीय साधन अध्यात्मवाद है। इस तत्व का जो जितनी अधिक मात्रा में, जिस निमित्त संग्रह कर लेता है वह उस विषय में उतना ही सफल हो जाता है। सच्ची सफलता की सारी भित्ति इसी महाविज्ञान के ऊपर खड़ी हुई है फिर चाहे उसे अध्यात्मवाद के नाम से पुकारिये अथवा इच्छाशक्ति, पौरुष कुशलता आदि कोई और नाम रखिए। अध्यात्मवाद पुरुषार्थी लोगों का धर्म है। तेजस्वी, उन्नतिशील, महत्वाकांक्षी और आगे बढ़ने की इच्छा रखने वाले ही उसे अपना सकते हैं। मुक्ति सबसे बड़ा पुरुषार्थ है इसे वे लोग प्राप्त कर सकते हैं जिनमें अटूट धैर्य, साहस और पराक्रम है, कायर और काहिल लोग अपने हर काम को कराने के लिए देवी, देवता, सन्त–महन्त, भाग्य, ईश्वर आदि की ओर ताकते हैं। अपना हुक्का भी ईश्वर से भराकर पीना चाहते हैं ऐसे कर्महीनों के लिए उचित है कि किसी सनक में पड़े–पड़े झोंके खाया करें और खयाली पुलाव पकाया करें। सच्चे आध्यात्मवाद का दर्शन उन बेचारों को शायद ही हो सके।

अभिमत

रघुकलश में प्रकाशित लेख पठनीय एवं अनुकरणीय

रघुकलश का फरवरी 2017 का दाम्पत्य विशेषांक एवं जनवरी–मार्च 2017 अंक अत्याधिक पठनीय और अनुकरणीय है। दाम्पत्य विशेषांक प्रकाशन हेतु अरुण पटेल, संपादक रघुकलश एवं शम्भूसिंह रघुवंशी जिला एवं सत्र न्यायाधीश हरदा कोटिशः साधुवाद के पात्र हैं। ये दोनों अंक मैंने पूरे पढ़े हैं और उसके बाद कह सकता हूं कि इनमें प्रकाशित सामग्री ज्ञानवर्धक एवं अनुकरणीय है। जनवरी–मार्च 2017 अंक में सुरेंद्रसिंह रघुवंशी एडवोकेट, पचामा, उदयपुरा का आलेख ''शान शौकत और दिखावे की दौड़ में शामिल रघुवंशी समाज'' सच्चे अर्थों में सटीक, सामयिक और सामाजिक प्रतिबिम्ब का दिग्दर्शन कराता है। सुरेंद्रसिंह जी ने समाज की ज्वलंत व सामयिक परिस्थितियों में फिजूलखर्ची से बचने की ओर ध्यान आकर्षित कर एक बहुत ही महत्वपूर्ण मुद्दे पर सामाजिक बंधुओं का ध्यान खींचा है जिसके लिए वे बधाई के पात्र हैं। मेरा सुझाव है कि रघुकलश पत्रिका के प्रत्येक जिले के अलग–अलग विशेषांक प्रकाशित किए जाएं जिसमें समाज के सभी स्थानों की धर्मशालाओं के विवरण तथा सामाजिक बंधुओं की जानकारी हो। यदि ऐसा होता है तो स्वजातीय बंधुओं को एक दूसरे को समझने में मदद मिलेगी। इसके साथ ही वृन्दावन, अयोध्या, भोपाल, ओंकारेश्वर, इंदौर आदि में जो सामाजिक भवन और धर्मशालाएं बनी हैं उनका सामाजिक बंधु लाभ उठा सकते हैं।

– **अवधेश रघुवंशी,** पनवारी हाट, गुना

ज्योतिष कलश

ज्योतिर्विद विजय मोहबे
ई-2/333, अरेरा कालोनी, भोपाल :म.प्र.:
मो.नं. 09827331388

जुलाई माह 2017

प्रमुख तीज–त्यौहार– ता. 2 भड़ली नवमी, ता. 4 देवशयनी ग्यारस, ता. 6 प्रदोष व्रत, ता. 12 गणेश चतुर्थी व्रत, ता. 26 हरियाली तीज, ता. 28 नागपंचमी।

मेष– कार्यक्षेत्र में बदलाव का योग। वस्तु विशेष की खरीदी पर अत्याधिक व्यय होगा। राजनीतिज्ञों को किसी संकट का सामना करना पड़ेगा। विद्यार्थी वर्ग में शिक्षा की चिंता रहेगी। दूर की यात्रा से बचें।

बृषभ– स्वजनों का कार्यों में सहयोग मिलेगा। नौकरी में महत्वपूर्ण अवसर बनेंगे। धार्मिक कार्य सम्पन्न होंगे। व्यावसायिक प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ेगा। जनसंपर्क का लाभ मिलेगा।

मिथुन– प्रेम प्रसंगों में उलझन रहेगी। शिक्षा का लाभ मिलेगा। आय के नये स्त्रोत बनेंगे। स्वार्थी तत्वों से सावधान रहें। बड़े पूंजीनिवेश से बचें। युवा वर्ग में उत्साह रहेगा। नवीन वस्त्राभूषण, उपहार की प्राप्ति होगी।

कर्क– कामकाज की व्यस्तता रहेगी। पारिवारिक मनस्ताप को दूर करने का प्रयास करें। वाहन आदि क्रय करेंगे। बुजुर्गों की सलाह का लाभ मिलेगा। किसी शुभ कार्य की योजना बनेगी।

सिंह– व्यक्ति विशेष की मुलाकात आनंद देगी। ज्ञान के क्षेत्र में विस्तार होगा। पूर्व में किए गए कार्यों के उत्तम परिणाम प्राप्त होंगे। अधिकारों में वृद्धि होगी। घर के सजावटी सामानों पर धन खर्च होगा।

कन्या– पारिवारिक अशांति रहेगी। साहित्य–पत्रकारिता से जुड़े लोगों को पुरस्कार की प्राप्ति होगी। स्त्री वर्ग को पदोन्नति के योग। शिक्षा में सफलता प्राप्त होगी। व्यापार व्यवसाय के विस्तार की योजना बनेगी।

तुला– प्रतियोगिता परीक्षा की तैयारी पर पूर्ण ध्यान दें। बाहर रोजगार के अवसर मिलेंगे। धर्म–कर्म में रुचि बढ़ेगी। घर में रिश्तेदारों का आगमन होगा। आर्थिक स्थिति मजबूत रहेगी।

वृश्चिक– ज्यादा साहसिक या जोखिम भरे कार्यों से बचें अन्यथा अपयश का सामना करना पड़ेगा। प्रियजन से भेंट होगी। शासकीय कार्यों पर धन खर्च होगा। स्वास्थ्य में कमी रहेगी।

धनु– दूरदर्शिता से कार्य लें, जल्दबाजी न करें। मित्रों के व्यवहार से परेशानी होगी। संतान के कार्यों पर धन खर्च होगा। परिवार में नये सदस्य के आगमन से प्रसन्नता होगी। पुत्र योग बनता है।

मकर– आर्थिक तंगी रहेगी, व्यर्थ विवाद का भय रहेगा। युवा वर्ग को रोजगार में परिवर्तन का सामना करना पड़ेगा। मनोरंजन एवं भ्रमण के अवसर बनेंगे। अनायास धन लाभ के योग बनेंगे।

कुंभ– शासन–सत्ता के कार्यों में विलम्ब होगा। व्यर्थ की भागदौड़ रहेगी। व्यापार में धन लाभ। शत्रु परास्त होंगे। आपका प्रभाव बढ़ेगा। सामाजिक कार्यों में यश–सम्मान की प्राप्ति होगी।

मीन– भूमि विवाद में सफलता प्राप्त होगी। नये कार्य प्रयोजन बनेंगे। यात्रा के दौरान सावधानी रखें संतान, स्वास्थ्य, धन संबंधी चिंता दूर होगी। रचनात्मक दृष्टि से यह माह लाभदायक है।

अगस्त माह 2017

प्रमुख तीज त्यौहार– ता. 3 पुत्रदा एकादशी, ता. 5 प्रदोष व्रत, ता. 7 रक्षाबंधन, ता. 12 गोगा पंचामी, ता. 13 हरछठ, ता. 15 श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, ता. 24 हरतालिका तीज, ता. 25 गणेश चतुर्थी, ता. 26 ऋषि पंचमी, ता. 29 राधाष्टमी।

मेष– पारिवारिक आनंद में वृद्धि होगी। मन में संतोष रहेगा। बस्त्र–आभूषण के व्यापार–व्यवसाय में लाभ की प्राप्ति होगी। वैभव विलासिता के साधनों का विकास होगा। नये भवन में प्रवेश या आवास परिवर्तन के योग बनते हैं।

बृषभ– अधिकारी वर्ग से परेशानी होगी। व्यर्थ के मनमुटाव बनेंगे। कृप्या लापरवाही से बचें। व्यक्ति विशेष के मार्गदर्शन से कार्य–लाभ। पूंजी निवेश की योजना बनेगी। ससुराल पक्ष से लाभ होगा। यश–सम्मान बढ़ेगा।

मिथुन– पारिवारिक सौहार्द्र रहेगा। मनोरंजन या धार्मिक कार्य पर धन खर्च होगा। पारम्परिक कर्तव्यों को निर्वाह करने में समर्थ रहोगे। माता के स्वास्थ्य की चिंता रहेगी। आय में वृद्धि होगी। दूर–पास की यात्रा संभव है।

कर्क– मानसिक कष्टों से मुक्ति मिलेगी। व्यवहार कुशलता का लाभ होगा। उत्तेजक पदार्थों के सेवन से स्वास्थ्य में हानि भय रहेगा। कला के क्षेत्र में उन्नति के योग बनेंगे। कर्मचारी वर्ग का सहयोग मिलेगा।

सिंह– महत्वपूर्ण कार्यों में अनावश्यक विलम्ब होगा। व्यर्थ की चिंता बढ़ेगी। घन में मांगलिक कार्य बनेंगे। शादी योग्य युवक–युवतियों के रिश्ते भी आयेंगे। भौतिक

वसतुओं का संचय होगा। स्वार्थ से दूर रहें।

कन्या– दाम्पत्य जीवन में थोड़ी उथल–पुथल रहेगी। नकारात्मक रवैया अपनाने से बचें। बेरोजगारों को रोजगार की दिशा में किये गये प्रयास सफल होंगे। कोई शुभ समाचार प्राप्त होगा।

तुला– प्रेम प्रसंगों में सफलता प्राप्त होगी। मन प्रफुल्लित रहेगा। कलाकारों को सम्मान प्राप्त होगा। अभिनय या मॉडलिंग से लाभ होगा। कोई वस्तु विशेष गुमने से मन एकदम उदास होगा, संयम रखें।

वृश्चिक– विस्मयकारी परिस्थितियां बनेंगी। आपके अधिकारों का हनन होगा। क्रोध से बचें। समय को देखकर किसी से व्यर्थ बहस न करें। विद्यार्थी वर्ग में हर्ष रहेगा। परीक्षा के परिणाम अनुकूल रहेंगे।

धनु– व्यापार–व्यवसाय में विस्तार का लाभ मिलेगा। धार्मिक सत्संग आदि के प्रयोजन होंगे। स्त्री वर्ग में उत्साह रहेगा। कामकाज समय पर बनेंगे। नये वाहन का आनंद मिलेगा। पारिवारिक रिश्तों में मिठास रहेगी।

मकर– आध्यात्मिकता में रुचि बढ़ेगी। पड़ोसियों से मधुर संबंध बनेंगे। कफकारक रोगों का सामना करना पड़ेगा। आकस्मिक यात्रा के योग बनेंगे। धन का आना–जाना चलता रहेगा। निर्भीक विचारों से सम्मान बढ़ेगा।

कुंभ– पराक्रम में वृद्धि होगी। सोचे विचारे कार्य बनेंगे। स्त्री वर्ग का सहयोग मिलेगा। संतान की शिक्षा को लेकर चिंता बढ़ेगी। नेतृत्व की भावना रहेगी। राजनीति के क्षेत्र में जा सकते हैं।

मीन– बाहरी बाधाओं से मुक्ति मिलेगी। घर का वातावरण अच्छा रहेगा। व्यर्थ के शक्ति प्रदर्शन से बचें। वस्त्र व्यवसाय या मशीन व्यवसाय में धन निवेश का लाभ होगा। नौकरी में स्थान परिवर्तन के योग बनेंगे।

सितम्बर माह 2017

प्रमुख तीज त्यौहार– ता. 2 डोल ग्यारस, ता. 3 प्रदोष व्रत, ता. 5 अनन्त चतुर्दशी, ता. 16 इंदिरा एकादशी, ता. 19 पितृमोक्ष अमावस्या, ता. 21 शारदीय नवरात्र प्रारंभ, ता. 28 दुर्गाष्टमी, ता. 30 विजयादशमी।

मेष– दाम्पत्य जीवन सखमय रहेगा। रुके कार्य बनेंगे। धार्मिक यात्रा होगी। सद्–व्यवहार का लाभ मिलेगा। लोभ–लालच के कार्यों से बचें अन्यथा हानि भय रहेगा। वाहन सुख मिलेगा। व्यापारी वर्ग को मंदी का सामना करना पड़ेगा।

वृषभ– बच्चों के कार्यों पर धन खर्च होगा। स्वार्थ की भावना प्रबल रहेगी। अतिथि आगमन के योग। कामकाज में व्यस्तता बढ़ेगी। कोई घरेलू समस्या का समाधान होगा। व्यापारी वर्ग को नये व्यापार में पूंजी निवेश से लाभ होगा।

मिथुन– मैत्री व संबंधों में प्रगाढ़ता रहेगी। मशीन/उपकरण की घरेलू कार्यों हेतु खरीदी संभव है। संगठन या संस्था के कार्यों से यश प्राप्त होगा। अपने कार्य दूसरों को सौंपने से बचें। शादी समारोह में शिरकत होगी।

कर्क– किसी उपहार या वस्तु विशेष की प्राप्ति होगी। समय अनुकूल है। विद्या के क्षेत्र में प्रगति के अवसर बनेंगे। अनावश्यक धन खर्च से बचें। भाग्य से ज्यादा यर्थाथ पर ध्यान दें। श्रेष्ठजनों का मार्गदर्शन मिलेगा।

सिंह– नौकरी में कुछ रुकावटें रहेंगी। आपको परिस्थितियां ठीक करने हेतु संयम से कार्य लेना पड़ेगा। संगीत या कला के क्षेत्र में सीखने के अवसर प्राप्त होंगे।

कन्या– जीवन साथी पर पूर्ण भरोसा रखें घरेलू निर्माण कार्यों पर धन खर्च होगा। वित्तीय स्थिति मजबूत रहेगी। व्यापार में टेंडर आदि के कार्य बनने से लाभ मिलेगा। कड़े परिश्रम की आवश्यकता होंगी।

तुला– दिनचर्या सामान्य रहेगी। खर्चों में कटौती करने से लाभ होगा। कोई सुखद समाचार प्राप्त होगा। इलेक्ट्रानिक्स व तकनीकी कार्यक्षेत्र के लोगों को पदोन्नति के अवसर मिलेंगे।

वृश्चिक– सृजनात्मक कार्य बनेंगे। आपके व्यवहार की दूसरे लोग प्रशंसा करेंगे। स्त्री जात को आमदनी रोजगार की दिशा में लाभ होगा। किसी की मदद हेतु मध्यस्थता करनी पड़ेगी। अधिकारी संतुष्ट रहेंगे।

धनु– अनायास किसी घटना से आप हतप्रद रहेंगे। आत्म प्रशंसा से बचें। वैवाहिक जीवन का आनंद मिलेगा। उच्च शिक्षा के प्रयास सफल होंगे। मन मुताबिक विषयों का चयन संभव है।

मकर– स्वास्थ्य सम्बंधी बाधा रहेगी। यात्रा में खानपान का ध्यान रखें। भौतिक कार्य बनेंगे। सामाजिक दायरा बढ़ेगा। घर में रिश्तेदारों का आना–जाना लगा रहेगा। कर्ज/ऋण आदि के लिये की गयी बातचीत में सफलता मिलेगी। समस्या का समाधान होगा।

कुंभ– जटिल मुद्दों पर बड़ों की राय लें। व्यर्थ की भागदौड़ से बचें। प्रेम प्रसंगों को लेकर थोड़ा तनाव रहेगा। दूसरों की बातों पर सहज विश्वास न करें। जांच परख कर निर्णय करें। रुका धन मिलेगा।

मीन– आकस्मिक धन लाभ के अवसर बनेंगे। साहित्य/पत्रकारिता में रुचि बढ़ेगी। नवयुवक और युवतियों के साक्षात्कार, परीक्षा के परिणाम अनुकूल रहेंगे। वैभव विलासिता के साधनों का विकास होगा। स्वास्थ्य ठीक रहेगा।

बधाई बधाई बधाई
अखिल भारतीय रघुवंशी (क्षत्रिय) महासभा के
राष्ट्रीय अध्यक्ष पूर्व मंत्री हजारी लाल रघुवंशी तथा
पूर्व मंत्री और अखिल भारतीय रघुवंशी (क्षत्रिय)
महासभा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष,
विधायक चौधरी चंद्रभान सिंह को
जन्म दिन की हार्दिक शुभकामनाएं
चौधरी चंद्रभान सिंह
हजारी लाल रघुवंशी
राम नारायण मुकाती
राजेन्द्र रघुवंशी
योगेश रघुवंशी
संजय रघुवंशी
श्रवण रघुवंशी
सज्जन सिंह जी
रम्मू भाई
सत्य नारायण सिंह
हरी सिंह जी
जगदीश रघुवंशी
रतन सिंह रघुवंशी
बलवीर रघुवंशी
जगदीश रघुवंशी
वीरेन्द्र रघुवंशी
परमेश्वर रघुवंशी
कमल रघुवंशी
यतेन्द्र रघुवंशी
चन्दू रघुवंशी
प्रदेश महामंत्री एवं राष्ट्रीय
कार्यकारिणी सदस्य अभारक्षम
सौजन्य से: चन्दू रघुवंशी,प्रदेश महामंत्री अभारक्षम सागौर, धार

RNI No. MPHIN/2002/07269

D81257/2017